ऊपरी हिस्से में कभी स्कूटी क़ौम आबाद थी
इसी से उसका नाम स्काटलेन्ड हुआ-इंगलेन्ड
के एक हिस्से को वेल्स और बादशाह के बड़े
बेटे को प्रिन्स आफ़ वेल्स कहते हैं, इस हिस्से
में किसी ज़माने में मुजरिम भाग कर जंगलों
में छिप रहा करते थे, इसी तरह से आयरलेन्ड
के नाम का भी पता लगता है—

ब्रिटन्स की पुरानी हालत देखने से कभी
नहीं जाना जाता था कि यह लोग किसी
दिन बड़ी से बड़ी बादशाहत क्या सारी दुनियां
पर हुकूमत करेंगे, पर हां एका और आज़ादी
से सब कुछ हो सकता है-रोमन्स के यहां
आने के पहिले का हाल न मालूम होने से
साबित हुआ कि यहां के लोग लिखना पढ़ना
नहीं जानते थे-यहां का हाल ग्रीस वालों ने
कुछ लिखा है जिससे मालूम होता है कि इस
टापू में उन दिनों भी सोना, चांदी, सीसा और

लोहे की खान थीं—जंगल में गाय, बैल, रीछ, भेड़िये और नदियों में ऊद रहा करते थे—टापू के बीच के रहने वाले दूध और मांस से अपना पेट भरते थे—कहीं २ पर जौ की खेती भी होती थी, शिकार सब करते थे, उत्तर के रहने वाले जड़ और पत्ते खाते थे, कुछ लड़ना भी जानते थे और दुश्मन के आने पर सब मिल कर अपने मुल्क को बचाते थे—दक्खिनी लोगों की हालत इन लोगों से अच्छी थी, वे सोना, चांदी, पीतल के ज़ेवर हाथ गले और सिर में पहिनने को बनाते थे और एक तरह का रंगीन ऊनी कपड़ा भी बनाया करते थे—अंगूठी इन लोगों के पास तरह २ की थीं और जूलिअस [illegible]ज़र के ज़माने में यह अँगूठियां बाज़ार चलन [illegible]सिक्का मानी जाती थीं—पुरानी क़ब्रों में मट्टी के बरतन और पीतल और पत्थर के हथियार भी मिले हैं—सालिसबरी मैदान में कुछ बड़ी २

मेहराबें पड़ी हैं जिन को अब लोग उन दिनों के बड़े आदमियों के मन्दिर या क़ब्र बताते हैं—इस टापू में खान होने से कुछ रोज़गार भी था और आस पास के मल्लाह अपनी २ नाव लेकर आया करते थे—

## रोमन्स का हमला और हुकूमत

रोमन्स उन दिनों बड़े बहादुर और शाइसता हो गये थे, इन लोगों ने अपना असर सारी दुनिया में फैला रक्खा था—इस टापू या मुल्क की खानों का हाल सुन कर इधर भी आने का इरादा किया और ईसा के ५० साल पहिले इन लोगों का सरदार जूलिअस सीज़र या क़ैसर यहां आया और लूट मार कर चला गया; दूसरे साल वह रोमन्स का बादशाह बन बैठा और भी बड़े जहाज़ों पर ३०००० सिपाही और २००० घोड़े लेकर टूट पड़ा, यहां के लोग एक हो-कर सामना करने पर भी उसको भगा न सके

तब लाचार होकर रोम को ख़िराज देना मंज़ूर कर लिया—अब धीरे २ रोमन यहां आने और अपनी हुकूमत जमाने लगे—वेल्स का सरदार केरक्टकस और नारफ़ाक, सफ़ाक शहरों की सरदार रानी बोएडिसिआ रोमन्स से खूब लड़े पर आखिर उन की हुकूमत जम ही गई उन लोगों ने शहर आबाद किये, सड़क और क़ानून बनाये और मुल्क में लोग अब सुलह से रहने लगे—रोमन बादशाह कान्सटेनटेनियस ने एक ब्रिटन औरत से अपनी शादी किया और यार्क शहर में इसके एक बेटा हुआ जिसका नाम कान्सटेनटाइन था जिसने इस मुल्क को इसाई बनाने का हुकुम दिया—हर क़ौम का यह हाल होता है कि बहादुरी से मुल्कों पर हुकूमत जमाते और रोज़गार से मालदार होते हैं, फिर ऐश में पड़ कर सब खो बैठते हैं, वही हाल रोमन्स का हुआ—इंगलेन्ड की हिफ़ाज़त तो दर किनार अब

अपने ही मुल्क का बचाना मुशकिल हुआ–
३०० साल हुकूमत करने पर भी अब इस मुल्क
को छोड़ना पड़ा–रोमन्स के चले जाने पर यहां
बड़ी घबड़ाहट पड़ी, लोग लड़ना भूल गये थे
और स्काटलेन्ड के जंगली बहादुर रोमन्स का
डर न करके इन बेचारों पर टूट पड़े और खूब
लूट मार मचाया, रोमन्स ने आकर इनको
हटाया पर उनके जाते ही मैदान ख़ाली देख
यह लोग फिर टूटे—

सन् ४१०

## अंगरेज़ों का हमला

ब्रिटन्स की मुसीबत दिन २ बढ़ती गई, इधर
स्कूटी लोग तो आफ़त मचा ही रहे थे अब
जटलेन्ड के लुटेरे भी मुफ्त का माल देख कर
झपटने लगे–जर्मनी के एल्ब और राइन नदी
के किनारे के लम्बे, मज़बूत, भूरे बाल और
नीली आंख वाले लोगों ने भी अब इधर का इरा-
दा किया–पहिले तो रोमन बेड़े इन लोगों को

रोकते थे पर अब क्या था, सीधा घर खोदा का, जिसको देखिये ढाई चावलकी खिचड़ी पकाने यहीं आता है—इसके सेवाय घर में रहे सहे रोमन्स और ब्रिटन्स आपुस में लड़ने लगे—इधर ब्रिटिश लोगों में भी दो दल हो गये, एक ने अपना पक्षा दबता देखकर जटलेन्ड के दो सरदार हेनजिस्ट और हारसा को बुलाया, इन लोगों ने आते ही केन्ट शहर पर हाथ साफ़ किया—कुछ लोग कहते हैं कि ब्रिटिश सरदार ने केन्ट इसकी प्यारी लड़की रोवेना पर आशिक होकर दे दिया—अब जर्मनी लुटेरों को यहां आते १०० साल हो गये, यह लोग बड़े लड़ाके थे और धीरे २ ब्रिटन्स को हटा कर गांव से निकाल देते और आप लोग उनमें रहने लगते थे, शहरों को बरबाद कर डाला और ७ छोटी राज्य जमा कर सारे इंगलेन्ड पर अब सेक्सन और एनजिल लोग हुकूमत

स
४४

करने लगे-वेल्स के लोग बड़े बहादुर और
लड़ाकू थे और सैकड़ों बरस तक यह हिस्सा
खुद मुख़तार रहा-यहां के एक बहादुर सरदार
आरथर ने १२ बार इन लोगों से लड़कर
नाकों दम कर दिया था पर उसी के भतीजे ने
उसको मार डाला, उसके लाश की संदूक बा:
दशाह दूसरे हेनरी के ज़माने में मिली थी-
अब यह परदेसी लुटेरे अंगरेज़ कहे जाने
लगे-हर राज्य के क़ानून और राजा निराले थे-
यह ज़रूरी बात नहीं थी कि राजा का बड़ा बेटा
ही राजा हो पर जो सब से वहादुर होता था वही
राजा होता था-क़सूर करने वाले को उबलते
पानी में हाथ डालना या आंख बन्द करके
जलते लोहे पर चलना पड़ता था, अगर उस
को इन सब का असर नहीं होता तो वह छोड़
दिया जाता था-खूनी की जान तो मारे हुये
आदमी के खान्दान वाले ही ले डालते थे और

सन् ५४२

इसी तरह से एक घर दूसरे घर से बराबर दुश-
मनी रखता था पर कुछ दिन पीछे यह चाल
उठ गई और खूनी का फ़ैसला अदालत से होने
लगा—इसी ज़माने में रोम के बड़े पादड़ी ने
जो पोप कहे जाते थे इस मुल्क को इसाई करने
को कुछ पादड़ी भेजे—कोई २ राजा भी इसाई
होगये, अब यह दीन फैल चला पर लोगों ने
गिरजाघर में जाना और ईसा का नाम लेना
ही सीखा, कुछ लोग जो पूरी तरह से नये
मज़हब को मानना चाहते थे उन लोगों ने
भीड़ छोड़ जंगल की राह लिया और नदी के
किनारे झोपड़ी डालकर रहने लगे—धीरे २ इन
लोगों की इज़्ज़त बढ़ गई, सच्चे लोग इनको
खाना कपड़ा भेजने लगे और अब यह लोग
महन्थ बन बैठे—मालदार रेआया इन लोगों को
ज़ेवर, अच्छे कपड़े और नगदी भी दिया करते
थे, थोड़े दिन में इन लोगों के घर राजा लोगों

सन् ५६७

के घर से भी बढ़कर बने मगर मालदार होते ही यह लोग बुराई में पड़ गये और जल्द ही उस का फल पाया—ग्रीक लोगों की देवी एपोलो और डायना के पुराने मन्दिर तोड़े गये और उन जगहों पर गिरजा बने—अंगरेज़ों की सात ७ नई राज्य में से अब तीन ३ रह गईं, तब भी एक दूसरे से बराबर लड़ा करते थे—आखिर वेसेक्स के राजा एजवर्ट ने अपनी बहादुरी से सब को दवाया, इसी ज़माने से इंगलेन्ड में अंगरेज़ी हुकूमत हुई और यही पहिला बाद-शाह हुआ—

सन् ८२७

जब अंगरेज़ अपना घर जर्मनी में छोड़कर इधर आये तो कुछ इन के तरह के और लोग भी डेन्मार्क और नारवे मुल्क में जा कर डेन्स या नारमन कहे जाने लगे, जिन लोगों ने अब यहां और फ़ान्स में आकर लूट मार मचा दिया, महन्थ लोग इनके खास शिकार थे, बादशाह

ने इन लोगों को कार्नवाल शहर के पास खूब पस्त कर दिया पर खुद दुनियां को छोड़ गया- अब डेन्स का आना तो बन्द नहीं था बराबर लड़ाई होती रही मगर यह लोग आगे ही बढ़ते आये-तब अंगरेज़ों ने एडवर्ड के छोटे बेटे एलफ्रेड को बादशाह बनाया मगर डेन्स से हार कर बेचारे को भागना पड़ा, राह में इसको बड़ी मुसीबत झेलना पड़ी, अमीर लोग इसके पास आया जाया करते थे और फिर लड़ने की त-य्यारी हो रही थी-आखिर एक दिन यह भेष बदल कर वंसी बजाता हुआ डेन्स कम्पू में आया और दस बारह दिन रहकर वहां की हालत देखता रहा फिर वहां से निकल कर अपनी फ़ौज इकट्ठा किया, विल्टशायर के पास एक पहाड़ी पर लड़ाई हुई और डेन्ससरदारों ने १४ दिन घिरे रहने पर आधी ज़मीन अंगरेज़ों को देकर सुलह किया-अब एक और डेन सरदार

सन् ८३५

सन् ८७

सन् ८७८

जिस का नाम गुथरम था ३३० जहाज़ का वेड़ा लेकर चला पर इस को भी हार कर ईसाई होना पड़ा–

बादशाह एलफ्रेड बड़ा बहादुर और सच्चा आदमी था, उसने बन्दोबस्त ठीक रखने को ज़मीन के छोटे हिस्से किया, फ़ौज को बराबर क़वायद करना पड़ता था, रैआया को पढ़ाना अपना सब से बड़ा काम समझता था और आक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी इसी की यादगार है–जूरी से फ़ैसला भी इसी ने शुरू किया–इसके दोस्त पढ़े लिखे लोग थे और इसने बहुत अच्छे क़ानून बनाये–आखिर वर्कशायर के फ़ेरिंगटन शहर में इस दुनियां को छोड़ चला और विनचिस्टर में जो उन दिनों अंगरेज़ों की राजधानी थी उसकी क़ब्र बनी–

सन ९०१

उसके बेटे एडवर्ड, पोते एथलस्टन, परपोते एडमन्ड और एडरेड सब बादशाह हुये–पहिले

एडवर्ड ने केमब्रिज यूनिवर्सिटी कायम किया
और कई लड़के लड़की छोड़कर मरा—एथेल-
सन् ९२५
स्टन के ज़माने में डेन्स के जहाज़ी वेड़े को
वहुत वड़ा नुकसान हुआ, वाइविल का तरजुमा
करा के उसने हर गिरजे में भेज दिया—इसके
ज़माने में रोज़गार वहुत वढ़ा जिसका सवव
यह था कि जो कोई अपने जहाज़ पर तीन २ वार
सफ़र करै उस को थेन का खिताब मिलता था—
इसके मरने पर इसका वेटा एडमन्ड वादशाह
सन् ९४१
हुआ और डेन्स से ५ क़िले छीन लिये—यह
अपने वहादुर सरदारों के साथ बैठ कर खाना
खा रहा था कि एका एकी एक मुजरिम ने
जिसको इसने मुल्क से निकाले जाने की सज़ा
दिया था इसको मारडाला—उसका रोगी भाई
सन् ९४७
एडरेड वादशाह हुआ पर थोड़े ही दिनों में
सन् ९५५
मर गया—

एडजर वादशाह इस खान्दान का बड़ा व-

हादुर और होशियार था, उसने वगावत को दवाया और डेन्स के ज़ोर को तोड़कर उन पर हुकूमत करने लगा—दीन और भी तरक्क़ी पर हुआ और पढ़ने लिखने का चर्चा बढ़ा, पादड़ी और महन्थों की इज़्ज़त होती थी, वेल्स के सरदार से ख़िराज में यह ३६० भेड़ियों के सिर लिया करता था जिस से थोड़े दिन में वहां का जंगल साफ़ हो गया—यह वादशाह गाना, कारीगरी और किताबों का बड़ा शौक़ीन था—इन दिनों वीड एक महन्थ था जिसने इंगलेन्ड की तवारीख़ या इतिहास लिखा—केन्टरवरी के पादड़ी डन्सटन भी इसके वज़ीर थे—वादशाह के दो औरतों से दो लड़के थे, वड़ा लड़का वज़ीर डन्स्टन के मदद से वाद-शाह हुआ, इस वेचारे एडवर्ड को उसके सौ-तोले भाई एथेलरेड ने मार कर अपने को वाद-शाह वनाया—डेन्स अव फिर आये, इसने उन

सन् ९७५

सन् ९७७

को कुछ देकर हटाया और सालाना देने को रेआया पर एक तरह का टेक्स लगाया जिस से पादड़ी माफ़ थे-डेन्स लोग बराबर आते और बेचारे महन्थों को लूटते और मार डालते थे-उस ने एक तेवहार के दिन डेन्स के क़तल आम का हुकुम दिया और बहुत से लोग जिन में उन के राजा की बहिन भी थी मारे गये, इसपर नाराज़ होकर बादशाह स्वेन इंगलेन्ड पर चढ़ दौड़ा, आक्सफ़र्ड, विनचिस्टर और लन्डन पर कब्ज़ा करके बादशाह बनगया, पर तीन ही हफ़ते में उसके मरजाने से नट या केन्यूट उस का बेटा राजा हुआ-अंगरेज़ बादशाह एथेलरेड को अपनी ससुराल नारमन्डी भागना पड़ा पर बहादुर अंगरेज़ों ने फिर उसको बोलाया और डेन्स से लड़कर उनको भगा दिया-बादशाह बार २ डेन्स रेआया का क़तल आम किया किये इस से डेन्स बादशाह केन्यूट को फिर चढ़ाई क-

नवम्बर १४ सन् १००२

सन् १०१३

रना पड़ा—इसी ज़माने में एथेलरेड की ज़िन्दगी
सन् १०१६ ख़तम हुई—उसका बेटा एडमन्ड आयरनसाइड
७ महीने इस तरह से लड़ा कि डेन्स को सुलह
करना पड़ा और इंगलेन्ड के दो हिस्से होगये,
एक में अंगरेज़ी डंका बजता था और दूसरे में
डेन्स का निशान उड़ता था—मगर एकही
महीने में एडमन्ड मर गया और केन्यूट सारे
इंगलेन्ड का बादशाह माना गया—यह बड़ा
सन् १०१७ इन्साफ़ पसन्द था और अंगरेज़ों को बड़े से बड़े
ओहदे दिया, डेन्स सिपाही और मल्लाहों को
डेनमार्क लौटा दिया—एडमन्ड के एक बेटे को
तो इसने मरवा डाला पर दो को हंगरी भेज
दिया, वहां एक मर गया और दूसरे एडवर्ड
ने वहां की शाहज़ादी से शादी किया, उससे
एक लड़का एडजर हुआ जिसको विलिअम
ने बादशाह नहीं होने दिया—केन्यूट इंग-
लेन्ड के सेवाय नारवे, स्वीडन और डेनमार्क

पर भी हुकूमत करता था—इसने रोम का सफ़र किया और पोप जी से अंगरेज़ मुसाफ़िरों का टेक्स छोड़ाया; डेनमार्क को भी इसाई बना कर मर गया—इसकी पहिली शादी से दो लड़के थे जिस में से हेरल्ड इंगलेन्ड और स्वेन नारवे को दबा बैठे और दूसरी शादी से हारडी केन्यूट हुआ जिस को डेनमार्क मिला—पर हेरल्ड के मरते ही हारडी पहुंच गया और उसको लोगों ने बादशाह मान लिया—इसने आते ही हेरल्ड की लाश को खोदवा कर सिर कटवाया और टेम्स नदी में फेंकवा दिया; मगर इसके ज़माने में कोई खास बात नहीं हुई और एक डेन रईस के यहां शादी में आप मेहमान थे वहीं मर गये—

सन् १०३५

सन् १०४०

इसके मरते ही डेन्स बादशाहत इस मुल्क से उठ गई—रेआया ने एथेलरेड के बेटे एडवर्ड को जो हेरल्ड के सामने से बन्दोबस्त कर रहा था

बादशाह माना और बहुत सी पुरानी जागीर उसको नज़र में दिया, मगर इसकी उमर का बहुत हिस्सा नारमन्डी में कटने से वहां के लोगों से बड़ा मेल था और बहुत लोगों को बुलाकर यहां पर जागीर और बड़े ओहदे दिया, फ़्रेन्च ज़बान दरबार में बोली जाती थी— बादशाह ने अर्ल गाडविन की लड़की से अपनी शादी किया, यह एक अंगरेज़ रईस था जिसको केन्यूट ने वेसेक्स का अर्ल बनाया था, इसको बग़ावत के क़सूर में राजा ने मुल्क से निकाल दिया मगर दूसरे साल फिर आया और बादशाह ने माफ़ करदिया—इसका बेटा हेरल्ड बड़ा बहादुर था, उसने वेल्स को खूब ही दबाया था—बादशाह को यक़ीन था कि उसके मरने पर हेरल्ड बादशाह होगा इस वास्ते इधर तो उसने एडमन्ड आयरनसाइड के लड़के एडवर्ड को हंगरी से बुलाया उधर नारमन्डी के सरदार

सन ०४२

विलिअम को बोलाकर अपना वारिस बनाया-
इसने एकबार हेरल्ड को डूबने से बचाया था और
उस से यह क़सम लिया था कि वह उसको इंग-
लेन्ड का दूसरा बादशाह माने-बादशाह एडवर्ड
ने रेआया के साथ बड़ा सलूक किया, अच्छे
क़ानून बनाया और जो टेक्स एथेलरेड ने लुटेरे
डेन्स के देने को लगाया था वह अकाल के दिनों
में नहीं लिया जाता था-उसने वेस्टमिनिस्टर
गिरजा बड़े शौक से बनवाया था और उसी में
उसकी लाश मरने पर गाड़ी गई-उसके साले सन्
हेरल्ड को लोगों ने बादशाह बना दिया इस
बेचारे को नारमन्डी के विलिअम का डर ब-
रहा और नारथंबरलेन्ड और मरसिआ के र पर
दार या ड्यूक अब तक हेरल्ड से अलग
नारवे के बादशाह हार्डरेडा ने चढ़ाई क ां पर
और यार्क में अपना कब्ज़ा भी कर लि र जब वे
शाह इन से लड़ने चला, स्टेमफर्ड पुल -धीरे २
ीन पर

अपनी हुकूमत जमा लिया जो नारमन्डी कही जाने लगी–इन लोगों ने भी यहां के डेन्स की तरह खूब लूट मार मचाया था और आखिर फ़ान्स के बादशाह को इन लोगों को नारमन्डी की जागीर देना पड़ा–अब नारमन और फ़ेंच की आपुस में शादी होने लगी और यह लोग फ़ेन्च भी बोलने लगे, इनका सरदार रोलो बड़ा बहादुर था उसने फ़ेन्च बादशाह के दांत खट्टे कर दिये थे–उसका बेटा यही विलिअम है–इन नारमन रेआया की हालत उन दिनों अंगरेज़ों से किसी तरह अच्छी नहीं थी, बादशाही टेक्स के सेवाय ज़मीन्दार भी नज़राना लिया करते थे और बड़े आदमी अपनी मन मानी करते थे–इन लोगों ने उसी तरह से अंगरेज़ रेआया को भी मन माना सताया–

विलिअम के ताज पहिनते ही नारमन्स

ने ख़ूब लन्डन को लूटा पर जल्द अमन चैन होगया—बादशाह ने रईसों को परवाने दिये और शाहज़ादा एडजर को बड़ी इज़्ज़त के साथ अपना दोस्त माना—अंगरेज़ी क़ानून जारी रहे पर बहुत सी ज़मीन नारमन्स को मिली, लड़ाई में मरे हुये सरदारों की औरतों और लड़कियों से नारमन्स की शादी हुई, अंगरेज़ी माल से नारमन्डी के गिरजे सजाये गये, लन्डन और विनचिस्टर में क़िले बने, ६ महीने रहकर बड़ी शान से अब विलिअम नारमन्डी गया और बहुत से अंगरेज़ रईसों को भी अपने साथ लेगया—उसके जातेही यहां बड़ा बखेड़ा मचा बहुत लोग बाग़ी होगये पर ८ महीने पीछे लौट कर उसने सबको दबाया-उन्हीं दिनों हेरल्ड के लड़के भी जिन लोगों ने आयरलेन्ड में पनाह लिया था दो बार आये पर उनको हार कर भागना पड़ा—उत्तर के अंगरेज़ों ने सिर उठाया

और विलिअम ने तलवार की धार से उनको भी दबाया—उसी ज़माने में एक डेन्स बेड़ा पहुंचा जिसकी मदद से फिर यार्क शहर पर अंगरेज़ी निशान उड़ने लगा, बादशाह फिर उत्तर की ओर चला और जिधर निकला उधर अंगरेज़ों को बाग़ी पाया आख़िर उसने ऐसा बदला लिया कि पचास बरस तक आउस और टाइन नदी के बीचमें ऊसर खेत और जलेहुये घरों के ढेर देख पड़ते थे—कुछ भागे हुये अंगरेज़ एक दलदल में क़िला बनाकर बहुत दिन बादशाह को सताते रहे, फल यह हुआ कि अंगरेज़ों की इज़्ज़त और अख़्तियार घटने लगे यहां तक कि थोड़ी ही ज़मीन रखने पाते थे—नारमन्स भी अब पादड़ी होने लगे और जो सेनलाक में अंगरेज़ी बादशाह के साथ लड़े थे उन लोगों पर बग़ावत का क़सूर लगा कर उनकी जायदाद ज़ब्त होकर नारमन्स को मिली—स्काटलेन्ड

का बादशाह मालकम भी विलिअम को डरने लगा पर उसने भागेहुये अंगरेज़ों को इसके हवाले नहीं किया— सन १०७२

आखिर में विलिअम को बड़ी मुसीबत हुई— नारमन्स लोगों ने इनाम से खुश न हो कर उस के मारने का मंसूबा किया पर भेद खुल गया और सब का दहिना पैर काटा गया—उस के सौतेले भाइ ओडो ने पोप होना बिचारा और वह नारमन्डी में क़ैद रहा—आख़िर उस के लड़कों ने आपुस में लड़ कर बड़ी आफ़त मचाया, बादशाह से और उसके बड़े बेटे रावर्ट से सामना हुआ उसमें बादशाह का एक हाथ घायल हुआ- सन १०७७ इंगलेन्ड में पहिली बार उसने खेवट व ख़सरा बनाने का हुकुम दिया जो ६ साल में बना— सन १०८६ उसने एक शिकार का जंगल बनाया और उस ज़माने में उस के क़ानून यह थे कि जो कोई सरकारी जंगल में एक भी जानवर मारै उसकी

आंख निकाली जाय—रात को ८ बजे एक घन्टा
बजता था जिस से कहीं आग न रहै जिस से
काठ के मकानों में आग न लगने पाई, नहर के
टापू उस ने जीतकर इंगलेन्ड में मिला लिया
और डोवर, हेसटिंग्ज़, रोमनी, हाइथ और सेन्ड-
विक में क़िले बने—डेन टेक्स फिर भी लिया
जाने लगा और १००० पाउन्ड रोज़ की आ-
मदनी पर भी उस को सबूरी नहीं हुई—फ़ान्स
के बादशाह को एक बार विलिअम के बदन के
भद्दे होने पर हँसी आई और इसी से लड़ाई
होगई—मन्टी शहर को अंगरेज़ों ने घेरा,
बादशाह जलते हुये शहर को देखने घोड़े पर
चला, एका एकी घोड़ा जलती हुई ज़मीन
से निकला और वह झुलस गया, यह सब
घाव पक गये और ६ हफ्ते बीमार रहकर रोआं
शहर के नज़दीक मर गया—मरने के पहिले ही
सब साथी इसको छोड़कर महल लूटने के फेर

में चले गये थे और लाश २ घन्टे खुली पड़ी रही आखिर एक फ़ेन्च बहादुर ने उसको ले जाकर केन में गाड़ा—इसके ज़माने को अंगरेज़ आफ़त का ज़माना मानते थे जो लड़ाई से शुरू होकर मरी और काल में खतम हुआ—

सन १०८७

## दूसरे विलिअम या रूफ़स या लाल शाह

### १०८७–११००

यह रूफ़स विलिअम का तीसरा लड़का था इसके मुंह का रंग बहुत लाल होने से इस को लाल राजा या लाल शाह कहते हैं—बाप के हुकुम से लोगों ने बड़े बेटे रावर्ट को नारमन्डी का सरदार माना और वह रोआं शहर में मज़े उड़ा रहा था कि इधर रूफ़स ने पहुंच कर इंगलेन्ड का ताज पहिन ही लिया—नारमन्स से इस को नफ़रत थी इसी से वे चाहते थे

कि रावर्ट को यहां की बादशाहत भी मिले
मगर अंगरेज़ों ने इस की मदद किया और बाप
के छोड़े मालसे इसने नारमन्डी पर धावा करके
बहुत से क़िलों पर अपनी अमलदारी कर
लिया—रावर्ट की हालत और भी बिगड़ रही थी
कि फ़ान्स के बादशाह और बड़े आदमियों ने
भाइयों से मेल करा दिया—इससे छुट्टी पातेही
लाल शाह ने स्काटलेन्ड पर चढ़ाई कर दिय
पर सुलह होगई—दूसरे साल वहां के बादशाह
ने कारलाइल शहर के वास्ते जो पहिले उनका
था और अब अंगरेज़ी अमलदारी में आगया था
चढ़ाई कर दिया मगर नारथंबरलेन्ड में वह एक
अंगरेज़ी सरदार के भाले से मर गया तब वेल्स
पर भी लाल शाह ने चढ़ाई की मगर बहुत
फ़ायदा नहीं हुआ और आख़िर में पहाड़ी
सरहदों पर क़िले बनवाना पड़ा—
अब वही सरदार मारवे नामी जिसने स्का-

इलेन्ड के राजा को मारा था बाग़ी हो गया मगर बहुत लड़ने पर भी पकड़ा गया और ३० साल विन्डसर गढ़ी में क़ैद रहा—

सन १०६५

अब मसीह की क़ब्र मुसलमानों के कब्ज़े से छोड़ाने के वास्ते रोम के पोप ने सारे इसाइयों से मदद मांगा, बहुत से शाहज़ादे, अमीर और सरदार गये पर कुछ काम न निकला और सब को वैसे ही लौटना पड़ा—इसका भाई रावर्ट भी ७००० पाउन्ड इस से लेकर नारमन्डी ५ साल के वास्ते इस को दे गया—

एक दिन जंगल में शिकार खेलने को बादशाह गया, गरमी के मारे साथी छूट गये और यह आगे बढ़ता गया, शामको इसकी लाश मिली, कलेजे में एक तीर घुसा था—कुछ लोग कहते हैं कि एक आदमी ने एक हरिन मारा मगर तीर बादशाह को लगा, कोई कहता था कि जिन लोगों के घर उजाड़ कर वह जंगल

देना था उन्हीं में से किसी ने इसको मारा, कुछ लोग इसके भाई हेनरी पर भी शक करते थे–

यह लालशाह समझदार मगर बेइन्साफ़, लालची और बेरहम था–यह नाटा था और कुछ तुतलाता भी था–लन्डन बुर्ज के चारों ओर दीवार, टेम्स नदी का पुल और वेस्टमिनिस्टर का दीवानखाना इसने बनवाया और यही सलूक इसने अपनी रेआया के साथ किया–अंगरेज़ों को हमेशा मानता रहा इसी बात से नारमन्स इससे नाराज़ रहा करते थे–

## पहिले हेनरी

### ११००–११३५

यह पहिले विलिअम का सबसे छोटा लड़का था, लालशाह के मरते ही इसने सरकारी खज़ाने पर हाथ साफ़ किया और लन्डन में पहुंचकर बादशाह बन गया–इसने अंगरेज़ी शाही खा-

न्दान की एक लड़की से अपनी शादी किया
और अंगरेज़ों के खुश करने को अपने भाई के
वज़ीर को लन्डन बुर्ज में क़ैद कर दिया मगर
वह भाग कर नारमन्डी पहुंचा—राबर्ट भी इटली
से शादी करके आया और उसने इंगलेन्ड पर
चढ़ाई कर दिया मगर बादशाह से उससे भेंट हुई
और २००० पाउन्ड सालाना लेकर उसने इंग-
लेन्ड के ताज से अपना हक़ छोड़ दिया पर
भाइयों के मन मैले होजाने से फिर लड़ाई हुई
और राबर्ट पकड़ा गया, उसकी आँखें निकाली
गईं और तीस साल कारडिफ़ गढ़ी में क़ैद रह-
कर मर गया—फ़ान्स के बादशाह ने राबर्ट के
लड़के की मदद करके उसको नारमन्डी का
मालिक बनाना चाहा पर लड़ाई होने पर हेनरी
की जीत रही और उसने अपने लड़के को ले-
जाकर नारमन्डी का राजा बनाया पर लौटने में
बादशाह की नाव पहिले चली और दूसरी नाव

पर शाहज़ादा था, उसके मल्लाहों ने ख़ूब शराब
पिया और चाँदनी रात में आगे वाली नाव के
पकड़ने को बड़ी जलदी करते हुए चले मगर
राह से वे गुमराह हो गये, नाव एक चट्टान से टक-
राकर फटगई, शाहज़ादा एक छोटी नाव पर
सवार हुआ मगर उसने अपनी बहिन की आ-
वाज़ सुनते ही उसको बचाना चाहा, अब तो
सैकड़ों आदमी इस छोटी नाव पर चढ़गये और
वह भी डूबगई--रोआं शहर का एक क़साई एक
लट्ठे पर बहता हुआ बचा जिसने बादशाह से
कुल हाल बयान किया, वह इतना दुखी हुआ
कि फिर कभी नहीं हंसा—यह अंगरेज़ी रानी
का लड़का था उसके एक और भी बहिन थी
जिसकी शादी जर्मनी के बादशाह से हुई
पर बादशाह बेचारा ६ महीने में मरगया
और इस शाहज़ादी माड की शादी फ़ान्स में
एनजो के सूबेदार से हुई जो १६ बरस का था,

इस से अँगरेज़ और नारमन्स नाराज़ रहे—

बादशाह ने अमीरों और वज़ीरों से क़रार कराया कि उसके मरने पर वै लोग उसकी बेटी को रानी बनावैं—हेनरी बड़ा बदकार और दग़ा-बाज़ था मगर पन्डित और इन्साफ़ी भी था, उसने नारमन्स को ख़ूब दबाया मगर अंगरेज़ नाराज़ रहकर भी उसकी मदद करते रहे—उस-के ज़माने में यहां के लोग इसपेन जाकर हकीम और ज्योतिषी होते थे—उसने चांदी के सिक्के चलाये और जाली सिक्का बनाने वाले को सज़ा देता था—ऊनी कपड़े बनाने का कार-ख़ाना भी इसी के ज़माने में चलने लगा—इसकी अंगरेज़ी रानी ने ली नदी पर पहिला पत्थर का पुल बनवाया—राबर्ट का लड़का नारमन्डी का हाकिम हुआ पर उसके एक घाव में नासूर होने से जलदी मरगया और अब वहां भी अंगरेज़ी अमलदारी हो गई—आख़िर हेनरी

भी सन् ११३५ में काल के जाल में पड़ कर इस दुनियां से भागा—

## स्टीफ़िन

## ११३५–११५४

अमीर और वज़ीर माड को रानी बनाने को हेनरी से क़सम खा चुके थे मगर बादशाह को लड़ाई पर भी जाना होता था और औरत का जाना ठीक न जान वे लोग ऐसा न कर सके और विलिअम की लड़की एडिला के बेटे स्टीफ़िन को बादशाह बनाया—माड भी इंगलेन्ड पहुंची और अपने को रानी कहने लगी, स्काटलेन्ड के बादशाह ३ बार इसके मददगार बन कर इंगलेन्ड पर चढ़े मगर तीसरी बार तो उन्होंने नारथंवरलेन्ड को अपनी अमलदारी में कर ही लिया—अंगरेज़ और नारमन बड़ी बहादुरी से लड़े और सुलह हो गई मगर न्यूकासेल और बमबरो को छोड़कर सारा नारथंवरलेन्ड

*सन् ११३८

अंगरेज़ों के हाथ से निकल गया-दूसरे साल माड अब दक्खिन की ओर पहुँची और ससेक्स सूबे के आरेन्डल गढ़ी पर क़ब्ज़ा करके ब्रिस्टल पहुंची जो उसके एक रिश्तेदार की जागीर थी-लिंकन की लड़ाई में स्टीफ़िन पकड़ा गया और ब्रिस्टल गढ़ी में क़ैद कर दिया गया मगर उसकी रानी केन्ट को भाग गई-पादड़ियों ने माड को रानी मान लिया मगर उसके बहुत से मदद गार उसके बरताव से नाराज़ होकर चल दिये और उसी समय केन्ट शहर की रेआया स्टीफ़िन की मदद गार बनकर बिगड़ गई और लन्डन पर चढ़ दौड़ी-उधर उसके रिश्तेदार राबर्ट अर्ल ग्लाउस्टर ने विनचिस्टर पर चढ़ाई किया मगर क़ैद होगये, इससे माड आक्सफ़र्ड भागी और स्टीफ़िन ने उस को बहुत दिन तक घेरा मगर ४ बरस वह इंगलेन्ड में रही और ग्लाउ-स्टर अपने ही क़ब्ज़े में रक्खा, फिर नारमन्डी

सन् ११४१

सन् ११४२

चली गई—अब उसका लड़का हेनरी भी जवान होगया था वह नारमन्डी; एनजौ के सैवाय और भी फ़ान्स की ज़मीन का जो उसकी शादी में मिली थी मालिक था—अब उसने

सन् ११५२ इंगलेन्ड पर चढ़ाई किया मगर स्टीफ़िन के बेटे के मर जाने से लड़ाई न होकर विनचिस्टर में सुलह होगई और उसको लोगों ने इंगलेन्ड

सन् ११५४ के ताज का वारिस माना—स्टीफ़िन साल के अन्दर ही मर गया—वह हिम्मती; तेज़ और सब्री करने वाला; दोस्तों पर मेहरबान और दुश्मनों से राज़ी हो जाने वाला था मगर लड़ाइयों के मारे उसका पूरा हाल जानने की फ़ुरसत किसी को न मिली—उस ज़माने में दो बड़े आदमियों को बादशाहत का झगड़ा चुकाते देख ज़मीन्दारों ने बड़ा हलचल मचा दिया, यह लोग अपने गढ़ी में बैठे मन मानी करते थे; जब चाहते अपने सिपाहियों को लेकर

निकलते और रैआया को खूब लूटते, उन के खेत उजाड़ते और मकान जलाते थे, जो लोग अपना छिपा हुआ माल नहीं बताते उनको पकड़ लेजाते और बहुत तरह के दुख देते, किसी को अंधेरी कोठरी में बन्द करते जिसमें सांप, बिच्छू रहते थे तो किसी को एक सन्दूक में बन्द करते जिस में नोकदार कांटे होने से वह बैठ न सकै और खड़े ही खड़े मरै—कितने बेचारे भूख से मर जाते थे और उनको एक मुट्ठी अनाज या एक टुकड़ा रोटी नहीं मिलता था—गांव के रहने वाले अपने को सुखी नहीं समझते थे कभी एक की क़िसमत फूटती तो कभी दूसरे की, यह लोग रोते थे पर कोई इन की मदद को नहीं आता था, आख़िर स्टीफ़िन और माड के मरने पर दूसरे हेनरी ने बादशाह हो कर इन को खूब दबाया—

—※—

# एनजो खान्दान

## ११५४–१३९९

## दूसरे हेनरी

## ११५४–११८९

यह हेनरी बड़ा होशियार और बहादुर था, उसने यह बिचारा कि बादशाह का ज़ोर रैआया के खुश रहने से बढ़ सकता है, सब से पहिले उसने उन बिदेशियों को भगाया जो यहां वे झगड़ों के ज़माने में आकर आनन्द करने लगे थे, फिर उन गढ़ों को तोड़ना विचारा जिन में बड़े ज़मीन्दार रैआया को पकड़ ले-जाते और हर तरह से सताते—उसने बड़े आद-मियों से लड़ाई के दिनों में फ़ौजी मदद न लेकर रुपया लेना ठहराया इससे बड़ा फ़ायदा हुआ, उन लोगों ने इस में सुभीता समझा और आराम में पड़ कर लड़ना भूल गये,

अब बग़ावत का डर जाता रहा—रैआया को हथियार रखने का हुकुम हो गया जिस से वे अपने जान माल की हिफ़ाज़त कर सकें, जूरी तो पहिले विलिअम के सामने कायम हो गई थी पर इसके ज़माने में कोई भी एक जज के हुकुम से सज़ा नहीं पाता था, कम से कम ३ आदमी और भी जज के साथ बैठ कर मुक़द्दमे को सुनते और अपनी राय देते थे तब जज और उनकी राय मिलने से फ़ैसला होता था, यह बात आज तक सारी अंगरेज़ी अमलदारी में जारी है—नारमन और अंगरेज़ अब खुशी से आपुस में शादी कर लेने लगे इससे भी अब इन लोगों में लड़ाई का डर न रहा—

बादशाह का एक दरबारी टामस बकेट नामी था जिसको उसने केन्टरबरी का पादड़ी बनाया, यह बड़े शान से रहता था—बादशाह ने यह चाहा कि अगर पादड़ी कोई क़सूर करै तो उसका भी

इन्साफ़ मामूली अदालतों में हो मगर बकेट
कहता था कि एक और अदालत बनना चाहिये
सन् ११६४ जिसमें पादड़ी ही हाकिम हों—इस बात पर बाद-
शाह से बिगड़ गई और बकेट फ़्रान्स को भाग
गया—६ बरस पीछे रोम के पोप और फ़्रान्स के
बादशाह ने इसका क़सूर हेनरी से माफ़ करा-
दिया मगर लौटकर गिरजों की ज़मीन का
बन्दोबस्त और तरह देख अपने मन मानी करने
लगा—बादशाह नारमन्डी में थे यह बात
सुनते ही बड़े नाराज़ हुये और कहा कि हमारा
कोई भी बहादुर इस के बोझ से दुनियां को ह-
लका नहीं कर सकता है, यह सुनते ही ४ आ-
दमी वहां से चले और गिरजे में घुसकर बकेट
को टुकड़े २ कर डाला इससे फिर भी रैआया ने
सन् ११७० सिर उठाना चाहा पर बादशाह चालाकी खेला
और पैदल नंगे पैर बकेट की क़ब्र पर जाकर
रोया और अपने क़सूर की माफ़ी मांगा—इसने

रेआया और पादड़ियों से कहा कि आप लोग हमको इस क़सूर की जो चाहिये सज़ा दीजिये यह सुनकर सब ने शरमा कर उसको माफ़ कर-दिया और फिर अमन होगया—बकेट की बड़ी इज्ज़त हुई और अबतक साल में हज़ारों आदमी उसकी क़ब्र देखने जाते हैं और उसके मरने के दिन वहां बड़ा मेला होता है—तीसरे हेनरी के ज़माने में अंगरेज़ी झन्डा फ़ान्स के सारे पच्छि-मी हिस्सों पर फहरा रहा था अब अंगरेज़ लोग स्काटलेन्ड के बादशाह विलिअम को यहां पकड़ लाये, उस बेचारे को इन को सिरताज मानना पड़ा—इसी से पहिले एडवर्ड ने सदा अपने को स्काटलेन्ड का मालिक समझा—आयरलेन्ड के सरदार इन दिनों आपुस में खूब लड़ रहे थे और वहां के समुद्र तीर के शहर अब भी डेन्स के हाथ में थे, डबलिन में रोज़गार बड़ी धूमसे होता था—एक सरदार डरमट नागी ने आकर इंगलेन्ड में

पनाह लिया, यहां से उसको पूरी मदद मिली, अंगरेज़ आयरलेन्ड पर चढ़ दौड़े, डबलिन और वेडफ़ोर्ड पर हाथसाफ़ किया और हेनरी को वहां के सरदारों ने आकर नज़र दिया, एक अल्सटर

सन् ११७२

सूबे को छोड़ सारा मुल्क अंगरेज़ों के मातहत होगया—बादशाह ने अपने बेटे जान को जो १२ बरस का था वहां का हाकिम बनाकर भेजा मगर उसके साथी नारमन लोग वहां के सरदारों की काफ़ी इज़्ज़त नहीं करते थे और शाहज़ादा उनकी दाढ़ी नोचता था, इन बातों से वहां बखेड़ा उठा जिसका दबाना मुशकिल होगया—

बादशाह के ५ लड़के और एक लड़की थी जो सेक्सनी के सरदार को ब्याही गई, वही खान्दान आज कल इंगलेन्ड पर हुकूमत कर रहा है—फ़ान्स के बादशाह के उभाड़ने से हेनरी के लड़के उसके खिलाफ़ रहे जिसमें से २ उसी

के सामने मर गये—फ़ान्स से लड़ाई होकर सुलह हो जाने पर हेनरी ने यह जानना चाहा कि हमारी रेआया में कौन लोग फ़ान्स के मददगार थे मगर अपने छोटे बेटे जान का नाम सब से ऊपर देख उसका कलेजा फट गया और बोखार में बीमार होकर दुनियां को छोड़ चला—हेनरी के ज़माने में रोज़गार खूब बढ़ा, स्टीफ़िन की लड़ाइयों से विनचिस्टर उजाड़ होगया था और इसने लन्डन को राज-धानी बनाया जहां बाज़ारों में अब दुनियां भर की चीज़ें मिलने लगीं—यहां से युरप के और मुल्कों में मछली, मास, सीसा, जसता, चमड़ा और कपड़ा जाता था, यहां पूरब से सोना जवाहिरात और मसाला आता था, इसी के ज़माने में पहिले खिड़की में शीशा लगा, यह घमन्डी, हौसले वाला और बहादुर था—

सन् ११

—⊛—

## पहिले रिचर्ड

११८६—६६

यह हेनरी का लड़का था, इसको तो इंग-
लेन्ड का बादशाह कहना नहीं चाहिये क्योंकि
यह १० साल में ६ महीने यहां रहा—इसको
जरूसलम मुसलमानों के हाथ से छुड़ाने का
बड़ा शौक था और ७०००० पाउन्ड लेकर इसने
स्काटलेन्ड को आज़ाद कर दिया—जिस दिन
इसके सिर पर ताज धरा गया उस दिन और
मुल्कों के सताये हुये बहुत से यहूदी यहां आये
और इस को बहुत नज़र दिया पर इसाई इन
लोगों को नापसन्द करते थे और यह बात फैली
कि बादशाह ने उनके क़तल आम का हुकुम
दिया है—बेचारे हज़ारों बे क़सूर मारे गये और
खूब लूटे गये, यार्क शहर में ५०० यहूदी भाग
कर पहुंचे, वहां अंगरेज़ों ने उन को घेर लिया
और बहुतेरों ने तो आपुस में एक दूसरे को मार

डाला पर आख़िर सब इसाइयों के हाथ से मारे गये—बादशाह ने खूब माल लूटा मगर पीछे से यह हुकुम निकला कि बचे हुये यहूदियों को पनाह दी जाती है और उन के मारने वालों को भी सज़ा मिली—

जरूसलम की लड़ाई का कुछ हाल लिखना ज़रूरी है—मसीह यहीं पैदा हुये और यहीं यहूदियों के सरदार पिलातूस के हुकुम से इनको सूली दी गई, यहां सब इसाई मुल्कों के लोग जाते थे—पहिले यह शहर अरबियों के हाथ में था, वे लोग मुसाफ़िरों को सताते नहीं थे—अब एशिया के तुर्कों ने यहांतक अपनी हुकूमत जमा लिया और यह लोग कट्टर मुसलमान होने से इसाइयों को बहुत सताते थे—रोम के पोप ने सारे इसाइयों को उभाड़ा, लालशाह के ज़माने में वहां इसाई फ़ौज पहिले पहुँची और जीतकर एक फ़ौजी सरदार को वहां का हाकिम

बनाया मगर यह बात दूसरे हेनरी के ज़माने
तक रही और वहां फिर मुसलमानी झन्डा
उड़ने लगा—अब फ़ान्स के बादशाह और
रिचर्ड ने इसको पूरी तरह से जीतना चाहा और
दोनों अपनी फ़ौज लेकर चले मगर वहां पहुं-
चने के पहिले दोनों में बिगड़ गई और पहुं-
चने पर आसट्रिया के ड्यूक से भी बिगड़ी—
रिचर्ड ने मुसलमान सरदार सलादीन से सा-
मना किया और बड़ी बहादुरी से लड़ा पर और
मुल्क के इसाई उसके मदद गार न हुये और
रसद की कमी; राह की थकाहट; दुशमनों के
हथियार से रोज़ फ़ौज की कमी देख कर उस
को वहां से लौटना पड़ा; यह बेचारा ना उम्मेद
होकर लौट रहा था कि इसका जहाज़ वेनिस की
खाड़ी में टकराकर फट गया और यह इंगलेन्ड
पहुंचने की जलदी में था इससे सारे यूरप में
सौदागर बनकर चला और अपना नाम ड्यू

सन् ११९२

बतलाता था, आसट्रिया की राजधानी वाइना में इसके नौकर को लोगों ने पहिचाना और बादशाह भी पकडकर ड्यूक के हवाले कर दिये गये जिसको इस ने अपने हाथ से मारा था– इसी दुशमनी से उसने इसको क़ैद करदिया मगर जर्मनी के बादशाह ने रिचर्ड को ६०००० पाउन्ड पर मोल लेकर अपने यहां क़ैद किया– एक फ्रेन्च गाने वाले ने क़िले के नीचे इसी की बनाई हुई एक चीज़ बांसुरी में बजाया और इसने उसकी तारीफ़ किया, तब इस का हाल मालूम हुआ और अंगरेज़ों ने ७०००० पाउन्ड दे कर इस को छोड़ाया–

यहां लौट कर देखा कि इसके भाई जान बाग़ी होगये हैं मगर उसने माफ़ी माँगा, फिर तो बादशाह की बाक़ी उमर फ़ान्स की लड़ाइयों में कटी जिसका खर्च अंगरेज़ों को देना पड़ता था–इसके एक रेआया को कुछ गड़ा हुआ ख़-

ज़ाना मिला उसने उसमें से इनको भी नज़र
दिया मगर यह सब लेना चाहते थे और उसके
न देने पर उसके गढ़ को घेर लिया, वहां
एक आदमी ने एक तीर इसको मारा जो अपना
काम कर गया, गढ़पर कब्ज़ा हो गया और वह
मारने वाला पकड़ा गया मगर रिचर्ड ने उसको
माफ़ कर दिया पर एक फ़ौजी अफ़सर ने बाद-
शाह के मरते ही उस को भी मार डाला–

यह हौसले वाला, बहादुर, गाने वाला और
शायर (कवि) था मगर इसने इंगलेन्ड के साथ
कोई सलूक न किया, राबिन हुड एक लुटेरों के
सरदार को इसने फांसी ज़रूर दिया–मुसलमानों
लड़ाइयों से यह हुआ कि अंगरेज़ी जहाज़ अब
पूरब के ओर जाने लगे और रोज़गार बढ़ा इसी
थोड़े लालच से बराबर जहाज़ जाया किये और
अंगरेज़ सारी दुनियां पर हुकूमत करने लगे,
यह सलूक तो इंगलेन्ड को मानना ही पड़ेगा–

## जान

११६६—१२१६

रिचर्ड के औलाद न होने से उसका भाई जान बादशाह हुआ—शाहज़ादा आर्थर और उसकी बहिन को जो बड़े भाई ज्याफ़री की औलाद थी इसने खतम कर दिया, लड़की तो विन्डसर गढ़ी में जन्म क़ैद रही मगर आर्थर का कुछ पता न लगा—इस क़सूर में फ़ान्स के बादशाह ने इस को मुजरिम समझ कर अपने पास बोलाया पर यह कब जाता था, इस से फ़ान्स की कुछ ज़मीन छोड़कर बाक़ी सब अंगरेज़ों के हाथ से निकल गई—यह बहुत अच्छा हुआ क्योंकि अब बादशाह इंगलेन्ड में रहने लगे और यहीं के होगये जो अबतक फ़्रेन्च सरदार थे और यहां हुकूमत करते थे—

बादशाह बड़ा ज़ालिम था, इसको न तो

आदमी का ख्याल और न ईश्वर का डर था,
इसने बहुत से टेक्स लगाया और बड़े आदमियों
को खूब लूटा क्योंकि उनका ज़ोर अब स्टीफ़िन
के ज़माने से बहुत घट गया था—एक यहूदी
का मांगी हुई रकम उससे न पाने पर एक दांत
रोज़ तोड़वाता था—

केन्टरबरी के पादड़ी के मरने पर उसने ए
अपना आदमी वहां भेजा मगर पादड़ी लोग
दूसरे को रखना चाहते थे, उधर पोप जी ने एक
तीसरे आदमी को जो अंगरेज़ था और उस ज़-
माने में रोम में रहता था भेजा, उस बेचारे लंग-
टन को जान ने यहां आने ही न दिया, पोप
जी ने नाराज़ होकर गिरजे बन्द करा दिये पर
इससे जान का क्या विगड़ा वह स्काटलेन्ड,
आयरलेन्ड और वेल्स की सैर करता और नज़र
लेता था-अब तो पोप जी और भी नाराज़ हुये
और उन्हों ने फ़्रान्स के बादशाह फ़िलिप और

ऩऩ
१२०८

अंगरेज़ी अमीरों को उभाड़ा, फ़िलिप ने बेड़ा साजकर चढ़ाई करने का सामान किया मगर यह बात बादशाह जान गये कि हमारी रैय्यत सब हमारे खिलाफ़ है और सुलह कर लिया, पोप के भेजे हुये लेंगटन के पांव पर अपना ताज रख कर उसको केन्टरबरी का पादड़ी माना और पोप जी को भी सालाना नज़र देना मंज़ूर कर लिया, मगर फ़िलिप अब भी इसी बिचार में थे कि इंगलेन्ड पर चढ़ाई ज़रूर करें—अंगरेज़ी बेड़ा के बड़े अफ़सर अर्ल सालिसबरी ने उन के बेड़े का नाश कर दिया मगर जान के और मददगार हारगये और उसको सुलह करना पड़ा—उसी ज़माने में फ़ान्स से इनके बहुत से मददगार यहां आये और उन लोगों ने बड़े ओहदे पाया, मालदार औरतों से उनकी शादी हुई और अमीर नाबालिगों के वली बनाये गये—

पादड़ी लैंगटन ने विचारा कि पादड़ी
और रैआया को मिल कर काम करना चाहिये;
रैआया की बड़ी भीड़ और अमीरों के सिपाही
विन्डसर के पास रनीमीड मैदान में आ डटे; उन
लोगों ने एक परवाना जिस को वड़ा परवाना
कहते हैं और जो अवतक लन्डन के अजायब
घर में रक्खा है बनाया और बादशाह के पास
मंज़ूरी को भेजा; पहिले तो जान ने उस पर कुछ
ख़्याल न किया क्योंकि उसका अख्तियार
बहुत घटता था मगर उसने जब देखा कि हमारे
मददगार दिन २ घट रहे हैं और लन्डन भी हाथ
से निकला चाहता है तब उसने उसको मंज़ूर
कर लिया और दस्तख़त करदिया मगर घर लौट
कर उसने बहुत अफ़सोस किया और विदे-
सन १२१५ शियों की फ़ौज सजा कर लूटना और गांव
जलाना शुरू कर दिया; यह देख लोगों ने
फ़्रान्स के शाहज़ादे लुई को बोलाया; जान उस

से लड़ने को वढ़ा मगर उसका माल, खज़ाना,
ताज और असबाब सब बह गया, इस अफ़सोस
से उसको बोखार आया और निवार्क गढ में सन १२१६
वह मर गया—

यह छोटी तबिअत का आदमी, झूठा और
वे इन्साफ़ था—लन्डन का पुल इसी के ज़माने
में बना और लन्डन के शहर के इन्तिज़ाम के
वास्ते दो शरीफ़ और एक मेअर भी हर साल
होने लगे—इंगलेन्ड में हुन्डी चलने लगी
और सेन्डविक और डी नदी की मछली अब
बाहर जाने लगी—

## तीसरे हेनरी
### १२१६—१२७२

जान के मरने के २० दिन बाद लोगों ने
नाराज़ी छोड़ एक नया मामूली ताज बनवाकर
उसके बेटे हेनरी को बादशाह बनाया जिस की
उमर १० बरस की होने से अर्ल पेमब्रुक वली

हुये, इधर लन्डन वग़ैरह लुई के हाथ में था और लिंकन शहर की गलियों में एक छोटी सी लड़ाई हुई जिसको अंगरेज़ अकसर लिंकन का मेला कहते हैं, उसमें लुई की पूरी हार रही और उसी ज़माने में फ़्रेन्च बेड़े का भी बरबाद हो जाना काम दे गया, क्योंकि लुई ने सुलह कर के घर की राह लिया—अर्ल पेमब्रुक दो ही साल में मर गये और वर्ग नामी जज ने वली होकर पादड़ी लैंगटन की मदद से ख़ूब काम संभाला—१७ बरस की उमर में बादशाह ने कार बार अपने ऊपर लिया मगर वह अपने फ़्रेन्च रिश्तेदारों की बड़ी ख़ातिर करता था क्योंकि वे लोग निकली हुई फ़्रान्स की ज़मीन को फिर हाथ में लाया चाहते थे—

सन १२२५ बादशाह ने फ़्रान्स पर चढ़ाई करने को ख़र्च मांगा जो इस शर्त पर दिया गया कि बड़ा परवाना फिर मंज़ूर किया जाय—लड़ाई होने

पर नुकसान रहा और वर्ग साहेब को जेल दिया गया; अब विनचिस्टर के पादड़ी वज़ीर हुये और दूसरी बार फ़ान्स पर चढ़ाई इस वास्ते हुई कि बादशाह की मां ने अपनी शादी फिर अपने एक पुराने यार से कर लिया जिन की ख़ातिर हेनरी को मंज़ूर थी, हार जीत तो होती रही मगर सुलह होने पर कुछ ज़मीन जरूर अंगरेज़ों को मिली—इधर पोप जी ने कहला भेजा कि हमने इटली में मज़हबी लड़ाई ठान रक्खा है और हेनरी ने उस को सच समझ कर पादड़ियों पर टेक्स लगाना और रोम को भेजना शुरू कर दिया, इन सब बातों से रेआया बिगड़ गई और इनके बहनोई सिमन मान्टफर्ट अर्ल लीस्टर का खिलाफ़ होना और उसके भाई रिचर्ड के जर्मनी का बादशाह होकर चले जाने से उसके बादशाहत की जड़ हिल गई—इस के ज़माने में स्काटलेन्ड से कोई झ-

सन् १२४२

गहा न हुआ और इसका सबब यह था कि हेनरी
की बड़ी बहिन और एक लड़की की शादी
वहां के दो बादशाहों से हुई—वेलस में चढ़ाई
होने पर भी वहां के लोग अजीत ही रहे—
वेस्तमिनिस्टर के दरबार में लोग हाथियार ले-
कर आये और हेनरी को मजबूर किया कि २४
आदमी की एक कमेटी बादशाहत को सुधारे
जिस में १२ आदमी रैआया भेजे और १२ बा-
दशाह की ओर से रहैं—आक्सफ़र्ड में एक क-
मेटी करके सब बादशाही अख़तियार १५ आ-
दमियों के हाथ में दिया गया और यह तै हुआ
कि (१) हर सूबे से ४ बड़े लोग आवें (२)
हर शहर से दो आदमी भेजे जायँ-(३) सर-
कारी आमदनी और खर्च का हर साल हिसाब
हो (४) सालमें ३ बार पारल्यामेन्ट की बैठक
हो, मगर बड़े आदमियों की आपुस की फूट से
कुछ भी सुधार न हुआ—उधर हेनरी अपने अख़-

तियार फिर हाथ में करने की फ़िकिर कर रहा था आखिर लड़ाई हो गई और बादशाह क़ैद हो गये, दूसरे दिन शाहज़ादा एडवर्ड अपने आप आकर बाप का क़ैद में साथी हुआ—दूसरे साल पारल्यामेन्ट बैठा और उसी ज़माने से उसकी ...रड़ पड़ी, उन दिनों के अमीर और पादड़ी से ...मब हाउस आफ़ लार्डस् और सूबे, शहरों के ...म्बरों से आज का हाउस आफ़ कामन्स नि-...लता है मगर उस ज़माने में सब एक साथ ...उते थे—

सन् १२६४

शाहज़ादा एडवर्ड ने एक दिन अपने ...द की गारद के अफ़सरों से दिल बहलाने ...ो घोड़दौड़ करने की सलाह दी, जब उन ...ोगों के घोड़े थक गये तो आप अपने पर ...ढ़कर भाग गया और अपने मददगारों को ...थ लेकर इवशाम मुक़ाम पर अर्ल सिमन से ...। भिड़ा, बड़ी गरम लड़ाई हुई, सिमन बेचारे

बादशाह को भी लड़ाई में लाया जो घा-
यल होकर गिरा पर वह चिल्लाया कि हम हेनरी
राजा हैं, शाहज़ादे ने आवाज़ पहिचाना और
उसके पास पहुंच गया, सिमन लड़ाई में मारा
गया और ताज फिर हेनरी के सिरपर धरागया-
शाहज़ादा क्रूसेड पर चला गया और हेनरी
सन् १२७२ बूढा होकर मर गया—

इस के ज़माने में सूती कपड़ा, मोम बत्ती
और पानी के वास्ते सीसे के नल बने, सोने
का सिक्का भी चला, पादड़ी बेकन ने दूरबीन
और जादू की लालटेन भी बनाया जिस से
लोग उसको जादूगर कहने लगे, एक वेनिस
के रहनेवाले ने कम्पास बनाया, बादशाह
न्यूकासिल में कोइला निकालने का परवाना
दिया जिस से इंगलेन्ड बड़ा अमीर होगया
यह अपने बाप के तरह वे रहम नहीं मगर
होसले का आदमी था, उसने बहुत से क़ा

किया मगर एकको भी पूरा न करसका—वेस्टमि-
निस्टर के गिरजे को उसने फिर से बनवाया
और खूब धन उड़ाया—

## पहिले एडवर्ड

## १२७२–१३०७

हेनरी की लाश पर हाथ रख कर अर्ल ग्ला-
उस्टर ने क़सम खाया कि हमलोग एडवर्ड को
बादशाह मानते हैं—उधर शाहज़ादा क्रूसेड से
लौट रहा था कि इटली में उसको बाप के मरने
का हाल मिला मगर रास्ते में देर होगई, उसने
फ्लान्डर्स की रानी से पुराने झगड़े को तै कर
डाला जिससे अंगरेज़ी ऊन वहां जा सके—दो
बरस पीछे वेस्टमिनिस्टर में इसके सिर पर ताज
धरा गया—स्काटलेन्ड के बादशाह भी आये थे
और उनको ५ पाउन्ड रोज़ राह खर्च दिया
गया—उस की लालसा यह थी कि स्काटलेन्ड
और वेल्स को मिलाकर सारे टापू पर हुकूमत

करै–उस ने पारल्यामेन्ट की सलाह से नये
क़ानून वनाया और यह तै होगया कि विना
पारल्यामेन्ट के रज़ामन्दी के बादशाह किसी
तरह का टेक्स न लगा सकै—

वेल्स के सरदार लिवेलिन को एडवर्ड ने
अपने पास नज़र लेकर आने को कहा मगर
वह न आया और लड़ाई हुई जिस में वह मारा
गया और उसका सिर फूल का ताज पहिनाकर
लन्डन के बुर्ज के दरवाज़े पर रक्खा गया–
उसका भाई डेविड बहुत दिन पीछे इसके हवाले
हुआ जिसका सिर काटा गया–एडवर्ड ने
वेल्स के भाटों को मरवा डाला उसका सबब
यह था कि यह लोग वहां के सरदारों के गुन
गाते थे और रेआया को जोश दिलाते थे–

सन् १२८२

इधर स्काटलेन्ड में रानी मारगरेट के मरने
पर १३ आदमी बादशाहत के हक़दार बने
मगर दो के हक़ इस वास्ते ठीक थे कि दोनों

रावर्ट ब्रूस और जान वेलिअल वहां के वादशाह विलिअम की लड़की के औलाद थे—एडवर्ड ने कहा कि हम स्काटलेन्ड के सिरताज हैं क्यों कि विलिअम जव दूसरे हेनरी का क़ैदी था तव उसने अपना सिरताज उसको माना था और पहिले रिचर्ड को उस काग़ज़ के वेचने का कोई अख़्तियार न था क्योंकि वह इंगलेन्ड के सव वादशाहों की चीज़ थी, इस वहाने से उसने वेलिअल को वहां का वादशाह वनाया— सन् १२९२

इधर फ़ान्स से जहाज़ी लड़ाई होगई—एक नारमन को किसी अंगरेज़ मल्लाह ने मार डाला इस पर उन लोगों ने एक अंगरेज़ी जहाज़ पर क़ब्ज़ा कर लिया और एक मुसाफ़िर को फांसी देदिया—अव तो सिंक वन्दरों के मल्लाह भी जा मिले और लड़ाई कुछ दिन चली मगर अंगरेज़ों की जीत रही—इस पर फ़ान्स के वादशाह फ़िलिप ने एडवर्ड को जो वहां के एक सूवे का सन् १२९३

डयूक था अपने हुज़ूरमें जवाब देनेको बोलाया
पर उसने न जाकर उस सूवे को छोड़ दिया-
इसी तरह बार २ लन्डन बोलाये जाने पर
बेलिअल ने भी नाराज़ होकर अपने ऊपर आ-
फ़त बोलाया-बहुत सी फ़ौज लेकर एडवर्ड ने
सारे स्काटलेन्ड पर क़ब्ज़ा कर लिया, बेलिअल
हारकर हाज़िर होगया और लन्डन बुर्ज में
क़ैदकर दिया गया-बादशाह अर्ल सरेको वहां
का हाकिम बनाकर बादशाही ताज और पो-
शाक लेकर चला आया, एक मशहूर लाल रंग
का पत्थर भी जो अब तख़्त के नीचे है वहीं से
आया, लोग कहते हैं कि इसपर सिर रख कर
याकूब ने फ़रिश्तों को आसमान से आते जाते
देखा था-स्काटलेन्ड के लोग यह कहने
लगे कि जहां पर यह रहैगा वहीं हमारे क़ौम
का आदमी बादशाह होगा और यह बात सन्
१६०३ में सच हुई--एडवर्ड ने वहां के सब कागज़

सन् १२९६

भी जला दिये, उसके लौटतेही फिर वहां बखेड़ा मचा और एक सरदार वालस नामी ने अंगरेज़ों को वहां से निकाल दिया और इंगलेन्ड के उत्तरी हिस्से में खूब लूट मार मचाया—इस से एडवर्ड ने फिर चढ़ाई किया और वालस हारकर पहाड़ों में भागा, फिर ३ बार चढ़ाई करके सारे मुल्क को बादशाह ने अपनी अमलदारी में करलिया और वालस को एक दग़ाबाज़ साथी ने अंगरेज़ों के हवाले करदिया और उसका सिर काटागया—६ महीने पीछे राबर्ट ब्रूस बादशाह बन बैठा, एडवर्ड ने फिर भी चढ़ाई किया मगर वहां पहुँच न सका और रास्ते ही से दुनिया को छोड़ अपनी राह लिया—

सन् १२९७

सन् १२९८

सन् १३०५

सन् १३०७

एडवर्ड बहादुर सिपाही और चतुर था—उसने वेस्टमिनिस्टर गिरजा को पूरा कर दिया—१६००० यहूदियों को सन् १२६० में मुल्क छोड़ने का हुकुम हुआ और उनको अपना माल

असबाब ले जाने की आज़ादी रही, उन लोगों
की छोड़ी जगह पर लम्बवारडी से सोनार आ
कर बसे और लमबई सड़क अवतक लन्डन में
है—इसी ज़माने में एशिया से काग़ज़, चश्मा
और वेनिस से मुँह देखने के शीशे आये और
विकने लगे, कोइला जलने से बहुत धुआं हो
ता था इसी से वह बन्द कर दिया गया, पहिली
रानी इसाबेला के चार लड़के थे जिन में से ३
मरगये और दूसरे एडवर्ड वादशाह हुये—दूसरी
रानीसे दो लड़के हुये जो अर्ल नारफ़ाक औ
अर्ल केन्ट हुये—

## दूसरे एडवर्ड

### १३०७–१३२७

इस के वाप के ज़माने में एक लड़कपन के
साथी गेविस्टन को मुल्क छोड़ने का हुक्म
हुआ और एडवर्ड ने इस से कहा था कि तुम
उस को न वोलाना और स्काटलेन्ड से लड़ते

रहना. मगर यह वहां हम्फ़री शहर तक गया और कुछ रईसों से नज़र लेकर लौट आया, अपने यार गेविस्टन को बोलाकर उसकी बड़ी ख़ातिर किया और सब काम उसी पर छोड़ कर खुद अपनी शादी करने फ़ान्स चल दिया— उसकी शान और बरताव से अमीर लोग नाराज़ होगये, बादशाह ने दो बार उसको मुल्क से निकाला मगर फिर खुद ही बोलाया, आख़िर अमीर लोग अर्ल लेंकास्टर को सरदार मान कर बिगड़ गये और उस को पकड़कर उस का सिर काट डाला—इस बात के दो बरस पहिले अमीर लोग हथियार लेकर पारल्यामेन्ट में आये और २१ अमीरों को हुकूमत और बादशाही घर बार के सुधारने को बैठाया और यह ते किया गया कि पारल्यमेन्ट की बैठक सालमें एकबार ज़रूर हो, बादशाह बिना रज़ामन्दी अमीरों के मुल्क से बाहर न जाय, ल-

सन् १३१२.

ड़ाई न छेड़े और किसी को कोई ओहदा न दे—

उधर स्काटलेन्ड में ब्रूस का ज़ोर खूब बढ़रहा था, कभी एक तो कभी दूसरे क़िले पर वह हाथ मारता था, बादशाह बड़ी फ़ौज लेकर चला मगर ब्रूस के धोखे में पड़कर बेनकबर्न की लड़ाई में ऐसा हारा कि सारा मुल्क अंगरेज़ी अमलदारी से निकल गया—५ साल पीछे इसने फिर धावा किया और बरविक गढ़ को घेरा मगर फिर भी हारना पड़ा—उसी ज़माने में ब्रूस का भाई आयरलेन्ड पहुँचकर वहां का बादशाह बन बैठा और कुछ हिस्से पर दो साल हुकूमत भी किया मगर वह फ़ागर की लड़ाई में मारा गया और आयरलेन्ड फिर अंगरेज़ों के हाथ लगा—फिर बादशाह ने आख़िरी चढ़ाई सन् १३२२ में स्काटलेन्ड पर किया पर कुछ बन न पड़ा और सुलह होगई—

सन् १३१४

सन् १३१८

सन् १३१४—१५ तक इंगलेन्ड में बड़ा भारी

अकाल रहा, बड़े आदमियों ने अपने नौकर चाकर छोड़ दिया और ये लोग चोरी करने लगे, रैआया यहां तक दुखी थी कि लोग कुत्ता और घोड़ा खा जाते थे, बादशाही मेज़ पर भी काफ़ी रोटी नहीं थी, अनाज की शराब बनाना बन्द कर दिया गया इसके पीछे ही प्लेग जी भी आये जिन्हों ने अब हमारे मुल्क में डेरा डाला है—

अब बादशाह की दया इसपेन्सर और उनके लड़के पर हुई मगर यह लोग भी गेविस्टन के तरह थे इससे अमीरों ने सिर उठाया उसमें लंकास्टर हार गये और उनका सिर काटा गया, दूसरे साल पारल्यामेन्ट में कई नये क़ानून पास हुए जिस से रैआया के अख़्तियार बढ़े और बादशाह का ज़ोर घटा, इन की रानी इसाबेला भी जो फ़्रान्स के बादशाह फ़िलिप की बहिन थी अब इन से कई बातों पर रूठ गई और अपने लड़के को लेकर फ़्रान्स चली गई, वहां

सन १३२२

सन् १३२५ इसको एक बाग़ी अमीर मिले और उस से प्रेम होगया—अब यह लार्ड मारटिमर और रानी विदेशी फ़ौज लेकर सफ़ाक के पास आरवेल मुकाम पर उतरे, बादशाह और उन के यार लोग वेल्स को भागे मगर अर्ल लेंकास्टर के

सन १३२६ लड़के ने इन लोगों को पकड़ा और इसपेन्सर को झट पट फांसी दी गई—प्यारल्यामेन्ट में यह तै हुआ कि दूसरे एडवर्ड अब हुकूमत नहीं कर

सन् १३२७ सकते इस वास्ते उनका लड़का बादशाह माना जाय, वे ताज के बादशाह कभी एक कभी दूसरे क़िले में रक्खे जाते थे, एक रात को चिल्लाने की आवाज़ बर्कली गढ़ से सुन पड़ी और सवेरे उसकी लाश ब्रिस्टलके लोगों को दिखाई गई—यह बेवकूफ़ तो नहीं था मगर आराम के सामने कोई काम नहीं करता था, दिन को शिकार और रात को नाच होता था—मट्टी के बरतन बने, महाजनी हुन्डी चलीं, डबलिन की यूनि-

वर्सिटी क़ायम हुई, इसकी लड़की जेन स्काट-
लेन्ड के बादशाह डेविड को व्याही गई थी—

## तीसरे एडवर्ड

१३२७—१३७७

तीसरे एडवर्ड की उमर १४ बरस की थी और
अर्ल केन्ट के वली होने पर भी कुल अख़्तियार
अर्ल मारटिमर और रानी इसाबेला का था—थोड़े
दिनों में उत्तरी सूबों पर स्काट फ़ौज टूट पड़ी,
बादशाह बड़ी मुशकिल से वहां पहुंचा, ५ दिन
तक दोनों ही ओर की फ़ौज सोचती रही मगर
रात को स्काट पीछे हटे और मारटिमर की स-
लाह से सुलह होगई—स्काटलेन्ड खुद मुख़तार
होगया और बादशाह दूसरे डेविड को एडवर्ड
की बहिन जेन व्याही गई—२८ बरस का होने
पर उसने कुल काम अपने हाथ में लिया और
अर्ल केन्ट को फाँसी दी गई—रानी इसाबेला

२७ वरस राइज़िंग गढ़ में रहती रही जहां वादशाह साल में एक वार उसके पास जाया करता था-इधर स्काटलेन्ड में वादशाह डेविड के मरजाने पर उसका लड़का तीसरा डेविड जिसकी उमर ६ साल की थी वादशाह हुआ-उधर एडवर्ड वेलिअल ने जिसके वाप जान वेलिअल की मदद पहिले एडवर्ड ने किया था अव ताज पर दांत लगाया और वरविक गढ़ को घेर लिया. वड़ी भारी लड़ाई होने पर स्काट हार गये और वेलिअल वादशाह होगया, कुछ ज़मीन अंगरेजों के हाथ भी लगी जो वहुत दिन तक रही-

सन्
१३३२

फ्रेन्च ताज लेने का एडवर्ड को वड़ा शौक था और वहां वादशाह के कोई औलाद न होने से इसने अपना हक़ ठहराया क्योंकि इसकी मां उनकी वहिन थी; वहां के लोगों ने कहा कि हमारे क़ानून से लड़की या उसकी औलाद

का कोई हक़ नहीं होता इसके सेवाय फ़ान्स में जो अंगरेज़ी ज़मीन थी उसपर वहां के बादशाह ने दांत लगाया और बेलजिअम पर भी हाथ बढ़ाया जहां उनकी अमलदारी हो जाने से इंगलेन्ड का कपड़े का रोज़गार बन्द हो जाने का डर था—लड़ाई छिड़गई और २०० बरस जारी रही, कभी अंगरेज़ कभी फ़्रेन्च हारते थे मगर आखिर में अंगरेज़ों को फ़ान्स छोड़ही देना पड़ा—स्लीस मुकाम पर एक जहाज़ी लड़ाई में ३०००० फ़्रेन्च मारे गये और फिर एक लड़ाई जीतकर अंगरेज़ आगे बढ़े और क्रेसी पर बड़ी अंगरेज़ी फ़ौज जमा हुई—अंगरेज़ों की कमानों पर कपड़ा चढ़ा था और पानी बरसने से फ़्रेन्च कमान ढीली पड़गई मगर पानी बन्द होते ही अंगरेज़ी तीरों की बौछार से फ़्रेन्च सिपाहियों के पांव उखड़े, दोनों दल बड़ी बहादुरी से लड़े-एडवर्ड का लड़का प्रिन्स आफ़ वेल्स जिसको काली

पोशाक का शौकीन होने से काले शाहज़ादे कहते थे बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था, किसी खैर ख्वाह ने आकर बादशाह से कहा कि फ़ौज कुछ और भी शाहज़ादे को मदद को भेजी जाय मगर उसने ज़वाब दिया कि इसकी ज़रूरत नहीं शाहज़ादे को अपनी बहादुरी देखाने का अच्छा मौक़ा मिला है और आजकी जीत उसी के नाम लिखी जायेगी—फ़्रेन्च शाह फ़िलिप ने अंगरेज़ी फ़ौज के बीच में घुसने की बड़ी फ़िकिर किया मगर कोई काम न निकला और अंगरेज़ी तीरों के तड़क से उनके ज़ी छोटे पड़ गये, सैकड़ों धड़ा धड़ गिरते थे, बोहिमिआ का अन्धा बादशाह मारा गया और उसके राज्य चिह्न उसी दिन से प्रिन्स आफ़ वेल्स के हो गये जो अबतक हैं—कहा जाता है कि तोप पहिले इसी लड़ाई में काम में लाई गई—

सन १३४६

दो महीने पीछे स्काटलेन्ड में फिर डेविड ने

कब्ज़ा किया और फ़ान्स के मददगार बनकर इंगलेन्ड पर चढ़े, मगर रानी फ़िलिपा ने उनको क़ैद कर लिया और एक अंगरेज़ी सरदार सर रेल्फ़ नेविल नें उस जगह पर एक निशान गाड़ा जिससे अबतक वह नेविल क्रास कही जाती है—

उधर बादशाह ने भट केले शहर को घेरा और एक साल रसद न पहुँचने से फाटक खुल गया, २०० बरस वह अंगरेज़ों के हाथ में रहा—

सन् १३४

अब प्लेग फिर आया और लाखों आदमी मर गये—मज़दूरों ने मज़दूरी बढ़ा दिया और बहुत लोगों को आदमी न मिलने से काम रोकना पड़ता था, बड़ी मुसीबत पड़ी तब प्यारलामेन्ट से यह कानून निकला कि प्लेग के पहिले जो मज़दूरी मिलती थी वही दी जाय और कोई मज़दूर अपना घर छोड़कर भाग न जाये—

सन् १३४

फ़ेन्च बादशाह के मरने पर उनका बेटा जान

कहते थे बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था, किसी
खैर ख्वाह ने आकर बादशाह से कहा कि फ़ौज
कुछ और भी शाहज़ादे को मदद को भेजी जाय
मगर उसने जवाब दिया कि इसकी ज़रूरत नहीं
शाहज़ादे को अपनी बहादुरी देखाने का अच्छा
मौक़ा मिला है और आजकी जीत उसी के नाम
लिखी जायेगी-फ़्रेन्च शाह फ़िलिप ने अंगरेज़ी
फ़ौज के बीच में घुसने की बड़ी फ़िकिर किय.
मगर कोई काम न निकला और अंगरेज़ी तीरों
के तड़क से उनके जी छोटे पड़ गये, सैकड़ों
धड़ा धड़ गिरते थे, बोहिमिआ का अन्धा
बादशाह मारा गया और उसके राज्य चिह्न
उसी दिन से प्रिन्स आफ़ वेल्स के हो गये
जो अबतक हैं-कहा जाता है कि तोप पहिले
इसी लड़ाई में काम में लाई गई—

सन १३४६ दो महीने पीछे स्काटलेन्ड में फिर डेविड ने

कब्ज़ा किया और फ़ान्स के मददगार बनकर इंगलेन्ड पर चढ़े, मगर रानी फ़िलिपा ने उनको क़ैद कर लिया और एक अंगरेज़ी सरदार सर रेल्फ़ नेविल नें उस जगह पर एक निशान गाड़ा जिससे अबतक वह नेविल क्रास कही जाती है—

उधर बादशाह ने झट केले शहर को घेरा और एक साल रसद न पहुँचने से फाटक खुल गया, २०० बरस वह अंगरेज़ों के हाथ में रहा—

अब प्लेग फिर आया और लाखों आदमी मर गये—मज़दूरों ने मज़दूरी बढ़ा दिया और बहुत लोगों को आदमी न मिलने से काम रोकना पड़ता था, बड़ी मुसीबत पड़ी तब प्यारलामेन्ट यह कानून निकला कि प्लेग के पहिले जो मज़दूरी मिलती थी वही दी जाय और कोई मज़दूर अपना घर छोड़कर भाग न जाये—

फ़्रेन्च बादशाह के मरने पर उनका बेटा जान

हुकूमत करने लगा और फिर लड़ाई ठनी
काले शाहज़ादे फ़ान्स के बीच में पहुँच गये
और जान बड़ी भारी फ़ौज लेकर इनसे
चला, पोइटिअर्स जगह पर लड़ाई हुई
अंगरेज़ झाड़ियों में जा छिपे, दुश्मन ने
कि यह भागे जाते हैं और आगे बढ़े, फिर
झाड़ियों से अंगरेज़ी तीर बरसने लगे जिस
उनके छक्के छूटे, फ़ौज सब तीन तेरह होगई
बादशाह जान और उनका लड़का दोनों
हो गये—काले शाहज़ादे ने इसकी बड़ी इज़्ज़त
किया, जबतक यह खाता रहा वह बराबर पीछे
खड़ा रहा और उन दिनों क़ैदी की इतनी इज़्ज़त
करने से उसका नाम बहुत बढ़ा, मगर उस
लिमोगस क़िले के जीतने पर जिसको ख
करने में लोगों ने इन्कार किया था बड़ी बेरहमी
देखाया—क़िला टूटने पर रेआया का क़त्ल-
आम हुआ, इस बात को लोग बहुत दिन

ले और उसी दिन से अंगरेज़ी नामसे फ़ान्स
नफ़रत हो गई जो यहांतक बढ़ी कि सन्
३७४ में एडवर्ड के हाथ २ शहर रह गये
क़ी सब फ़ेन्च के हाथ लगे—काले शाहज़ादे
बीमार होकर घर लौटे और मर गये, उधर
शाह ने भी दुनिया को छोड़ अपना रास्ता
या—

सन् १३७७

इसके ज़माने में दो बादशाह स्काटलेन्ड
र फ़ान्स के क़ैदी थे—डेविड को तो ११ बरस
जुरमाना देने पर छुटकारा मिला मगर
न सुलह होने पर भी जुरमाना न दे सका
र क़ैद में मरा—सेक्सन, नारमन और ब्रिटन
ने को एक समझने लगे और अंगरेज़ी
न बढ़ने लगी—पारल्यामेन्ट के दो हिस्से
र अलग बैठे और लार्ड वा कामन कह-
थे—कोलोन शहर में एक पादड़ी ने बारूद
किया जिससे लड़ाई का ढंग बदल गया—बड़े

परवाने में राजा का अख़्तियार बढ़ा और
की लड़ाई के दिनों में रसद और जहाज़
का अख़्तियार हुआ—वह बड़ा बहादुर, स
दार, चतुर और रहम दिल था—एक
जान विकलिफ़ ने एक किताब लिखा जि
प्राटेस्टेन्ट मज़हब निकला और वह पादरि
के ख़िलाफ़ था इससे उस का कुछ न बि
क्योंकि यह लोग बड़े धनी थे और अमीर ल
इनपर हाथ साफ़ करना चाहते थे—उसने
बिल का तरजुमा भी किया—इस बादशाह
ज़माने में आक्सफ़र्ड की नई कालिज
विनचिस्टर में भी एक कालिज बनी—ड्यूक
ख़िताब उसी ने चलाया और उसके सब
ड्यूक थे, काले शाहज़ादे ड्यूक आफ़ कार्न
कहे जाते थे, ड्यूक आफ़ क्लेरन्स, लेंकास्टर
और ग्लाउस्टर भी इसके बेटे थे—बगा
क़ानून बने और पोप जी के टैक्स प

र से बिलकुल दूर हो गये—इसके सामने तो
ों मगर मरने पर लोग इसकी बड़ी इज्ज़त
ने लगे—काले शाहज़ादे का बेटा रिचर्ड
दशाह हुआ—

## तीसरे रिचर्ड

## १३७७—९९

रिचर्ड १२ साल की उमर में बादशाह हुआ
दिन लन्डन खूब सजाया गया और ना-
ों में पानी के बदले शराब बहती थी, उसके
ा लोग वली बनकर हुकूमत करते और
ादार होते थे—फ़ान्स से लड़ाई होती रही
अब वहां से लूट का माल आने के बदले
देना पड़ता था—अंगरेज़ी बेड़े को इसपेन
ा न तबाह करदिया, खज़ाना खाली था
टेक्स की ज़रूरत पड़ी—हाउस्न आफ़ का-
खर्च का हिसाब मांगता था—नया टेक्स

परवाने में राजा का अख़तियार वढ़ा और
को लड़ाई के दिनों में रसद और जहाज़
का अख़तियार हुआ—वह बड़ा बहादुर, स
दार, चतुर और रहम दिल था-एक
जान विकलिफ़ ने एक किताव लिखा जि
प्राटेस्टेन्ट मज़हव निकला और वह पादरि
के ख़िलाफ़ था इससे उस का कुछ न वि
क्योंकि यह लोग बड़े धनी थे और अमीर ल
इनपर हाथ साफ़ करना चाहते थे—उसने
विल का तरजुमा भी किया—इस वादशाह
ज़माने में आक्सफ़र्ड की नई कालिज
विनचिस्टर में भी एक कालिज वनी—ड्यूक
ख़िताव उसी ने चलाया और उसके सव ल
ड्यूक थे, काले शाहज़ादे ड्यूक आफ़ कार्न
कहे जाते थे, ड्यूक आफ़ क्लैरेन्स, लैंकास्टर
और ग्लाउस्टर भी इसके वेटे थे—वग़ावत
कानून वने और पोप जी के टक्स पादड़ि

र से बिलकुल दूर हो गये—इसके सामने तो
ों मगर मरने पर लोग इसकी बड़ी इज्ज़त
ने लगे—काले शाहज़ादे का बेटा रिचर्ड
शाह हुआ—

## तीसरे रिचर्ड

### १३७७—९९

रिचर्ड १२ साल की उमर में बादशाह हुआ
दिन लन्डन खूब सजाया गया और ना-
ों में पानी के बदले शराब बहती थी, उसके
ा लोग वली बनकर हुकूमत करते और
दार होते थे—फ़ान्स से लड़ाई होती रही
अब वहां से लूट का माल आने के बदले
देना पड़ता था—अंगरेज़ी बेड़े को इसपेन
ा ने तबाह करदिया, ख़ज़ाना ख़ाली था
टेक्स की ज़रूरत पड़ी—हाउस्न आफ़ का-
खर्च का हिसाब मांगता था—नया टेक्स

लगाया गया जो १५ साल से ज़्याद:
वालों को एक शिलिंग से लेकर एक पाउन्ड
के हिसाब से देना पड़ता था, इसके वसूल
रने में बड़ी तकलीफ़ रेआया को दीजाती
किसी के घर में एक सरकारी नौकर
करने को गया और वहां उसकी जवान लड़
से बुरी दिल्लगी किया, उसके बाप वाट टाइ
ने जो खपड़ा बनाता था उसका सिर
डाला और बग़ावत मचा दिया—

रेआया मज़दूरी के क़ानून से तो नाराज़
थे अब एक बड़ा दल बांधकर लन्डन पहुँचे
लूट मार मचाया—बादशाह ने उनकी बात
मंज़ूर करलिया (१) गुलामी उठ जाय
मालगुज़ारी ।) एकड़ से ऊपर न बढ़े (३)
और बाज़ारों में सब लोग रोज़गार कर स
(४) पुराने क़सूर सब माफ़ हो जायें—
इतने पर भी लूट बन्द न हुई और कई अ

जान से मारेगये—दूसरे दिन बादशाह ने इस-
मिथ फ़ील्ड जगह पर जाकर वाट टाइलर से
बात किया जिसके साथ २०००० आदमी थे,
उसने टोपी भी बादशाह के सामने न उतारा
और बात भी गुस्ताख़ी से करता था, मगर त-
लवार के क़ब्ज़े पर हाथ रखते ही लन्डन के
कोतवाल ने उसका सिर काट डाला, इस को
देख उसके साथी अपनी कमान चढ़ाने लगे
मगर बादशाह घोड़ा दौड़ा कर उनके पास
पहुँचा और पुकार कर कहा कि टाइलर बागी
था हम तुम्हारे सरदार बनते हैं, इससे सबके
दिल पिघल गये और सब अपने घर चलेगये,
मगर राजा का चौथा क़रार पूरा न होने पाया
और १५०० आदमियों को फांसी हुई—

इधर फ़्रान्स और स्काटलेन्ड ने एक होकर
इंगलेन्ड पर चढ़ाई किया मगर कुछ भी फ़ायदा
न हुआ—इसके बदले रिचर्ड ने स्काटलेन्ड में

सन् १३८

जाकर एवरडीन, पर्थ, डन्डी, और एडिनबरा शहरों को खाक में मिलादिया, मगर आखिर में ओटरबोर्न की लड़ाई में अंगरेज़ हार गये- इधर इसने अपने दोस्तों पर मेहरवानी करना चाहा और अर्ल आक्सफ़र्ड और सफ़ाक का अख़्तियार इतना बढ़ा कि वादशाह के चचा वली डयूक लेंकास्टर को इसपेन चला जाना पड़ा-दूसरे चचा ग्लाउस्टर अब वली बने और वादशाह के यारों को फांसी दीगई, दूसरे साल वादशाह ने सब अख़्तियार अपने हाथ में लेकर इन्साफ़ और रहम से हुकूमत किया-चचा ग्ला- उस्टर को केले क़िले में क़ैद किया जहां वह मार गये-इधर रानी के मरजाने पर रिचर्ड ने फ़ान्स की शाहज़ादी से जिसकी उमर ७ साल की थी शादी कर लिया, इस वात से लोग वहुत नाराज़ हुये-अब डयूक नारफ़ाक और हरफ़र्ड में झगड़ा हुआ और दोनों ने इसको लड़कर

सन् १३८८

चुकाना चाहा, बादशाह भी देखने आये और
इनको लड़ने न दिया, हरफ़र्ड को १० साल
और दूसरे को हमेशा को मुल्क से निकाल
दिया—हरफ़र्ड अपने बाप के मरने पर उसकी
जायदाद लेने को लौटा मगर रिचर्ड पहिले ही
उसपर हाथ साफ़ करचुके थे, ६०००० आदमी
आते ही उसके साथ हो गये और बेचारे बाद-
शाह का साथ छोड़ दिया, वह क़ैद होकर
लन्डन लाया गया और वहां उसके सामने हर-
फ़र्ड के सिर पर ताज धरा गया—रिचर्ड एक सन् १३९९
क़िले में क़ैद होकर ६ महीने पीछे मरा या मारा
गया—यह बड़ा शौकीन था और सदा सोने ज-
वाहिर से मढ़ा रहता था, २०००० आदमी उसकी
ख़िदमत करते थे, वह ख़ूबसूरत था और बदला
लेना व ज़नानापन उसके मिज़ाज में ख़ूब
था—उसके ज़माने में विन्डसर गढ़ी पूरी बन
गई और नाइट आफ़ गारटर और बाथ के ख़ि-

ताव पहिले दिये गये—फ़रमान शाही से अमीर बनाये गये जो पिअर (Peer) कहे जाने लगे—पादड़ी जान विकलिफ़ जो तीसरे एडवर्ड के ज़माने में मज़हब को बदल रहा था अब खुल्लम खुल्ला पोप का दुशमन हो गया और पादड़ियों के क़सूर खूब साबित करता था, वह तो सन् १३८४ में मर गया मगर उसके चेलों ने पादड़ियों के मालदार होने और दुनियां के और किसी काम के न होने पर सन् १३९५ में हाउस आफ़ कामन्स को एक अरज़ी दिया, इस के चलाये मज़हब से इंगलेन्ड में बहुत दिन बड़ा कोहराम था, हज़ारों आदमी मारे गये, एक बादशाह का सिर काटागया और दूसरा निकाला गया—

## लेंकास्टर ख़ान्दान

### १३९९—१४६१

चौथे हेनरी १३९९—१४१३, पांचवें हेनरी १४१३-१४२२, छठवें हेनरी १४२२—१४६१

# चौथे हेनरी

## १३६६–१४१३

हेनरी का हक़ कुछ भी न था मगर उन दिनों इस को कौन देखता था, सच्चा और असली हक़दार एडमन्ड क़ैद कर दिया गया, हेनरी को रेआया ने राजा बनाया–उनके ख़िलाफ़ यह चल नहीं सकता था इस से उन लोगों का अख़्तियार और भी बढ़ा, स्काटलेन्ड से लड़ाई हुई जिसमें वे लोग होमिलडन पहाड़ी पर बुरी तरह से हारे, एडमन्ड तो क़ैद में था ही मगर लोग रिचर्ड को भी स्काटलेन्ड में जीता कहते थे इस से कई बार बग़ावत भी हुई मगर बादशाह ने सबको दबाया–उधर सरहद पर डुगला ख़ान्दान बिगड़ गया और इधर अंगरेज़ी ख़ान्दान परसी बाग़ी होगया; सबब यह था कि परसी ख़ान्दान के

सन् १४०२

एक रिश्तेदार को वेल्स वालों ने क़ैद कर लिया और वादशाह ने उस के छोड़ाने का विचार भी न किया; उधर वेल्स का एक सरदार ग्लेन्डोवर जिसकी तालीम लन्डन के इस्कूलों में हुई थी और रिचर्ड का दरवारी भी था अव वाग़ी होकर परसियों से जा मिला; सवव यह था कि वादशाह के किसी यार ने इसकी कुछ ज़मीन दवा लिया और उसने कुछ भी मदद न दिया; यह सव मिलकर वादशाह से लड़ने चले, परसियों के सरदार अर्ल नारथंवरलेन्ड तो आये नहीं मगर उनका लड़का हाटस्पर वड़ी वहादुरी से लड़ कर श्रियुज़वरी में मारा गया;

सन १४०३

नारथंवरलेन्ड हाज़िर होगया और उसको माफ़ी हुई मगर उसने फिर सिर उठाया और वहुत वरस तक स्काटलेन्ड या वेल्स में फिरता रहा; आख़िर टेडकास्टर जगह पर मारा गया—

फ़ान्स के वादशाह ने शाहज़ादी इसावेला

का जिसकी शादी बादशाह रिचर्ड से हुई थी
ज़ेवर मांगा क्योंकि क़रार यह था कि बेवा होजा
ने पर फेर दिया जायेगा, अंगरेज़ों ने कहा कि
तुम्हारे बादशाह जान यहां क़ैद थे और उनका
जुरमाना अबतक वसूल नहीं हुआ सो यह ज़ेवर
उसी हिसाब में आगया मगर यह कौन सुनता
था—खुल्लम खुल्ला लड़ाई नहीं ठनी मगर फ़्रेन्च
अमीर अंगरेज़ी किनारों पर आकर लूट मार
किया करते थे, उधर ड्यूक अरलिअन्स के मारे
जाने पर वहां दो दल हो गये, हेनरी ने दोनों
की मदद किया और आख़िर एंगोलीम, पोइटो,
एक्वीटेन सूबों के मालिक बन बैठे उधर स्काट
शाहज़ादा जेम्स पढ़ने को फ़्रान्स जा रहा था
उसका जहाज़ तूफ़ान से अंगरेज़ी किनारे पर
आ लगा और वह क़ैद हो गया—बादशाह को
आख़िर में उसके बेटे प्रिन्स आफ़ वेल्स से तक-
लीफ़ मिली, एकबार उसके ऊपर बग़ावत का

एक रिश्तेदार को वेल्स वालों ने क़ैद कर लिया और बादशाह ने उस के छोड़ाने का विचार भी न किया: उधर वेल्स का एक सरदार ग्लेन्डोवर जिसकी तालीम लन्डन के इस्कूलों में हुई थी और रिचर्ड का दरबारी भी था अब बाग़ी होकर परसियों से जा मिला: सबब यह था कि बादशाह के किसी यार ने इसकी कुछ ज़मीन दबा लिया और उसने कुछ भी मदद न दिया. यह सब मिलकर बादशाह से लड़ने चले: परसियों के सरदार अर्ल नारथंबरलेन्ड तो आये नहीं मगर उनका लड़का हाटस्पर बड़ी बहादुरी से लड़ कर श्रियुज़बरी में मारा गया: नारथंबरलेन्ड हाज़िर होगया और उसको माफ़ी हुई मगर उसने फिर सिर उठाया और बहुत बरस तक स्काटलेन्ड या वेल्स में फिरता रहा. आख़िर टेडकास्टर जगह पर मारा गया—

सन् १४०३

फ़्रान्स के बादशाह ने शाहज़ादी इसाबेला

का जिसकी शादी बादशाह रिचर्ड से हुई थी ज़ेवर मांगा क्योंकि क़रार यह था कि बेवा होजा ने पर फेर दिया जायेगा, अंगरेज़ों ने कहा कि तुम्हारे बादशाह जान यहां क़ैद थे और उनका जुरमाना अबतक वसूल नहीं हुआ सो यह ज़ेवर उसी हिसाब में आगया मगर यह कौन सुनता था—खुल्लम खुल्ला लड़ाई नहीं ठनी मगर फ़्रेन्च अमीर अंगरेज़ी किनारों पर आकर लूट मार किया करते थे, उधर ड्यूक अरलिअन्स के मारे जाने पर वहां दो दल हो गये, हेनरी ने दोनों की मदद किया और आख़िर एंगोलीम, पोइटो, एक्वीटेन सूबों के मालिक बन बैठे उधर स्काट शाहज़ादा जेम्स पढ़ने को फ़्रान्स जा रहा था उसका जहाज़ तूफ़ान से अंगरेज़ी किनारे पर आ लगा और वह क़ैद हो गया—बादशाह को आख़िर में उसके बेटे प्रिन्स आफ़ वेल्स से तकलीफ़ मिली, एकबार उसके ऊपर बग़ावत का

इलज़ाम लगा, वह अपने बापके कमरे में घुस कर उसके पैरों पर गिरा और तलवार खींचकर बोला कि बेइज़्ज़ती से तो मरना अच्छा है बादशाह ने उसको माफ़ कर दिया–एकबार इस शाहज़ादे के एक साथी को जज गेसकोइन ने सज़ा कर दिया उसपर इसने तलवार खींच लिया मगर जज ने जब इसका भी चालान कर दिया तो इसने माफ़ी मांगा–राजा हेनरी को मिरगी का रोग था और उसी बीमारी में एक दिन वह वेस्टमिनिस्टर में गिरा मगर फिर न उठा और मरगया–उसकी दो शादी हुई, पहिली से चार लड़के और २ लड़की थी–

ई० १४१३ यह बहादुर, फुरतीला और चालाक था, रेआया का अख़्तिआर इतना बढ़ा कि इस को पहिले पारल्यामेन्ट में लोगों ने इसको झूठा और दग़ा-बाज़ कहा–इसने मज़हब के ख़िलाफ़ कहने-वालों को मारे जाने का क़ानून बनाया और

लन्डन के आसविथ गिरजे का पादड़ी विलि-
अम साटर पहिला शहीद हुआ जो विकलिफ़
की बातों को सच मानकर सन् १४०१ में ज-
लाया गया—इसी वादशाह के ज़माने में यहां
पहिले तोप चली, बरविक शहर को घेरने पर
एक ही वार में एक बुर्ज के उड़ जाने से लोग
घवड़ा गये और शहर का फाटक खोल दिया—

## पांचवें हेनरी

१४१३—२२

वादशाह होते ही इसने पुराने साथियों को
छोड़ वहां के पन्डितों को अपने साथ रक्खा
जिस में जज गेसकोइन भी थे—एडमन्ड अर्ल
आफ़ मार्च को जो सच्चा हक़दार होने से इसके
वापके सामने क़ैद था छोड़ दिया—परसियों
की जागीर हाटस्पर के लड़के को लौटा दिया
और रिचर्ड की लाश को वेस्टमिनिस्टर में
जगह दी गई मगर प्राटेसटेन्ट जलाये ही

इलज़ाम लगा; वह अपने बापके कमरे में घुस
कर उसके पैरों पर गिरा और तलवार खींचकर
बोला कि बेइज़्ज़ती से तो मरना अच्छा है;
बादशाह ने उसको माफ़ कर दिया—एकबार इस
शाहज़ादे के एक साथी को जज गेसकोइन ने
सज़ा कर दिया उसपर इसने तलवार खींच लिया
मगर जज ने जब इसका भी चालान कर दिया
तो इसने माफ़ी मांगा—राजा हेनरी को मिरगी
का रोग था और उसी बीमारी में एक दिन वह
वेस्टमिनिस्टर में गिरा मगर फिर न उठा और
मरगया—उसकी दो शादी हुईं; पहिली से चार
लड़के और २ लड़की थी—

यह बहादुर, फुरतीला और चालाक था, रैआया
का अख़्तिआर इतना बढ़ा कि इस को पहिले
पार्ल्यामेन्ट में लोगों ने इसको झूठा और दग़ा-
बाज़ कहा—इसने मज़हब के ख़िलाफ़ कहने-
वालों को मारे जाने का क़ानून बनाया और

लन्डन के आसविथ गिरजे का पादड़ी विलिअम साटर पहिला शहीद हुआ जो विकलिफ़ की बातों को सच मानकर सन् १४०१ में जलाया गया—इसी बादशाह के ज़माने में यहां पहिले तोप चली, बरविक शहर को घेरने पर एक ही बार में एक बुर्ज के उड़ जाने से लोग घबड़ा गये और शह्र का फाटक खोल दिया—

## पांचवें हेनरी

### १४१३—२२

बादशाह होते ही इसने पुराने साथियों को छोड़ वहां के पन्डितों को अपने साथ रक्खा जिस में जज गेसकोइन भी थे—एडमन्ड अर्ल आफ़ मार्च को जो सच्चा हक़दार होने से इसके बापके सामने क़ैद था छोड़ दिया—परसियों की जागीर हाटस्पर के लड़के को लौटा दिया और रिचर्ड की लाश को वेस्टमिनिस्टर में जगह दी गई मगर प्राटेसटेन्ट जलाये ही

जाते रहे—इंगलेन्ड के बादशाह अबतक फ़ान्स के बादशाह भी कहे जाते थे, हेनरी ने कहला भेजा कि ब्रिटेनी की सुलह में जो तै हुआ था उसको अब पूरा होना चाहिये, इस के जवाब में फ़ान्स से टेनिस खेलने के मुला-यम गेंद आये जिसका मतलब यह था कि बेश तुम अभी लड़के हो—यह आग होगया और जिस तरह हो सका रुपिया जमा किया गया और लड़ाई का सामान हुआ मगर इधर अर्ल मार्च के बादशाह बनाने को बग़ावत होगई और हेनरी के यार लार्ड इसक्राप और उस के एक रिश्तेदार भाई की गरदन मारी गई—

३०००० फ़ौज लेकर अंगरेज़ी बेड़ा सीन नदी के मुहाने पहुंचा, हारफ़्लोर क़िले पर कब्ज़ा करतेही फ़ौज में बीमारी फैली और सैकड़ों मौत से भी न डरने वाले बहादुर भट पट मर गये—आधी फ़ौज रहने पर भी हेनरी ने केले

शहर का बिचार किया मगर राह में अगिनकोर्ट जगह पर एक लाख फ़्रेन्च सिपाही पड़े थे और पुल टूटे थे—अब अंगरेज़ सिपाहियों को क्रेसी की लड़ाई याद आई जिसमें तीसरे एडवर्ड ने बड़ी बहादुरी देखाया था और सब लोगों ने दिल खोल कर लड़ना बिचारा—रात को पानी खूब बरसा और सूरज निकलते ही इन लोगों ने तीरों की झड़ी लगा कर दुशमनों के छक्के छोड़ा दिये, फ़्रेन्च दल डगमगा ही रहा था कि अंगरेजों ने तलवार से काम लिया, अब दुशमन भागे और उन के जनरल समेत १०००० आदमी मारे गये, हेनरी बड़ी बहादुरी से लड़ा और उसके भी १६०० सिपाही मरे—भगेडुओं का पीछा न कर के वह लन्डन पहुंचा और वहां सब को खुशी से इतना फूला हुआ पाया कि लोग आपे में नहीं समाते थे और इसी की सब बातें मानने लगे—दो साल

सन १४१५

पीछे फिर लड़ाई छिड़ी और धीरे २ अंगरेज़ी अमलदारी बढ़ती गई यहां तक कि ६ महीने घिरे रहने से रोआं शहर पर भी अंगरेज़ी झन्डा फहराने लगा और सारी नारमन्डी अंगरेज़ों की होगई—हेनरी का पल्ला अब और भी मज़बूत पड़ा क्योंकि ऊपर लिखा है कि ड्यूक आरलिअन्स को ड्यूक बरगन्डी ने मार डाला था, अब उसके मददगारों ने उनकी भी जान लिया और उन का लड़का बाप के ख़ून का बदला लेने में मदद के वास्ते हेनरी से आ मिला—अब तो पागल फ़्रेन्च बादशाह से सुलह होगई, उसकी बेटी केथराइन हेनरी को ब्याही गई और यह ते हुआ कि वह और उसकी औलाद फ़्रान्स के भी बादशाह होंगे और पागल बादशाह की ज़िन्दगी में वली रहकर सब काम करेंगे—हेनरी तो अपनी नई रानी को लेकर लन्डन पहुंचा, और यहां लोगों ने उसके भाई ड्यूक क्लेरेन्स

सन् १४१६

सन् १४२०

को स्काटलेन्ड की मदद से मारकर अंगरेज़ी फ़ौज को हटा दिया—हेनरी फिर स्काटलेन्ड के क़ैदी राजा को साथ लेकर फ़ान्स पहुंचा और राजधानी पारिस के पास सब से मज़बूत क़िला पर झन्डा गाड़दिया जिससे फ़ान्स की सब उम्मेद जाती रही—अब हेनरी के एक लड़का भी हो चुका था और इसका काम पूरा हो जाना नज़दीक ही था कि पारिस में एका एक काल के जाल में पड़कर दुनियां के सब झगड़ों से छुट्टी पाया—इस की लाश बड़ी शान से लन्डन लाई गई और वेस्टमिनिस्टर गिरजे में गाड़ी गई—

सन् १४२१

सन् १४२२

यह सिपाही था और मुलकी मामले खूब समझता था, सिपाही इसको बहुत चाहते थे, इस की आमदनी ५६,०००) पाउन्ड साल थी पर खर्च इस से भी ज्यादः था—हाउस आफ़ कामन्स का सब से बड़ा अख़्तियार यह बढ़ा कि कोई

क़ानून विना उनकी रज़ामन्दी के जारी नहो-
अंगरेज़ी बेड़े की नींव इसी ने डाला क्योंकि
इसने बेओन में एक बहुत बड़ा जहाज़ बनवाया
था—इसकी रानी केथराइन ने एक वेल्स सर-
दार ओवेन ड्यूडर से अपना विवाह करलिया-

## छठवें हेनरी

१४२२—६१

बादशाहत का वारिस एक ६ महीने का
बच्चा था और लोगों ने इस को ताज पहना कर
इस का नाम छठवें हेनरी रक्खा—उधर फ़ान्स
के पागल बादशाह भी मर गये और उनके
लड़के का नाम सातवें चार्ल्स हुआ—बादशाह
हेनरी के चचा ड्यूक बेडफ़र्ड फ़ान्स में वली
होकर रहने लगे और ड्यूक ग्लाउस्टर इंगलेण्ड
में काम करनेलगे मगर बेडफ़र्ड ऐसे शरीफ़
आदमी के रहते भी अब फ़ान्स में अंगरेज़ों को
नुक़सान होने लगा—ग्लाउस्टर ने अपने च

ड्यूफ़ोर्ट से जो कि पादड़ी होने के सेवाय वज़ीर भी था बिगाड़ करलिया और उधर वबेरिया में अपनी शादी कर के हालेन्ड में वहुत सी ज़मीन के हक़दार बन गये—फ़ान्स के ड्यूक वरगन्डी के एक भाई ड्यूक ब्रावन्ट भी उसी रिश्ते से उस ज़मीन के हक़दार बनते थे और वरगन्डी ने उसका साथ देकर इंगलेन्ड से बिगाड़ मान फ़ान्स के बादशाह से सुलह कर लिया—इधर वेडफ़र्ड की मरज़ी के खिलाफ़ यह तै हुआ कि जो फ़ान्स की ज़मीन चार्ल्स के हाथ में है इसपर भी अब धावा करना चाहिये, आरलिअन्स शहर को अंगरेज़ों ने घेर भी लिया और ऐसी वहादुरी देखाया कि फ़ेन्च की हिम्मत हार गई मगर आंख की पलक गिरते ही कुछ और ही देख पड़ा—लोरेन गांव की एक मज़दूरिन जिसका नाम जोन आर्क था और जिसकी अबतक शादी भी नहीं हुई

थी पागल की तरह बकती हुई चार्ल्स के हुज़ूर
में पहुंची और कहा कि हमको खोदा ने आर
लिअन्स बचाने और आप को रीम्स शहर में
पहुँचाने को भेजा है—बादशाह ने निपट
सिपाहियों के खुश करने को उसकी बात
मान लिया और वह कपतान बनकर घोड़े पर
सवार हो फ़ौज के आगे चली, उधर तूफ़ान
से अंगरेज़ी पहरे वालों ने अपनी जगह छोड़
दिया और यह बड़ी आसानी से फाटक पर
पहुँच गई—फ़्रेन्च बड़ी बहादुरी से लड़े और
अंगरेज़ों को हटा दिया, दो ही महीने में
चार्ल्स के सिर पर रीम्स में ताज धरा गया—
इस छोकड़ी ही की तारीफ़ देख कर फ़्रेन्च
सिपाही खुश न थे और एक ने एक दिन
इस को पकड़ कर अंगरेज़ों के हाथ बेच डाला,
इन लोगों ने इसको जादूगर कहकर रोआं
शहर के चौक बाज़ार में जीता जला दिया—

सन
४२६

मगर इस से भी कोई काम न निकला—ड्यूक बेडफ़र्ड के मर जाने से और भी पल्ला नीचा पड़गया, अब तक तो रईसों से लड़ाई होती रही मगर अब सारी फ़्रेन्च रेआया से लड़ना पड़ा, बादशाह हेनरी के सिर पर वेस्टमिनिस्टर और पारिस दोनों जगह ताज धरा गया पर पारिस का मामला तो बिलकुल तमाशा था क्योंकि थोड़े ही दिनों में पारिस अंगरेज़ों के हाथ से निकल गया—उधर हेनरी ने अपनी शादी ड्यूक एनजो की लड़की मारगरेट से करके ऐनजो और मेन सूबे ड्यूक को फेर दिया, धीरे २ फ़्रेन्च फ़ौज ने सारे क़िलों पर क़ब्ज़ा कर लिया और एक केले शहर को छोड़कर जहां अब तक अंगरेज़ी झन्डा फहराता था सारी फ़्रेन्च ज़मीन पर उनकी अमलदारी हो गई और फ़्रान्स पर अंगरेज़ी हुकूमत की बात अब पुरानी कथा होगई—

सन् १४३१

सन् १४४४

उधर ड्यूक बेडफ़र्ड तो मर ही चुके थे अब ६ हफ़्ते के भीतर ड्यूक ग्लाउस्टर और पादड़ी ब्यूफ़ोर्ट भी चल बसे, यह दोनों चचा भतीजे आपुस में अख़्तियार के वास्ते एक दूसरे से बिगड़ जाया करते थे मगर लेंकास्टर ख़ान्दान के बड़े मददगार थे—अब ड्यूक सफ़ाक वज़ीर हुये मगर एनजो और मेन सूबे इन्हीं की सलाह से फेरे जाने का क़सूर लगाकर इनपर मुक़दमा चला और मुल्क से निकाल दिये गये मगर रेआया इन से नाराज़ थी और जहाज़हीने पकड़ कर इनकी गरदन मारी गई—केनारा गया ने यह किया और अब डरकर कि हेनरी कर फ़ि बदला लेगा बिगड़ गये—जेक केड इनके स्क दि बनकर चले और बादशाही फ़ौज को हर डाल लन्डन पहुँचे मगर वहां लूटमार मचाई रो लन्डन वालों से लड़ाई होने लगी और दिय

।स्टर के पादड़ी ने आकर वादशाह की ओर
जो अपने घर चला जाये उसको माफ़ी
या, केड को छोड़कर सब भागे और यह
रा गया–कुछ दिन पीछे हेनरी के लड़का
आ और आप पागल होगया–तब रिचर्ड
यूक यार्क वली हुये मगर हेनरी जलदी ही
गा होगया और यार्क निकाल बाहर हुये पर
ह तो अब हुकूमत का मज़ा ले चुका था और
ड़ने पर कमर कसी–इनकी मां तीसरे एडवर्ड
दूसरे लड़के और बाप छोटे लड़के के खा-
करके थे–इस लड़ाई का घर २ चरचा होता
धीरे सारा मुल्क दो हिस्सों में बांटकर घर
कर नी २ राम कहानी गाता था–यार्क
जहां ा सफ़ेद और लेंकास्टर लाल गुलाब
सारी र लड़ने चले–पहिली लड़ाई सेन्ट
गई स में हुई, वादशाह हारकर क़ैद होगये
अब लदी से सुलह होगई और छोड़ दिये

सन
१४५५

सन १४५९ गये-दूसरी लड़ाई ब्लूर झील में हुई जिस
यार्क ही की जीतरही, फिर नारथेम्पटन में
सन १४६० कर राजा क़ैद हुये और यार्क ने ताज पर
किया मगर पारल्यामेन्ट में यह तै हुआ
हेनरी अपनी ज़िन्दगी भर बादशाह रहै
फिर ताजके वारिस यार्क और उनका ख़ान्दा
हो-रानी इस बात को कब मानती कि उस
लड़का बादशाह न हो, उसने फ़ौज जमा कि
और वेकफील्ड ग्रीन में दुशमनों को बड़ा भ
धक्का दिया. ड्यूक यार्क मारे गये और उन
सिर काग़ज़ के ताज से सजाकर यार्क शहर
फाटक पर धरा गया-उसका लड़का एड
बड़ा बहादुर था, उसने बादशाही फ़ौज
सन १४६१ मारटिमर क्रास में ज़मीन पर बिछा दिया, म
कुछ दिन पीछे रानी मारगरेट ने फिर वारवि
को सेन्ट अलबन्स की दूसरी लड़ाई में दबा
बादशाह को क़ैद से छोड़ाया पर इस से क

वना; लन्डन पहुंचने पर पारलयामेन्ट ने एडवर्ड को वादशाह वना दिया—

लड़ाई बन्द नहीं हुई, उत्तरी हिस्सा अब भी हेनरी का साथ दे रहा था, टाउटन जगह पर फिर हार कर रानी फ़ान्स भागी मगर फिर लेंकास्टर दल सजकर लड़ा और हेजमूर में हारकर हेनरी जंगल को भागा मगर एक साल के पीछे पकड़ा गया और लन्डन के बुर्ज में क़ैद हुआ—

सन् १४६

इधर एडवर्ड ने अपनी शादी उडविल नामी एक नाइट की लड़की से चुप चाप कर लिया और उसके रिश्तेदारों को बड़े ओहदे मिलते देख इसके सब से वड़े मददगार जो बादशाह वनाने वाले कहे जाते थे नाराज़ होगये और विगड़ कर फ़ान्स पहुंचे, वहां रानी मारगरेट से मेल करके अपनी लड़की की शादी क़ैदी हेनरी के लड़के एडवर्ड से कर दिया, तब यह लोग

इंगलेन्ड आये और ६००० आदमियों ने स-
फ़ेद गुलाब अपनी टोपी से निकाल डाला, यह
लन्डन पहुंचे और बादशाह एडवर्ड को भागना
पड़ा, तब हेनरी ने फिर क़ैद से छूट कर ताज
पहिना मगर एडवर्ड को उसके वहनोई ड्यूक
बरगन्डी से मदद मिली और वारनेट जगह पर
लैंकास्टर दल का दिया बुझ गया—वारविक
वग़ैरह लड़ाई में मारे गये, उसी दिन रानी
मारगरेट भी आ पहुंची, ३ हफ़ते पीछे उसकी
फ़ौज का नाश हुआ और क़ैद होकर एडवर्ड के
सामने आई—जहां अपने प्यारे लड़के की लाश
देखकर उसका कलेजा चूर हो गया, फ़ान्स के
बादशाह ने जुरमाना देकर उस को छोड़ाया,
११ बरस तक वह और जीती रही—हेनरी चौथे
एडवर्ड के लन्डन पहुंचने के दिन मारा गया—

हेनरी बदन और दिल का कम ज़ोर था,
बहुत दिन ना बालिग़ रहने से दरबारियों पर

न्
७१

भरोसा करने की उसकी आदत हो गई थी और अक्सर उनके कामों का फल इसको चखना पड़ता था, वह सज़ा देने से माफ़ करना अच्छा समझता और सुलह के वास्ते अपने फ़ायदे को भी छोड़ देता था—इसके ज़माने में इंगलेन्ड में सीसे का काम जारी हुआ--

हाउस आफ़ लार्ड को बादशाह की बात काटने का अख़्तियार था और वहीं से यह तख़्त से उतारा गया, कामन्स को नये क़ानून पर रज़ामन्दी और ख़र्च देने का अख़्तियार था—

## यार्क ख़ान्दान

१४७१—८५

( चौथे एडवर्ड १४७१—८३, पांचवें एडवर्ड १४८३, तीसरे रिचर्ड १४८३—८५ )

### चौथे एडवर्ड

गुलाबी लड़ाइयों से रेआया को कुछ आराम

इंगलेन्ड आये और ६००० आदमियों ने सफ़ेद गुलाब अपनी टोपी से निकाल डाला, यह लन्डन पहुंचे और बादशाह एडवर्ड को भागना पड़ा, तब हेनरी ने फिर क़ैद से छूट कर ताज पहिना मगर एडवर्ड को उसके बहनोई ड्यूक बरगन्डी से मदद मिली और बारनेट जगह पर लेंकास्टर दल का दिया बुझ गया—वारविक वगैरह लड़ाई में मारे गये, उसी दिन रानी मारगरेट भी आ पहुंची, ३ हफ़ते पीछे उसकी फ़ौज का नाश हुआ और क़ैद होकर एडवर्ड के सामने आई—जहां अपने प्यारे लड़के की लाश देखकर उसका कलेजा चूर हो गया, फ़ान्स के बादशाह ने जुरमाना देकर उस को छोड़ाया, ११ बरस तक वह और जीती रही—हेनरी चौथे एडवर्ड के लन्डन पहुंचने के दिन मारा गया—

हेनरी बदन और दिल का कम ज़ोर था, बहुत दिन ना बालिग़ रहने से दरबारियों पर

सन्
१४७१

भरोसा करने की उसकी आदत हो गई थी और
अक्सर उनके कामों का फल इसको चखना
पड़ता था, वह सज़ा देने से माफ़ करना अच्छा
समझता और सुलह के वास्ते अपने फ़ायदे
को भी छोड़ देता था—इसके ज़माने में इंगलेन्ड
में सीसे का काम जारी हुआ—
हाउस आफ़ लार्ड को बादशाह की बात
काटने का अख़्तियार था और वहीं से यह तख़्त
से उतारा गया, कामन्स को नये क़ानून पर
रज़ामन्दी और ख़र्च देने का अख़्तियार था—

## यार्क ख़ान्दान

१४७१—८५

( चौथे एडवर्ड १४७१—८३, पांचवें एडवर्ड
१४८३, तीसरे रिचर्ड १४८३—८५ )

### चौथे एडवर्ड

गुलाबी लड़ाइयों से रेआया को कुछ आराम

ज़रूर मिला क्योंकि बड़े आदमी सब किसी ने लेंकास्टर और किसी ने यार्क ख़ानदान का साथ देकर तितिर बितिर हो गये और उनका ज़ोर बहुत घट गया, पहिले किसी को अपने जान माल का भरोसा नहीं था, कचहरी में जूरी लोग कभी बड़े आदमियों के ख़िलाफ़ नहीं करते थे–

एडवर्ड पागल हेनरी से ज़रूर अच्छा था, इसने देखा कि फ़ान्स से बिना लड़े पारल्यामेन्ट से कुछ मिलने की उम्मैद नहीं है तो इसने लड़ाई ठान दिया और जिन लोगों से बग़ावत का डर था उनको लड़ने भेजने का विचार किया, पारल्यामेन्ट से जितनी मंज़ूरी हुइ उसको काफ़ी न मानकर इसने बड़े आदमियों को बोलाकर उनसे बहुत सा माल नज़र की तरह पर लिया, बहुत दिन बीतने पर उसने चढ़ाई किया मगर दोनों बादशाह से मुलाक़ात होकर सुलह हो गई और वहां के बादशाह इसको दो लाख का

ाल दिया करते थे—एडवर्ड के दो भाई ड्यूक
रेन्स और ग्लाउस्टर थे, ग्लाउस्टर पीछे बाद-
ाह बन बैठे जैसा आगे चलकर मालूम होगा
गर क्लेरेन्स से एडवर्ड नाराज़ हो गये और
ुक़दमा चलाकर उसको बुर्ज में क़ैद कर दिया,
ोड़ेही दिन पीछे वह एक शराब के बड़े पीपे
ं डुबो दिया गया—फ़ान्स से सुलह होने पर
रह भी तै हुआ था कि वहां के शाहज़ादे की
ादी एडवर्ड की लड़की एलिज़ाबेथ से हो
मगर फ़ान्स के बादशाह ने शादी वहीं के
एक बड़े अमीर ड्यूक बरगन्डी के लड़के से
करदिया जिस से एडवर्ड को बड़ी नाराज़ी
हुई और लड़ाई का सामान किया गया मगर
जवानी में बद चलनी से जिसके सबब से बहुत
से भले आदमियों के इज्ज़त पर बट्टा लगा था
यह बीमार होकर मरगया और विन्डसर में इसकी
क़ब्र बनी—इसके दो लड़के और ५ लड़कियां

सन् १४=३

का

थी जिनमें सबसे बड़ी एलिज़ाबेथ की
सातवें हेनरी के साथ होकर गुलाबी
मिटा—छापा खाना इसी के ज़माने में
जिसको भोले भाले लोग खिलौना समझ
देखने आते थे मगर उनको यह कभी
जान पड़ा कि इस ज़हर की पुड़िया का
कभी पारल्यामेन्ट और बादशाह से भी
जायेगा. किताबें धड़ाधड़ छपने लगीं जिस
लोग खूब पढ़ने लगे—

## पांचवें एडवर्ड

## १४८३

एडवर्ड का १२ साल का लड़का अब बाद
शाह हुआ और उसके चचा वली बने—एकदिन
यह लड़का अपने मामा के साथ लन्डन आ रह
था बीच में चचा मिल गये, उन्हों ने उस के माम
लार्ड रिवर्स और उनके एक साथी को तो जेल
भेज दिया मगर राजा को लन्डन लाकर बुर्ज

वन्द करदिया, यह सुन रानी छोटे लड़के रिचर्ड
को लेकर एक गिरजे में भाग गई जहां कोई
पकड़ा नहीं जाता था—ग्लाउस्टर ने एक दिन
पारल्यामेन्ट में यह सवाल किया कि जिसने
हमारे मारने का वन्दोवस्त किया हो उसको
क्या सजा मिलना चाहिये, सब ने मौत बताया
तब झट आपने अपना सूखा हाथ खोल कर
देखाया कि हमारे भाई की रानी ने और कई
आदमियों की मदद से जादू करके हमारा हाथ
सुखा दिया—यह सब जानते थे कि इनका हाथ
ऐसा ही था मगर डर के मारे किसी ने यह न
कहा, फिर क्या था लार्ड हेसटिंग्स पर यही क़-
सूर लगाकर उसी जगह उनका सिर काटा
गया, लार्ड रिवर्स भी उसी दिन दुनियां से
अलग किये गये, और भी दो बड़े आदमी मारे
गये—उधर दूसरे भतीजे रिचर्ड को भी बुर्ज में
बन्द होते ही ड्यूक वकिंघम ने लोगों को सम-

झाया कि बादशाह एडवर्ड की शादी हमारे मुल्क के रसम से नहीं हुई इस से उसके लड़कों का ज़ात पर कोई हक़ नहीं, इधर ग्लाउस्टर ने भी इन्साफ़ करने की क़सम खाया और पार-ल्यामेन्ट ने ताज इनके नज़र किया और यह तीसरे रिचर्ड होकर बादशाह बन गये—

## तीसरे रिचर्ड

१४८३—८५

रिचर्ड ख़ूनी था, इसने छठवें हेनरी और उस के बेटे एडवर्ड को अपने हाथ से मारा था और अपने भाई ड्यूक क्लेरेन्स के मारने में भी ज़रूर शरीक था, जो इसकी बात नहीं मानते उसको यह मक्खी की तरह पीस डालता था—इसने अपने भाई के बहुत से कामों को सुधारा, बहुत से बड़े आदमियों को ख़िताब और ओहदे दिया मगर यार्क शहर में फिर से राज्य तिलक होने के दिन इसने सोचा कि हम से अगर लोग

राज़ होंगे तो दोनों क़ैदी शाहज़ादों की त-
दारी ज़रूर करेंगे इस से उनका रहना अब
ह नहीं और इस काम को एक सरदार सर
प टिरल के हाथ में दिया—उसने अपने दो
दमी भेजे जिन लोगों ने गले में हाथ डाले
हुये लड़कों के गले तकिये से दबाकर उन
मार डाला और लाश टिरल साहेब को
सीढ़ी के नीचे गाड़ दिया—२०० बरस
कारीगरों ने काम करते सीढ़ी को खोदने
ो ठठरी पाया जो इन शाहज़ादों की मानी
इन लोगों के ग़ायब होते ही लोगों ने
ा लिया कि यह रिचर्ड का काम है और
लंकास्टर और यार्क खान्दान का मेल हो
चाहिये—ऊपर लिखा है कि पांचवें हेनरी
ने पर उसकी रानी ने अपनी दूसरी शादी
टयूडर एक वेल्स सरदार से कर लिया था
एक लड़का अर्ल रिचमन्ड हुआ, केथ-

राइन ने अब अपनी तीसरी शादी करे
ली से किया जो अब रिचमन्ड की शा
एडवर्ड की बड़ी लड़की एलिज़ावेथ से
चाहते थे—उधर रिचर्ड बादशाह के यार
भी रिचमन्ड की तरफ़दारी करते थे, इन
बातों से उसका जी डरा और उसने
की शादी अपने लड़के से करना चाहा
लड़का जब मर गया तो आप ने अपनी
को ज़हर दिया और खुद एलिज़ावेथ से अ
शादी की फ़िकिर करने लगे-इसी सोच
चार में पड़े थे कि रिचमन्ड के आने की
मिली, आप फ़ौज लेकर लड़ने चले, वा
जगह पर बड़ी गहरी लड़ाई हुई, रि
लेंकास्टरी झन्डा अपने हाथ से काट
और वार कर ही रहा था कि खुद
लड़ाई में भी ताज उस के सिर पर
को एक झाड़ी के पास से उठाक

नन
१४=५

ली ने रिचमन्ड के सिरपर रख दिया—
लन्डन में प्लेग होने से कुछ दिन पीछे
मन्ड वहां आया और पारल्यामेन्ट ने उसको
दार और जीतने वाला मान कर सातवें
री के नाम से वादशाह वनाया—उसने थोड़े
दिनों में चौथे एडवर्ड की लड़की एलिज़ा-
से शादी कर लिया और अब गुलाबी
गड़ा दूर हुआ—

## ट्यूडर ख़ान्दान

### १४८५–१६०३

( सातवें हेनरी १४८५–१५०६, आठवें
१५०६–१५४७, छठवें एडवर्ड १५४७-
३, मेरी १५५३–१५५८, एलिज़ाबेथ
८–१६०३ ).

---

# सातवें हेनरी

१४८५–१५०६

सच कहिये तो इंगलेन्ड का पहिला
शाह सातवें हेनरी को मानना चाहिये
इसी के ज़माने से अंगरेज़ों का ठीक ठीक
मालूम होता है–यह बड़ा इन्साफ़ पसन्द
दमी था, कभी २ लालच से यह बुरे काम
कर डालता मगर बड़े आदमियों को दबाता
इससे रेआया ने कभी सिर नहीं उठाया,
आदमियों को वरदी पहिने हुये सिपाही
तोप रखने का हुकुम नहीं था–एक बार
आक्सफ़र्ड ने जो गुलाबी लड़ाई में इसके त
थे इसकी दावत किया, चलने पर दोनों
वरदी पहिने हुये सिपाही उसके सलाम क
को खड़े थे–उसने अर्ल से कहा कि हम
की दावत से बड़े खुश हुये मगर हमारा

आप से कुछ कहैगा, सिकत्तर ने अर्ल से कहा कि बादशाह क़ानून के ख़िलाफ़ कोई बात अपने आंख से नहीं देख सकते और उस पर १०००० पाउन्ड जुरमाना कर दिया—ऊपर लिखा है कि हाकिम लोग बड़े आदमियों को सज़ा नहीं दे सकते थे इसवास्ते हेनरी ने एक नई कचहरी तारा भवन बनाया जहां एक जज बैठ कर दीवानी फ़ौजदारी के मुक़दमों का फ़ैसला करता था और अमीर लोग मामूली मुजरिम की तरह यहां सज़ा पाते थे-अमीरों को अपनी ज़मीन बेचने का अख़्तियार मिला जिस से मामूली लोगों ने जो रोज़गार कर के मालदार हो गये थे इन लोगों की ज़मीन ख़रीद लिया, यह लोग लड़ाइयों से करज़दार हो गये थे,ज़मीन बेचकर अब इन का ज़ोर खूब घट गया- यह सब करने पर भी वह आराम से नहीं रहने पाता था, सब लोग जानते थे कि अर्ल वारविक

बुर्ज में क़ैद है मगर एक पादड़ी सिमन ने एक दूकान दार के लड़के सिमनल को वारविक बनाकर बग़ावत करदिया और छठवें एडवर्ड कह कर उसको बादशाह बना लिया—बादशाह हेनरी ने अर्ल को निकाल कर लोगों को देखाया तिस पर भी आयरलेन्ड के अमीर और इंगलेन्ड के भी कुछ बड़े लोग उसके तरफ़ हो गये, स्टोक जगह पर लड़ाई हुई जिस में सब बाग़ी सरदार मारे गये, सिमन पादड़ी जेलखाने चले मगर सिमनल को हेनरी ने माफ़ी देकर अपने बावरची खाने में रख लिया—

सन् १८८७

हेनरी बाहरी झगड़ों में नहीं पड़ना चाहता था मगर फ़ान्स के बड़े अमीर ड्यूक ब्रिटानी के मरने पर उसकी १२ साल की लड़की वारिस थी और वहां के बादशाह उस जागीर पर हाथ मारना चाहते थे, हेनरी जो पहिले ब्रिटानी में रहचुका था यह कब देख सकता था, उसने उस

लड़की के बचाने को अपनी फ़ौज भेज दिया और उससे यह क़रार करके कि वह अपनी शादी इनकी सलाह से करै दो क़िलों पर ज़मानत की तरह अपना कब्ज़ा कर लिया—लड़की ने इटाली के बादशाह से अपनी शादी ठहराया मगर फ़्रेन्च शाह ने ज़बरदस्ती उससे अपनी शादी कर लिया, हेनरी ने लड़ाई ठान दिया मगर ख़र्च मिलने में बड़ी मुशकिल पड़ी, कहीं २ लोगों ने सिर भी उठाया मगर इसने सबको दबा कर फ़ान्स पर चढ़ाई कर दिया और बोलोन क़िले को घेर लिया—वहां के बादशाह ने इसको लालची जाना और कुछ देकर सुलह कर लिया, इस से अंगरेज़ बहुत बिगड़े क्योंकि ख़र्च के वास्ते बहुत लोगों ने अपनी जायदाद रेहन कर दिया था और लूटने की उम्मैद जाती रही—इन्हीं दिनों आयरलेन्ड में एक नई आफ़त देख पड़ी, बेलजिअम मुल्क के एक देहाती जिसका नाम

स
१४

वारवेक था अपने को ड्यूक यार्क कहने लगा, यह लड़का और इसका बड़ा भाई दोनों रिचर्ड के हुकुम से जैसा ऊपर लिखा है बुर्ज में मारे गये थे—यार्क ख़ान्दान के मददगारों ने इंगलेन्ड में इसको सहारा दिया, उधर वरगन्डी की डचेज़ ने भी मदद देने कहा मगर सर रावर्ट क्लिफ़र्ड के अलग हो जाने से जो डचेज़ की ओर से वरगन्डी में रहते थे इंगलेन्ड के वागी अमीरों की गरदन मारी गई—आयरलेन्ड में सदा वखेड़ा देख पारल्यामेन्ट में यह तै हुआ कि वहां की पारल्यामेन्ट कोई बात विना इंगलेन्ड के वादशाह के हुकुम के न करै और यहां के सव कानून वहां भी जारी हों, इससे विचारे वारवेक को अव वहां अंधेरा देख पड़ा मगर स्काटलेन्ड के वादशाह ने उसकी पूरी मदद किया, उस की शादी एक अर्ल की लड़की से करा दिया और खुद इंगलेन्ड के उत्तरी हिस्से में

आकर लूट मार करने लगे—उधर कार्नवाल में
बखेड़ा मच गया मगर सरदार सब पकड़े गये
और उनकी गरदन मारी गई, वारबेक ने अभी
वहां बग़ावत की आग कुछ बाक़ी देख अपने
को बादशाह चौथे रिचर्ड कह कर अपना झन्डा
खड़ा कर दिया और ६००० आदमी लेकर ए-
गज़ीटर शहर को घेर लिया मगर रेआया की
बहादुरी से उसको हटना पड़ा और टान्टन जगह
पर अपनी फ़ौज छोड़ कर रात को भागा—लोगों
ने उसको सलाह दिया कि बादशाह से माफ़ी
मांगे, इस ने हाज़िर होकर अपना भेद खोल
दिया और बुर्ज में क़ैद हुआ, वहां इस ने क़ैदी
अर्ल वारविक से सलाह कर के भागना चाहा
मगर दोनों पकड़े गये और जान से हाथ धोया,
इसकी जोरू बड़ी सुन्दर थी जिसको हेनरी
ने अपनी रानी की एक सहेली बना लिया,
यहां इसको लोग सफ़ेद गुलाब कहते थे—

अब बादशाह को कुछ अमन देख पड़ा और उसने सब झगड़े दूर कर के स्काटलेन्ड के बादशाह चौथे जेम्स के साथ अपनी लड़की मारगरेट की शादी कर दिया जिस से १०० बरस पीछे दोनों मुल्कों का एक बादशाह हुआ–

उन दिनों यूरप में फ़ान्स और इसपेन बड़ी बादशाहत मानी जाती थीं. हेनरी ने इसपेन की शाहज़ादी से अपने बड़े लड़के की शादी कर दिया मगर उसके जलदी मर जाने से वह लड़की छोटे लड़के की जोरू हो गई–इनकी रानी भी मर गई और अब आप भी शादी के फेर में पड़े मगर गठिया और दमा के रोग से अब आप बे काम हुये और दुनियां को छोड़ सीधी राह लिया–इस ने एक जहाज़ अपने नाम का १४००० पाउन्ड के खर्च से बनवाया और इसी के ज़माने में अमेरिका का पता

लगा, इस काम की बहादुरी अंगरेज़ों ही की समझना चाहिये क्योंकि इसी हेनरी के भेजे हुये केबट नामी मल्लाह ने लेबरेडर पहुंचकर फ़्लोरिडा का भी हाल मालूम किया था—इसी के ज़माने में पोरचुगल मुल्क वाले हिन्दोस्तान आये थे—

## आठवें हेनरी

### १५०६—१५४७

यह १८ साल का लड़का ख़ूब सूरत और ख़ुश मिज़ाज, पढ़ा लिखा और तलवार, भाला, तीर की कसरत में पक्का था, इसको यार्क और लेंकास्टर के किसी ख़ान्दान का डर तो था ही नहीं, बाप का माल दिल खोलकर उड़ाने लगा, नाच, रंग, खेल, कूद से छुट्टी पाता तो गाने के फेर में पड़ जाता, सब से पहिले इसने दो अमीरों का जो इसके बाप के सलाह कार थे सिर काटा फिर पोप का अख़्तियार सारे इंग-

लेन्ड से उठा दिया—कभी फ़ान्स और कभी इस-
पेन से लड़ाई होती रही, केथालिक मत जिस
को अब तक सब मानते थे उड़ने और प्राटेसटेन्ट
मत जारी होने लगा पर दोनों ही के मानने-
वाले जीते जलाये जाते थे—इसने ६ शादी
किया जिस में से दो को छोड़ दिया, दो की
जान लिया और दो अपनी मौत से मरीं—

अपने बड़े भाई की जोरू केथराइन अरेगन
से शादी करके पादड़ी वलसी को वज़ीर बना-
या, यह वलसी बहुत चतुर और पढ़ा लिखा
आदमी था, १८ साल की उमर में इसने आक्स-
फ़र्ड का बी–ए पास कर लिया था—वज़ीर होते
ही पोप जी ने इसको केन्टरबरी का बड़ा पादड़ी
बना दिया, अब तो इनका ठाट बाट हेनरी से
भी बढ़ चला—इंगलेन्ड के अमीर नौकर की
तरह जब यह खाने बैठता तो रूमाल लेकर
पीछे खड़े रहते थे—

फ़ान्स के बादशाह अब इटाली पर हाथ साफ़ किया चाहते थे मगर पोप, इसपेन के बादशाह और हेनरी ने मिलकर लड़ाई ठान दिया, अंगरेज़ी फ़ौज बिना लड़े लौटी मगर फ़ेन्च ने अपना मुल्क बचाने को इटाली छोड़ दिया—फिर पारल्यामेन्ट से ख़र्च मंजूर कराके हेनरी ने फ़ान्स पर चढ़ाई किया, उधर से शाह इसपेन भी आ मिले मगर एक छोटी लड़ाई जीत कर आप लौट आये—यहां फ़ान्स से दोस्ती होने से स्काटलेन्ड के बादशाह चौथे जेम्स ने इंगलेन्ड पर धावा किया मगर लार्ड सरे की बहादुरी से बहुत सरदारों के साथ मारे गये—अब छापा ख़ाना जारी होने से बहुत लोग पढ़ने लगे, बादशाह ने बहुत से छोटे बड़े इस्कूल जारी किये, रैआया पढ़ कर अब बादशाही कामों पर निगाह डालने लगी—उधर फ़ान्स और इसपेन के पुराने बादशाह मरे और नये लोग

सन १५१३

हेनरी से दोस्ती करना चाहते थे, इसपेन की वादशाहत उन दिनों वहुत वड़ी थी, आस्ट्रिया नेपुल्स, हालेन्ड पर इन्हीं की हुकूमत थी; फ़ान्स की लालसा इटाली अपना कर लेने की थी, इंगलेन्ड को समुन्दर से घेरा रहने से किसी का डर नहीं था—हेनरी को फ़ान्स के वादशाह ने वोलाया मगर वीच में इसपेन के चार्लस इंगलेन्ड पहुंच गये और इनको विदाकर हेनरी फ़ान्स पहुंचा जहां वड़े शान से दो वादशाहों की मुलाक़ात हुई, वहां से लौटते फिर चार्लस से मिलकर जो कुछ फ़ान्स से दोस्ती हुई थी उस को मेट दिया—

सन ५२०

जर्मनी के उत्तर में एक पादड़ी मारटिन ल्यूथर ने सन् १५१७ में वहुत आदमियों के सामने यह कहा कि सच्चा मजहव यह है कि ईसा मसीह को पैग़म्वर मान कर वाइविल सव कोई पढ़े और पोप के परवाने या हुकुम नामे

उसने आग में डाल दिया, यह बात इंगलेन्ड पहुंचते ही लोग जान विकलिफ़ को याद करने लगे मगर बादशाह पक्का केथालिक था, उसने एक किताब लेटन में लिख कर पुराने ही मज़हब की तारीफ़ किया और इस से खुश होकर पोपजी ने इनको दीन के बचाने वाले का खिताब दिया जो आज तक इंगलेन्ड के बादशाहों का है—

सन १५२१

फ़ान्स और इसपेन की फिर लड़ाई छिड़ी, हेनरी ने इसपेन की मदद किया मगर रसद घट जाने से लौटना पड़ा—बादशाह ने लाचार हो कर ७ बरस पीछे पारल्यामेन्ट खोला और वज़ीर पादड़ी वलसी ने ८००००० पाउन्ड खर्च के वास्ते मांगा मगर ४०००००, की मंजरी होने से आप बड़े नाराज़ हुये और नज़राना लेने लगे—

सन १५२३

उधर फ़ान्स के बादशाह एक साल पीछे

सन १५२५

वरगन्डी सूबा देने पर इसपेन की क़ैद से
छूटे पर अंगरेज़ों को न एक बिस्वा ज़मीन ही
मिली न एक कौड़ी हाथ लगी—इसपेन ने
इटाली को दबा कर पोप जी को क़ैद कर दिया
हेनरी अब बहुत ही खिसियाये और पोप के
छोड़ाने को फ़ान्स से मेल कर के इसपेन से
बिगाड़ कर दिया—

थोड़े ही दिन पीछे पोप और हेनरी से गाढ़ा
बिगाड़ हो गया जिस से पादड़ी वलसी को जो
पोप होना चाहते थे जान खोना पड़ा—रानी के
थराइन से हेनरी का दिल फिरा और उसकी एक
खूब सूरत सहेली एन बोलीन से जा लगा, इसने
उसको छोड़ना चाहा, उसने पोप के यहां अपील
किया—पोप जीने एक जज भेजा जिसने वलसी
के साथ बैठकर कुल हाल सुना मगर हुकुम नहीं
सुनाया और पोप जी ने इस मामले को रोम में
सन १५२९ उठा लिया—उसी दिन वलसी निकाले गये

और उनके पुराने घर में रहने का हुकुम हुआ, मगर पारल्यामेन्ट ने बग़ावत का क़सूर लगा कर उसको बोलाया, राह में पेचिश के रोग में वह मर गया और मरते समय कहा कि जितनी ख़िदमत हमने बादशाह की किया इतनी अगर ख़ोदा की करते तो आज बुढ़ापे में हमारी यह हालत न होती—अब सर टामस मोर वज़ीर हुये, पादड़ी क्रेनमर ने उस मामले में बादशाह की तरफ़दारी किया था इस से यह केन्टरबरी के बड़े पादड़ी हो गये, दूसरे सलाह कार क्रामवेल होगये जिसने कहा कि इंगलेन्ड के दीन के मालिक भी बादशाह को होना चाहिये—हेनरी ने केथराइन को छोड़ दिया, वह २ साल के पीछे एक लड़की छोड़कर मरी जो रानी मेरी हुई—अब एन से शादी हुई और क्रामवेल को हुकुम हुआ कि मन्दिरों में पाप बहुत होता है इस से जिनकी आमदनी २०० पाउन्ड से कम

सन १५३

सन् १५३

सन् १५३६ हो वन्द कर दिये जायें, इससे वादशाह की आमदनी १६१००० पाउन्ड साल वढ़ गई- उधर वेलस में भी अंगरेज़ी क़ानून जारी हो गये और सव सरदारों के अख़्तियार घटा कर २४ मेम्वर पारल्यामेन्ट में आने लगे-वादशाह का दिल अव एक दूसरी ख़ूव सूरत औरत जेन सीमर से लगा और एन पर वदचाल होने का क़सूर लगा. उसका सिर काटा गया-उसकी लड़की एलिजावेथ रानी हुई-वाइविल की अव ख़ूव विक्री होने लगी-

मन्दिरों के वन्द हो जाने से लोग क्रामवेल से नाराज़ हो गये और ४०००० आदमी ने लार्ड डारसी को सरदार वनाकर केथालिक दीन क़ायम रखने पर कमर कसा; यार्क और हल शहर कुछ दिन इनके हाथ रहे मगर जाड़े में पानी ख़ूव वरसा इससे सव भाग गये, फिर तो लार्ड डारसी और वहुत लोगों के सिर काटे गये-

लेडी सालिसवरी के लड़के पादड़ी पोल ने जो
रोम में रहता था कुछ हेनरी के ख़िलाफ़ लिखा
पर वह तो क्रामवेल के पंजे से दूर रहा उसके
भाई और माँ को जान खोना पड़ा—रानी जेन
सीमर के लड़का होते ही वह मर गई—हेनरी
ने एक नई वाइबिल अंगरेज़ी में छपवाकर सब
को पढ़ने का हुकुम दिया, उसका दीन दोनों
से अलग था, इस से वहुत लोगों को जान से
हाथ धोना पड़ा, क्रामवेल ने एक प्राटेस्टेन्ट
शाहज़ादी एन क्लीव्ज़ से उनकी शादी कराना
चाहा जिसकी तसवीर देख कर बहुत खुश
हुये मगर जब उसको देखा तो घोड़ी कहा—
शादी तो होगई पर थोड़े ही दिनों में उसको
३००० पाउन्ड साल का गुज़ारा देकर छोड़
दिया और ड्यूक सफ़ाक की भतीजी केथराइन
हेवर्ड से शादी करके क्रामवेल पर बग़ावत का
क़सूर लगाकर सिर काटा गया, थोड़े ही दिनों

सन् १५३७

सन् १५४०

में उसको भी बद चाल साबित कर के
का सिर कटवाया गया—आखिरी शा
लार्ड लेटिमर की वेवा औरत केथराइन पार
हुई, यह बड़ी चतुर थी और हेनरी को नाग
भी कर के जीती रही—

ऊपर लिखा है कि स्काटलेन्ड के बादशा
लड़ाई में मारे गये थे, उनके एक लड़की मे
थी जिसकी शादी हेनरी अपने लड़के से कर
चाहते थे—वहां के बहुत अमीरों ने इसको मं
भी कर लिया मगर कुछ सरदार उसको फ़ान
भेजना चाहते थे, इस से लड़ाई छेड़ गई औ
अंगरेज़ी फ़ौज ने एडिनबरा शहर और बहुत
मन्दिरों को जला दिया—फ़ान्स ने स्काटले
की मदद किया इस से अंगरेज़ों ने बोलो
शहर भी ले लिया—

सन १५४४

हेनरी ने बहुत लोगों को जो दीन के माम
में उसकी बात नहीं मानते थे मौत की स

दिया, सबसे आखिर क़सूरवार अर्ल सरे था जिसने अंगरेज़ी कविता को सुधारा और सादी कविता का पहिला लिखने वाला था—इसके बाप ड्यूक नारफ़ाक भी क़ैद थे मगर बादशाह के मरजाने से बचगये तिसपर भी सन् १५५० तक क़ैद रहे—

लोगों को मालूम हो गया कि हेनरी अब मरता है मगर किसी की हिम्मत नहीं थी कि उस से यह कहै, आखिर सर एन्टोनी डेनी ने बादशाह से कहा कि अब आप जलदी दुनियां को छोड़ा चाहते हैं, यह सुन कर उसने पादड़ी क्रेनमर से मिलना चाहा मगर उसके आते २ बोलना बन्द होगया और अपनी राह लिया— सन् १५४७

## छठवें एडवर्ड

१५४७–५३

हेनरी का २० साल का लड़का एडवर्ड

ोग खेती छोड़ भेड़ पालने लगे, अनाज
हँगा हो गया और मज़दूरों को काम नहीं
मेलता था; नारफ़ाक के लोगों ने एक चमार
ज़मीन्दार को जिसका नाम केट था अगुआ
नाकर बग़ावत कर दिया जिसको अर्ल वार-
विक ने दबाया और केट का सिर काटा गया—

अब वारविक ड्यूक नारथंबरलेन्ड का ख़ि- सन् १५५१
ताब पाकर वली बनाये गये, इन्हों ने बिचारा
के बादशाहत हमारे ख़ान्दान में आ जाये
क्योंकि यह अपना ही फ़ायदा देखते थे—यह
ौर इनके यार लोग देश लूटते थे, बादशाह
पार रहा करताथा—आप ने उस को समझाया
मेरी और एलिज़ाबेथ की मां की शादी क़ा-
ी न होने से वै लोग ताज नहीं पा सकतीं.
आप लेडी जेन ग्रे को वारिस बनावैं
कि वह ट्यूडर ख़ान्दान की थी और प्राटे-
सटेन्ट भी थी—उसने इस बात को मान लिए

सन् १५६८ लोग उसको रानी न मान लें इस से वह [illegible] कर दी गई मगर उसका क़ैदी होकर भी [illegible] में रहना ठीक नहीं था—वह बड़ी ख़ूब सूरत [illegible] चालाक थी, अर्ल नारफ़ाक ने उस से [illegible] करना चाहा जिस से एलिज़ाबेथ बड़ी [illegible] हुई मगर अर्ल को माफ़ कर दिया—उधर उत्त[illegible] हिस्से में केथालिक लोगों ने बग़ावत कर दि[illegible] जिस को अर्ल ससेक्स ने दबाया और हज़ार[illegible] को सज़ा मिली—नारफ़ाक ने फिर सिर उठाय[illegible] और इसपेन के बादशाह से चुप चाप लिखा [illegible] करने लगे, उनके एक नौकर ने एक चिट्ठी लाकर वज़ीर लार्ड बरली के नज़र किया जिस से उन पर बग़ावत का क़सूर लगा कर सि[illegible] काटा गया—पारल्यामेन्ट से यह हुकुम निकला सन् १५७० कि जो रानी को बे दीन कहैगा और जिस के पास पोप का परवाना आवेगा वह बाग़ी माना जायेगा—

देश की हालत अब बहुत सुधर चली थी; सारे यूरप से यहां की रैश्राया को आज़ादी थी; रोज़गार बढ़ने से लोग मालदार हो गये थे और बड़े आदमी रेशम और मख़मल पहिनते थे—सूती और ऊनी कपड़ा बनता था, सब की खिड़कियों में शीशा लगने लगा—सातवें हेनरी के ज़माने में एक बार अर्ल नारथंबरलेन्ड अपना घर छोड़ कुछ दिन को बाहर गये थे तो शीशे निकाल कर अपने साथ ले गये थे—बाइबिल के छप जाने से लोग लेटिन और ग्रीक पढ़ने लगे, गिरजों में बूढ़े और बीमारों की मदद को चन्दा होता था, छठें एडवर्ड ने कई अस्पताल खोले थे अब और भी बढ़ गये—जो लोग काम करना चाहते थे और काम नहीं पाते थे उनको काम मिलता था, कोई पेट भरने के वास्ते क़सूर नहीं कर सकता था—

इसपेन के मातहत देशों में प्राटेसटेन्ट लोगों

को बड़ी तकलीफ़ दीजाती थी· जिस जगह को इसपेनी जीतते वहां की रैआया को मार डालते थे—अमेरिका के सोना चांदी की खान से बराबर इसपेन मालदार होता था, इन सब बातों से लोग इंगलेन्ड में इसपेन के नाम से चिढ़ते थे—यूरप में लड़ाई हो चाहे न हो मगर अमेरिका में ज़रूर होगी, यह कह कर अंगरेज़ी मल्लाह अमेरिका जाते और इसपेनी जहाज़ों को लूट लाते, पकड़े जाते तो सज़ा पाते थे—इन्हीं दिनों कपतान ड्रेक १३४ आदमियों को ५ छोटे जहाज़ों पर लेकर अमेरिका चले, मेमलेन खाड़ी के पास एक इसी का जहाज़ आगे बढ़कर वालपरेसो पहुँचा और एक जहाज़ से ५ मन सोना लूट कर चल दिये, टारापाका पहुँचकर चांदी मन मानी पाया उसको भी अपने जहाज़ पर लाद केलीफ़ोर-निया पहुँचे और पेसेफ़िक महासागर या बहर में होते हुये केप आफ़ गुड होप का चक्कर लगा

सन् १५७७

इंगलेन्ड पहुँचे—यह पहिला अंगरेज़ था जिसने दुनिया के चारों ओर सफ़र किया, रानी एलिज़ाबेथ ने इसको नाइट का ख़िताब दिया और यह सर फ़्रान्सिस ड्रेक होगये—

अब अंगरेज़ भी दुनिया भर अपने जहाज़ों में घूमने लगे—सातवें हेनरी के ज़माने में लेबरेडर का पता लगा, आठवें हेनरी के ज़माने में न्युफ़ाउन्डलेन्ड तक अंगरेज़ पहुँचे—रानी मेरी के ज़माने में नारवे के उत्तर से चीन और हिन्दोस्तान आने को जहाज़ चले मगर बरफ़ में जम गये और सब लोग मर गये, दो जहाज़ बच कर आरचेंगेल पहुँचे और रूस से कार बार होने लगा—अब पच्छिम उत्तर की राह से इन मालदार मुल्कों में पहुँचने का विचार होने लगा—फ़्राविशर हडसन खाड़ी के मुहाने तक पहुँचा और जाना कि राह मिलगई मगर सोने की खान पाकर आगे न बढ़ा—डेविस बेफ़िन खाड़ी तक

पहुँचा, सर वालटर रेली ने अमेरिका के एक किनारे को बसाकर वरजिनिआ उसका नाम रक्खा और वहां से आलू और तमाखू लाये- दूसरी वार कपतान ड्रेक ने फिर अमेरिका पहुंच कर सेन्ट डोमिंगो शहर पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया और मन माना माल लेकर करटेगना पहुँचा वहां से ३००,०० पाउन्ड वसूल करके लौट आया-

दीन के झगड़े इन दिनों सव देशों में थे, इंगलेन्ड में केथालिक सज़ा पाते तो और जगह प्राटेसटेन्ट सताये जाते थे, फ़ान्स और फ़्लान्डर्स से वहुत लोग भाग कर यहां वसे जो रेशमी और ऊनी कपड़ा वनाते थे और यहां अव दोनों काम खूब होने लगे-केथालिक लोगों ने वहुत तक लीफ़ उठाने पर एलिज़ावेथ को मार कर मेरी को रानी वनाना विचारा, एक अमीर जिनका नाम आगमारटन था पकड़े गये और उन का सिर

काटा गया: तब पारल्यामेन्ट ने यह हुक्म जारी
किया कि जिसके फ़ायदे के वास्ते एलिज़ाबेथ
मारी जायेगी वह भी मारा जायेगा—इन सब व-
न्दिशों से बहुत लोग पोप के खिलाफ़ होगये—
इधर हालेन्ड में प्रोटेसटेन्ट लोग इसपेन के बाद-
शाह फ़िलिप से लड़रहे थे, उनका सरदार वि-
लिअम आरेंज मारा गया तब एलिज़ाबेथ ने सन् १५८४
अर्ल लीस्टर को जिस को वह बहुत चाहती थी
उनकी मदद को भेजा—इन का भतीजा सर
फ़िलिप सिड्नी भी गया, यह कवि और पूरा
सिपाही था मगर लड़ाई में मारा गया—जब यह
घायल होकर पड़ा था तो इसको पानी दिया
गया मगर इसने एक मामूली घायल को अ-
पनी और ताकते देख पानी उसको दे दिया
और कहा कि तुमको हम से ज़्यादे ज़रूरत है—
इधर फिर इसपेन की मदद से मेरी को रानी
बनाने की चाल चली गई और डरबीशायर के

रहने वाले एक बेविंगटन नामी आदमी इस के सरदार थे, भेद खुल जाने से १४ आदमियों का सिर काटा गया और मेरी पर भी क़सूर लगाकर ३६ आदमियों ने बैठकर उसका इज़हार लिया मगर उसने यह जवाब दिया कि हम से इन झगड़ों से कुछ मतलब नहीं; अपनी आज़ादी का विचार ज़रूर रहता है—उसके दो सेक्रेटरी पकड़े गये जिन्हों ने साफ़ कह दिया कि हमने उसके हुकुम से चिट्ठियों के जवाब लिखा है; तब मेरी के सिर काटने का हुकुम हुआ—एलिज़ाबेथ ने बहुत दिन तक इस बात को रोका और इस बीच में फ़ान्स के बादशाह और उसके लड़के स्काटलेन्ड के छठवें जेम्स ने उस के छोड़ाने की बड़ी कोशिश किया मगर कुछ फ़ायदा न हुआ और नारथेम्पटनशायर के फ़ादरिंगे गढ़ में ४५ बरस की उमर में उस का सिर काटा गया—

इसपेन के बादशाह फ़िलिप ने एलिज़ाबेथ से अपनी शादी करना चाहा मगर कोरा जवाब पाने से बड़े खिसियाये और प्राटेसटेन्ट दीन की जड़ खोदने का विचार करके एक बड़ा बेड़ा साजा जिस में १३२ जहाज़ थे और उन पर ,,== २६३० तोप थीं-उधर इनका एक जनरल ड्यूक पारमा ४०००० सिपाही लेकर फ़लान्डर्स से धावा करने का विचार कर रहा था—२६ मई को यह अजीत बेड़ा जिस का नाम आरमेड़ा था लिस-वन से चला, इंगलेन्ड में बड़ी हलचल मच गई, सरकारी बेड़े में सब मिलाकर ३६ जहाज़ थे मगर सेठ, साहूकार, दुकान्दार और ज़मीन्दार सब ने मिलकर बहुत से जहाज़ जमा किये और अं-गरेज़ी बेड़ा दुशमन से मिलने को सजाया गया जिसमें १५१ जहाज़ थे और १३०००० सिपाही सजकर खड़े हुये—अब केथालिक और प्राटेसटेन्ट पुरानी बात भूल कर सब एक हो गये, अंगरेज़ी

जहाज़ बहुत छोटे थे मगर उसमें बड़े बहादुर लोग थे-ड्रेक, फ्राबिशर और हाकिन्स बड़े बहादुर कपतान थे-लार्ड हावर्ड एक केथालिक एडमिरल बेड़े के अफ़सर थे—टिलबरी मैदान में रानी ने फ़ौज को देखकर कहा—"प्यारे रेआया आज तुम लोग कट्टर दुशमन से लड़ने जाते हो मगर इस बात को मान लो कि जिस ख़ोदा ने हम लोगों को उभाड़ा है वही हमारी मदद करेगा। आज हमारे और तुम्हारे घर के बचने का मामला तुम्हारे हाथ में है, हम अपनी देह अपनी रेआया अपने देश और उसकी इज्ज़त के वास्ते मिट्टी में मिला देंगी; हम एक कमज़ोर औरत हैं मगर दिल हमारा बादशाह का है और आज तुम लोगों को इस तरह अपने सामने खड़ा देख कर हम को पूरी उम्मेद है कि ड्यूक पारमा, इसपेन के बादशाह फ़िलिप या यूरप के किसी राजा को हमारे देश पर चढ़ने की हिम्मत न पड़ेगी—"

रानी की बात से सिपाही और भी उमगे, अब अजीत आरमेड़ा देख पड़ा और ऊंची पहाड़ी पर आग जला कर सारे देश में दुशमन के पहुंचने की खबर दीगई—

अंगरेज़ी एड्मिरल ने देखा कि आधे चन्द्रमा की तरह दुशमन आ रहा है, आगे बढ़कर गोले से उनकी सलामी किया—उधर से भी दुशमनों ने खूब गोले बरसाया मगर इनके जहाज़ बहुत ऊंचे होने से गोले ऊपर से निकल जाते थे—अब बेड़ा अंगरेज़ी चेनल (नहर) की ओर चला और केले बन्दर में रात को लंगड़ डाला, इधर अंगरेज़ों ने ८ जहाज़ों में लकड़ी, कपड़ा और तेल भर कर वहांतक पहुंचाया और उनमें आग लगा कर छोटी नावों पर चढ़ कर भाग गये, आग को देख इसपेनी डरे और लंगड़ का रस्सा काट कर भागे, अंगरेज़ों ने पीछा करके १२ जहाज़ बोर दिया—इधर अंगरेज़ी

जहाज़ थे इससे इसपेनी स्काटलेन्ड की ओर भागे मगर तूफ़ान आया और इनके जहाज़ चट्टानी किनारे से टकरा कर फट गये, जो लोग किनारे तक पहुंचे उन को जंगली जानवर खा गये या लोगों ने मार डाला, बहुत से समुन्दर में डूबे—एक अंगरेज़ ने ५ मील के मैदान में ११०० लाश देखा था- आखिर ५४ टूटे फूटे जहाज़ बीमार और घायल को लेकर इसपेन पहुंचे, फ़िलिप ने कहा कि हमने तुम लोगों को हवा से लड़ने नहीं भेजा- ड्यूक पारमा डच जहाज़ों के डर से बाहर न निकल सके और अपने नारंगी के बाग़ में बैठे ही रहे—आरमेड़ा तो मट्टी में मिल गया मगर लड़ाई इसपेन से होती रही, अंगरेज़ी जहाज़ अमेरिका जाते और वहां इसपेन की अमल- दारी में मन माना लूटते थे, ड्रेक भी एक ऐसे ही सफ़र में मरा, सब से बहादुरी सर रिचर्ड ग्रेन-

वाइल ने किया जो एक जहाज़ लेकर जिसमें १०० आदमी थे ५३ इसपेनी जहाज़ों से रात भर लड़ा और सवेरे जब इसपेनी इस के जहाज़ पर कूद पड़े तो यह घायल पड़ा था—वे लोग इस को अपने जहाज़ पर ले गये, वहां यह कहकर मरा कि आज हम सिपाही की तरह अपना देश, अपनी रानी और दीन के वास्ते मरते हैं—

पहिले रानी अर्ल लीसटर को बहुत चाहती थी जो यह समझते थे कि हम से अपनी शादी किया चाहती है, फिर बीच में अर्ल इसेक्स पर मेहरबानी करने लगी, यह बड़ा बहादुर और तेज़ आदमी था जिसको लड़ाई बहुत पसन्द थी—केडिज़ पर अंगरेज़ों ने धावा किया जिसके बचाने को ८० इसपेनी जहाज़ खड़े थे, सब अंगरेज़ी कपतान अपना ही जहाज़ आगे बढ़ाना चाहते थे इससे दुशमन डरे कि बहुत बड़ा बेड़ा आया और भाग गये, अंगरेज़ों ने शहर को लूट कर

सन् १५९६

जला दिया—इससे इसेक्स का बड़ा नाम हुआ और बिचारे बहादुर हवर्ड का किसी ने नाम भी न लिया—इन्हीं दिनों रानी के वज़ीर लार्ड

सन् १५९८

बरली ४० बरस बड़ी अच्छी सलाह देकर मर गये—अब इसेक्स आयरलेन्ड के लाट होकर

सन् १५९९

अर्ल टाइरोन को जो बग़ावत का डंका बजाता था दबाने चले मगर वहां जाकर कुछ न कर सके और सिपाहियों की जान गंवाकर बिना हुकुम लन्डन पहुंचे और सीधे रानी के सामने चले गये, रानी ने कहा कि जबतक दूसरा हुकुम न मिलै तुम अपने घर रहो इस बात को आप बे इज्ज़ती समझ कर खुले खजाने बाग़ी हो गये और लन्डन के अमीरों से मदद मांगा—मदद

सन् १६०१

तो न मिली मगर पकड़ा गया और सिर काटा गया—उसने रानी की दी हुई एक अंगूठी लार्ड हवर्ड के (जो अब अर्ल नार्टिंघम होगये थे) जोरू से भेजा जिसको अगर रानी पाती तो उस को

माफ़ कर देती मगर उस ने वह अंगूठी न दिया और जब दो साल पीछे उस की बीमारी में रानी उस को देखने गई तो उसने सब हाल कहा और न देने का सबब यह बताया कि केडिज़की लड़ाई में इसेक्स और अर्ल नाटिंघम से बिगाड़ हो गया था—रानी ने यह सुनकर उस बीमार को खूब झकझोरा और लौट कर ज़मीन पर १० दिन बिना खाना और दवा के पड़ी रही आख़िर गहरी नींद आई और मर गई, अब वह ७० साल की थी—

रानी बड़ी समझदार थी और पारल्यामेन्ट से कभी नहीं डरी, मेम्बरों को डाटती थी और सजा भी देती थी मगर मौक़ा मिलने पर वह लोग भी दबा लेते थे—एक बार हाउस आफ़ कामन्स के ४८ क़ानून काट दिया मगर थोड़े ही दिन में किसी चीज़ के बेचने का इजारा जो इसने बहुत लोगों को दे दिया था पारल्यामेन्ट के

मगर रैआया की नाराज़ी से दरबार से निकाले गये-तब जार्ज विलिअर्स की क़िसमत जागी और यह ड्यूक बकिंघम होगये जिसको लार्ड बेकन ऐसे वज़ीर भी डरते थे और खुशामद करते थे, उधर स्काटलेन्ड के अमीर आकर लन्डन में रहने लगे और घर से माल लाकर यहां उड़ाते थे, रोज़गार वहां का बन्द होने लगा और बहुत से लोग बाहर चले गये-

बादशाह को अख़्तियार का बहुत ख़्याल था, वह तो पारल्यामेन्ट को जड़ से उखाड़ देता मगर खर्च का मिलना बिना कामन्स के मंजूरी के मुशकिल था और वे अब यह कहने लगे कि जब तक हुकूमत की बुराई दूर न होगी एक कौड़ी न मिलैगा-जेम्स ने आमदनी की दूसरी सूरत निकाला, ख़िताब खुले खज़ाने बिकते थे, अमीरों पर जुरमाना बहुत होता था, बेगार और रसद जो बहुत दिन बन्द रहे

मत्र फिर जारी किया गया और चीज़ों के बेचने का इजारा भी लोगों को दिया जाने लगा—उसने सन् १६१४ में पारल्यामेन्ट को सभा किया और खर्च मांगा मगर वहां से जवाब मिला कि पहिले क़ानून के खिलाफ़ जो टेक्स हैं बन्द कर दिये जायें तब देखा जायेगा, जेम्स ने नाराज़ होकर पारल्यामेन्ट बन्द कर दिया और ७ बरस नहीं बोलाया—सर वाल्टर रेली ने क़ैद में दुनिया का इतिहास लिखा जिस को वह पूरा न कर सका और आज़ादी के ख़्याल से उसने बादशाह को सोने की खान देने को कहा, फिर क्या था, यह छूटकर १४ सरकारी जहाज़ ले अमेरिका पहुंचे, वहां खान तो मिली नहीं मगर इसपेनी मिले जिन से लड़ाई हो गई और अंगरेज़ों ने सेन्ट टाम्स शहर को जला दिया—बादशाह ने इसपेन से लड़ने को मना कर दिया था और लौटने पर पुराने क़सूर में

सन् १६१८ इस का सिर काटा गया—यह सब इसपेन के बादशाह के खुश करने को किया गया क्योंकि वहां की शाहज़ादी से प्रिन्स आफ़वेल्स की शादी ठहरी थी जिस में बहुत माल मिलना था—

उधर बोहिमिया के ताज के वास्ते लड़ाई होगई जिसमें जेम्स के दामाद फ़्रेडरिक थे जिस ख़ान्दान से बादशाह सातवें एडवर्ड हैं और दूसरी ओर आस्ट्रिया के मालिक फ़रडिनेन्ड थे जिनकी मदद को बहुत से केथालिक सरदार गये थे—बादशाह ने अपने दामाद की मदद ज़रूर किया मगर कुछ काम न निकला—उन्हीं दिनों बहुत से प्युरिटन दीन के मामले में आज़ादी न पाकर बाहर चले गये और अमेरिका सन् १६२० में जाकर नया इंगलेन्ड बसाया जो बढ़ते २ अब एक बड़ी बादशाहत होगई जिसको युनाइटेड स्टेट्स कहते हैं—

कामन्स और बादशाह से बात २ पर खटक

जाती थी, लार्ड बेकन वज़ीर पर २६ क़सूर
लगाकर मुक़द्दमा हुआ और ४०००० पाउन्ड
जुर्माना और जब तक शाही माफ़ी न मिले
क़ैद रहने की सज़ा मिली—जेम्स को नाराज़ी
हुई उसने जुर्माना माफ़ करके दूसरे ही दिन
उसको छोड़ दिया मगर बेकन कभी फिर दरबार
में नहीं आया—उधर इसपेनी शादी से भी का-
मन्स ख़ुश नहीं थे, अभी एलिज़ाबेथ का ज़माना
सब को याद था जब इसपेन के नाम से यहां
लोग चिढ़ते थे, नतीजा यह निकला कि
कामन्स ने बादशाह को एक अरज़ी दिया कि
यह शादी न हो जिसके जवाब में सब धमकाये
गये तब नाराज़ होकर उन लोगों ने एक दूसरी
अरज़ी पारल्यामेन्ट के रजिस्टर में लिखा जिसको
जेम्स ने नोच डाला और बहुत से मेम्बरों को क़ैद
कर दिया, मगर शादी न हुई—शाहज़ादा चार्ल्स
ड्यूक बकिंघम को साथ लेकर इसपेन भी गये

मगर वहां के वज़ीर और ड्यूक से बिगाड़ हो जाने से शादी बन्द होगई और फ़ान्स में हुई—जेम्स ने अब इसपेन से लड़ाई छेड़ा और पारल्यामेन्ट की सभा किया जिस से लड़ाई के खर्च को २००००० पाउन्ड की मंज़ूरी हुई मगर थोड़े ही दिन में जेम्स गठिया के रोग में मर गया॰

सन् ६२४

सन् ६२५

पारल्यामेन्ट से कभी इस की राय न मिली जिस का नतीजा यह हुआ कि इसका लड़का जान से मारा गया और पोते को लोगों ने बादशाहत छीन कर बाहर निकाल दिया—इस के ज़माने में दुनिया का पता लगाने को बहुत लोग चले, कुछ काम भी निकला मगर बहुत से लोग राह में मर गये—पढ़ने लिखने का चरचा खूब बढ़ रहा था, शिकार और मुरग़ों की लड़ाई में जेम्स का दिन और शराब में रात कटती थी मगर कभी २ कुछ लिखता भी था और कई किताबें इस की लिखी हैं—दूरबीन और

थरमामेटर ( गरमी नापने का शीशा ) सब इसी के ज़माने में निकले—

## पहिले चार्ल्स
### १६२५–१६४६

बादशाह होते ही दो बार उस ने नाराज़ होकर पारल्यामेन्ट बन्द कर दिया क्योंकि जब वह इसपेन से लड़ने को ख़र्च मांगता तो कामन्स कहते कि बकिंघम पर हम लोग भरोसा नहीं करते, दूसरा कोई अगर ख़र्च का ज़िम्मेदार हो तो ज़रूर मंज़ूरी हो सकती है, मगर बादशाह ने केडिज़ पर चढ़ाई कर दिया, बकिंघम गये और सिपाहियों की जान और देश का माल खोकर लौट आये—दूसरे पारल्यामेन्ट में बकिंघम पर क़सूर लगाया गया मगर उसको बादशाह ने बन्द ही कर दिया और बकिंघम ने अब क़र्ज़ लेने की सलाह दिया; जो नहीं देता था उस को सज़ा मिलती थी—

उधर फ़ान्स और इसपेन से झगड़ा होगया, फ़ान्स के बादशाह अपनी प्राटेसटेन्ट रैआया से लड़ गये, बकिंघम को वहां के वज़ीर कारडिनल रिचलू ने फ़ान्स आने को मना कर दिया था मगर अब यह प्राटेसटेन्ट की मदद को चले और वहां सिपाहियों की जान गंवाकर फिर लौटे—तीसरे पारल्यामेन्ट ने बादशाह की कुछ मदद किया मगर एक क़ानून (जिस को हक़ की अरज़ी कहते हैं) जारी करके बादशाह को बेजा टेक्स और बेक़सूर किसी के क़ैद करने का अख़्तियार न रक्खा—बकिंघम फिर बेड़ा साज फ़ान्स पर जाने वाले थे मगर एक आदमी ने जिस का नाम फ़ेलटन था पोर्टसमथ शहर में उस को कमरे से निकलते ही छूरी मारा जो अपना काम कर गई, फ़ेलटन भागा मगर पकड़ा गया और गरदन मारी गई—तब अर्ल लिन्डसे गये मगर रिचलू ने लारोशेल

सन १६२८

को दबा ही लिया—उन्हीं दिनों कामन्स ने चार्ल्स को ४००००० पाउन्ड साल की आमदनी की मंजूरी भी कर दिया मगर बादशाह फिर मन मानी कर के बेजा टेक्स लगाने लगा और जिन मेम्बरों ने सामना किया उन को क़ैद कर के पारल्यामेन्ट बन्द कर दिया और २२ साल वैसे ही हुकूमत किया—इन दिनों विलिअम लार्ड केन्टरबरी के पादड़ी मज़हबी मामले को देखते थे और जो केथालिक दीन के खिलाफ़ चलता सज़ा पाता था, बहुत से प्यूरिटन अपना घर छोड़ कर अमेरिका चले गये, हेम्पडन, पिम, क्रामवेल वग़ैरह भी चले मगर बादशाही हुकुम से जहाज़ रोक दिया गया—

सन १६२९

टामस वेन्टवर्थ जो फिर अर्ल स्ट्राफ़र्ड होगये वज़ीर थे और ७ साल आयरलेन्ड पर बड़ी गरमी की हुकूमत किया—यह कामन्स के ज़ोर को एक

बड़ी फ़ौज की मदद से दबाकर बादशाही ज़ोर को बढ़ाना चाहता था—पुराने ज़माने में समुन्दर के किनारे रहने वालों से लुटेरे डेन्स के रोकने को जो टेक्स लिया जाता था फिर जारी किया जिस से रैश्राया को नाराज़ी हुई मगर ३ साल तक सब चुप रहे—जान हेम्पडन बकिंघमशायर के एक भले आदमी ने लड़ाई के ज़माने का टेक्स सुलह के ज़माने में बेजा कहा और देने से इनकार किया मगर इन पर मुक़द्मा चला और देना पड़ा. सच कहिये तो यह बेजा था क्योंकि जहाज़ के वास्ते लिया जाता था मगर फ़ौज के काम आता था और फिर पारल्यामेन्ट ने इसको मंज़ूर भी नहीं किया था—उधर चार्ल्स ने स्काटलेन्ड में अपनी एक किताब गिरजों में पढ़ने का हुकुम दिया मगर जब पादड़ी पढ़ने को उठा तो किसी ने एक चौकी फेंक कर मारा. दूसरे दिन रैश्राया ने एक सभा करके केथाकिल

दीन न मानने की क़सम खाया, दूसरी सभा ग्लासगो शहर में हुई और सब लोगों ने अपने क़ानून, आज़ादी और बादशाह के वास्ते एक होकर काम करने की क़सम खाया—३० साल का काम ३० दिन में बिगड़ गया और स्काटलेन्ड के गिरजे की जड़ पहिले से भी मज़बूत होकर प्रेसबेटेरिअन दीन क़ायम हो गया—चार्ल्स इन सब बातों को दबा लेता मगर रुपये की कमी होने से उसने चौथा पारल्यामेन्ट बोलाया जिस में कार बार का सुधार पहिले और मदद पीछे देखकर बादशाह ने उसको बन्द कर दिया—उन्ही दिनों स्काट फ़ौज इंगलेन्ड के सरहद पर चढ़ी और न्यूकासिल शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया—तब चार्ल्स ने यार्क शहर में एक सभा किया जिस में बड़े आदमी ( लार्ड लोग ) बुलाये गये मगर उन लोगों ने बादशाह को कामन्स के तलब करने

सन १६४०

की सलाह दिया, उसने मान लिया और ३० नवम्बर सन् १६४० को पारल्यामेन्ट बैठा जिसमें जान बचाना मुशकिल होगया—पादड़ी लार्ड और वज़ीर स्ट्राफ़र्ड बुर्ज में क़ैद कर दिये गये और जिन लोगों को सज़ा मिली थी छोड़ दिये गये—बादशाही अदालत सब बन्द कर दी गई और यह तै किया गया कि अब पारल्यामेन्ट बादशाह के हुकुम से बन्द न हो—२२ मार्च को पिम ने अर्ल स्ट्राफ़र्ड पर मुक़दमा चलाया और बहुत से क़सूर लगाकर उसको देश, रेआया की आज़ादी और अंगरेज़ी क़ौम का दुशमन साबित करके मौत का हुकुम दिया—बादशाह ने लाचार होकर मंज़ूर कर लिया और १२ मई को उसका सिर काटा गया—लन्दन के सड़कों पर उस रात को खूब रोशनी हुई और लोग खुशी से चिल्लाते थे कि वह मर गया—लार्ड का सिर भी ४ बरस पीछे काटा गया—

सन् १६४१

बरसात में बादशाह स्काटलेन्ड गये और हेम्पडन पारल्यामेन्ट की ओर से इन की चाल पर निगाह रखने को भेजे गये—उन्हीं दिनों आयरलेन्ड में बड़ा हलचल मच गया, केथालिक लोग बिगड़ गये और ४० या ५० हज़ार प्राटे-स्टेन्ट जान से मारे गये—इसी ज़माने से इंग-लेन्ड के मुलकी मामले में काम करने वालों के २ दल होगये, जो पहिले केवालेअर और राउन्डहेड कहे जाते थे फिर ह्विग और टूरी और कुछ दिन पीछे कनसरवेटिव और लिबरल हो गये—एक दल यह चाहता था कि दीन के मामले में जो रवाज चला आया है वही रहै मगर दूसरा यह चाहता था कि वह बदल दिया जाय मगर उस ज़माने में दीनके मामले में एक राय न होने से दो दल हुये थे और अब एक बाप के दो लड़कों की राय मुलकी मामलों में नहीं मिलती—२२ नवम्बर १६४२

को कामन्स में बड़ी देर पीछे झगड़ा होकर एक परवाना निकला जिसमें बादशाह के सब बेजा काम लिखे थे और यह भी लिखा था कि अब आप बिना पारल्यामेन्ट की मंज़ूरी के किसी को वज़ीर न बनावें, चार्ल्स ने सब मंज़ूर कर लिया मगर थोड़े दिनों में उसने इस परवाने के निकालने वालों पर बग़ावत का मुक़दमा चलाना चाहा और चोबदार ने कामन्स में आकर कहा कि पिम, हेम्पडन वग़ैरह बाग़ी हैं बादशाह ने उनको तलब किया है मगर इन लोगों ने ४ आदमी भेज कर बादशाह से कहलाया कि बहुत जलदी हुकुम की तामील होगी—चार्ल्स ने नाराज़ होकर ५०० सिपाही साथ लिया और उनको पकड़ने चला मगर यहां पहिलेही खबर मिल चुकी और वे लोग निकल गये, चार्ल्स के वहां पहुंचने पर सब लोगों ने टोपी उतारा इस ने भी उतार लिया और

पूछा कि मिसटर पिम कहां हैं मगर कुछ जवाब न मिला तब उस ने और लोगों को पूछा, आखिर इसपीकर ने कहा कि हुज़ूर इस मकान में हमारी आंख और ज़बान काम नहीं देते वै पारल्यामेन्ट के अख़्तियार में हैं–

चार्ल्स चला गया मगर इस काम को लोगों ने क़ौम की बेइज़्ज़ती समझा और दूसरे दिन फिर कामन्स में इन्हीं बातों का चरचा रहा और लन्डन के सड़कों पर लोग हथियार लिये देख पड़ने लगे–वै ५ मेम्बर लौटे और उनकी बड़ी खातिर हुई, यह सब देख चार्ल्स यार्क चला आया और रानी भी थोड़ेही दिन पीछे हालेन्ड चली गई मगर बादशाही ज़ेवर अपने साथ लेगई जिसको बेचकर कुछ दिन बादशाह की मदद करती रही–बादशाह और पारल्यामेन्ट से लिखा पढ़ी कुछ दिन चली मगर चार्ल्स ने फ़ौज के अफ़सर रखने का अख़्तियार पार-

ल्यामेन्ट को न दिया और दोनों ओर से लड़ाई का सामान हुआ—३ महीने पीछे चार्ल्स हल के क़िले में जाना चाहता था मगर वहां के अफ़सर ने फाटक नहीं खोला, इस बात को पारल्यामेन्ट ने पसन्द किया तब ३२ लार्ड और ६० कामन्स जिसमें हाइड और फ़ाकलेन्ड भी थे चार्ल्स से यार्क में जा मिले और २५ अगस्त १६४२ को बड़े तूफ़ान में चार्ल्स ने नाटिंघम शहर में अपना झन्डा खड़ा किया और २०००० आदमी उसकी ओर होगये—

चार्ल्स के पास माल न होने से गोला बारूद की कमी थी मगर सिपाही उसके बड़े लड़ने वाले थे, पारल्यामेन्ट के सिपाही सब नये थे मगर लन्डन उन के हाथ में होने से मन माना माल मिल सकता था—पहिली लड़ाई एजहिल में हुई जिस से किसी का कुछ फ़ायदा न हुआ और चार्ल्स ने आक्सफ़र्ड में डेरा डाला—

सरे साल ब्रिसटल शहर पर बादशाही क़ब्ज़ा
होगया और न्युवरी की पहिली लड़ाई में लार्ड
फाकलेन्ड मारे गये, उधर पारल्यामेन्ट का भी
एक बड़ा आदमी हेम्पडन मारा गया जिस से
पारल्यामेन्ट के होश बिगड़ गये और स्काट
पारल्यामेन्टसे सुलह करके मदद मांगा: २००००
फौज अंगरेज़ी पारल्यामेन्ट की मदद को
आगई–चार्ल्स ने उधर आयरलेन्ड के बाग़ी के-
थलिक लोगों से सुलह कर लिया और उन
लार्ड और कामन्स को जो उस की ओर थे
बुलाकर आक्सफ़र्ड में एक पारल्यामेन्ट बैठा-
या मगर मार्सटनमूर की लड़ाई में बादशाही
फौज हारगई और फिर कभी न जीती– सन् १६४४
अब अंगरेज़ी पारल्यामेन्ट में दो दल होगये
कुछ लोग दीन का ढंग उस से बदलना चाहते
जैसा चार्ल्स कहता था और नया दल यह
कहने लगा कि इस झगड़े को दूर करो जिस

का जैसा जी चाहै उस तरह ख़ोदा की याद
करै—इस दल का अगुआ कामवेल था—व
सीधा आदमी पहिले तो पारल्यामेन्ट की फ़ौज
का कपतान था मगर लड़ाई जारी रहने से जन
रल होगया और सब तरह के सिपाही रख
फ़ौज को खूब सुधारा, इस के सिपाही और मदद
गार लोग बादशाह का रहना नही चाहते
मगर पारल्यामेन्ट के मेम्बर बादशाह के
ख़्तियार को घटा देना चाहते थे जिस से झगड़ा
बढ़ा और एक कानून निकाल कर यह तै हुआ
कि पारल्यामेन्ट के मेम्बर अब फ़ौज के अफ़
न रहैं और जो थे उन को अलग होना पड़ा
मगर कामवेल मेम्बर होने पर भी जनरल
बना रहा—

लार्ड पर जो क़ैद था अब मुक़द्दमा
चला और उस का सिर काटा गया, फिर काम
वेल की नई फ़ौज ने चार्ल्स को १४ जू

सन १६४५

को नेज़बी जगह पर हराया, बादशाह वेल्स को भागा–उधर स्काटलेन्ड में बादशाही फ़ौज की जीत से कुछ उम्मैद हुई मगर जलदी ही सारा स्काटलेन्ड पारल्यामेन्ट के हाथ आगया–चार्ल्स ने आक्सफ़र्ड में आकर पारल्यामेन्ट से लिखा पढ़ी छेड़ा और आख़िर निवार्क में अपने को स्काट फ़ौज के हाथ में दे दिया, उन लोगों ने इस से सारे इंगलेन्ड में स्काट गिरजे की तरह पूजा होने को कहा मगर इसने न माना और इस के कहने पर यह अंगरेज़ों के हवाले कर दिया गया–जब स्काट ने इसकी आज़ादी और हिफ़ाज़त की बात कहा तो अंगरेज़ बहुत कुड़बुड़ाये और कहा कि हम लोग अपने बादशाह के साथ बद सलूकी करेंगे और उसको होमबी महल में इज्ज़त से रक्खा मगर क्रामवेल से और पारल्यामेन्ट से झगड़ा होगया, जो मेम्बर उसके ख़िलाफ़ थे

निकाल दिये गये और लोगों को मन मानी पूजा करने का हुकुम हुआ—उधर सिपाही कहने लगे कि हम दीन के वास्ते लड़े जब तक पूरी आज़ादी नहीं मिलती हथियार नहीं रखते और बादशाह को कभी एक तो कभी दूसरे क़िले में रखने लगे—उस को मौक़ा मिला और वह वाइट टापू को भागा मगर वहां उस को रुकना पड़ा और एक गढ़ी में क़ैद किया गया—उधर स्काटलेन्ड की फ़ौज लेकर ड्यूक हेमिलटन सरहद पर चढ़े इधर वेल्स, केन्ट और इसेक्स में बग़ावत हुई, यह सब काम वेल ने दबाया, सिपाही अब बिगड़ गये और बादशाह के खून के पियासे होगये, जो मेम्बर यह नहीं चाहते थे वै निकाल दिये गये और चार्ल्स पर रैआया से लड़ने का क़सूर लगा कर मुक़दमा चला—एक नई अदालत बैठी और वह उस के सामने लाया गया, मगर उस

सन् १६४८

ने कहा कि हमारा मुक़दमा तुम लोगों को सु-
नने का अख़्तियार नहीं है, क्योंकिइस अदालत
में लार्ड लोग नहीं हैं, मगर उन लोगों ने उस
को मौत का हुकुम दिया और ३ दिन पीछे
ह्वाइटहाल महल के सामने उसका सिर काटा
गया—लन्डन के पादड़ी जकसन उसके साथ थे
और उसने ख़ोदा को याद करके कहा कि लड़ाई
में हमारा क़सूर नहीं था क्योंकि इस को पारल्या-
मेन्ट ने छेड़ा था, सूली के चारों ओर पैदल और
सवार डटे थे और उन के पीछे लाखों आदमी खड़े
थे, एकही बार में सिर कट गया और जब जल्लाद
ने उसके सिर को उठाकर कहा कि यह मुल्क के
दुशमन का सिर है तो सब लोग कांप गये—

सन् १६४६

उस के ३ लड़के और ३ लड़की थीं, दो लड़
के बराबर बादशाह हुये—वह तसवीर का बड़ा
शौकीन था और उसी के ज़माने में पहिले डाक
का बन्दोबस्त हुआ—

## पंचाइती हुकूमत
### १६४६—१६६०

बादशाह और लार्ड लोगों का अब कोई काम नहीं था, हाउस आफ़ कामन्स के बचे हुये मेम्बर सब काम करते थे, क्रामवेल बेड़ा और फ़ौज का मालिक था और यही हुकूमत करता था—आयरलेन्ड में मारक्विस आरमन्ड ने बादशाह के लड़के चार्ल्स को बादशाह मानलिया और डबलिन, बेलफ़ास्ट और डेरी शहरों को छोड़ सारा टापू उनके हाथ आगया, पारल्यामेन्ट ने क्रामवेल को वहां का हाकिम बनाया, यह बहादुर १६००० सिपाही लेकर वहां पहुंचा और ९ महीने में सारे टापू पर अमलदारी जमालिया, शहरों को लूटा जलाया, रेआया को क़तल किया और लौट कर पंचाइती हुकूमत के फ़ौज का जनरल हो गया—उधर स्काटलेन्ड में भी चार्ल्स को

ोगों ने बादशाह मान लिया और एडिनबरा में सन् १६५०
सकी बड़ी खातिर की गई, यह सुनकर क्राम-
ल उधर चढ़ा मगर आस पास सब उजाड़
ाया, कुछ खाने को नहीं मिलता था—उधर
ाई खोदकर स्काट फ़ौज पड़ी थी एक ओर
मुन्दर और दूसरे ओर पहाड़ देख क्रामवेल
े होश उड़ गये मगर दुशमन को पहाड़ी
ा नीचे उतरते देख इस ने पीछे से छापा
ारा और डनबर जगह पर हज़ारों स्काट
ारे गये बाक़ी भाग गये, एडिनबरा और
लासगो अंगरेज़ों के हाथ लगे—दूसरे साल
ार्ल्स के सिर पर ताज रखकर उसको साथ
े स्काट लोग इंगलेन्ड पर चढ़े मगर वर-
ास्टर में क्रामवेल की फ़ौज से सामना होगया
ौर बादशाही फ़ौज तीन तेरह हो गई, एक सन् १६५१
हीना बेचारा चार्ल्स भेस बदल कर घूमता
हा, कुछ दिन जंगल के एक सिपाही का मेह-

मगर कोई लार्ड न आया तब क्रामवेल ने न
लार्ड बनाये मगर कामन्स ने इन नये बने
लार्डों की काफ़ी इज्ज़त न किया इस से पा
सन १६५८ र्ल्यामेन्ट बन्द कर दिया गया, और थोड़े दि
में क्रामवेल मरगया—

इंगलेन्ड में उसकी हुकूमत को चाहे जै
मानिये मगर बाहर उसने इंगलेन्ड के ना
को खूब बढ़ाया, डच को हरा कर उन से सुल
कर के चार्ल्स को वहां से निकलवा दिय
अफ़्रिका के उत्तरी किनारे के लूटेरे मेडीट
निअन समुन्दर को लूटा करते थे अब
लोग अंगरेज़ी जहाज़ों के मारे पस्त हो ग
इसपेन ने हारकर अमेरिका में जमैका टापू अ
गरेज़ों को दे दिया, फ़ान्स की इसपेन से लड़ा
होने पर अंगरेज़ी फ़ौज ने मदद किया अ
डनकर्क का क़िला इनाम में मिला, ब्लेक ए
अंगरेज़ी जहाज़ के अफ़सर ने इसपेनियों व

अमेरिका में लूट कर ३८ गाड़ी चांदी इंगलेन्ड भेजा, यूरप के सारी प्राटेस्टेन्ट रैआया को क्राम- वेल ने मदद दिया—

उस के लड़के रिचर्ड ने पारल्यामेन्ट बोलाया मगर सिपाहियों को नाराज़ देखकर ८ महीना पीछे इस झगड़े को छोड़ अपने घर चला गया और आराम के साथ सन् १७१२ तक वहीं रहकर मरा—

सन १६५६

उधर पारल्यामेन्ट में झगड़ा हुआ और हर जगह बग़ावत होनेलगी, क्रामवेल के एक जनरल ने सब को दबाया, और पारल्यामेन्ट बन्द कर दिया—स्काटलेन्ड का हाकिम जन- रल मान्क यार्क पहुंचा और वहां फेअरफ़- क्स चार्ल्स के साथी उस से जा मिले; तब ५००० आदमी लेकर वह लन्डन पहुंचा और पारल्यामेन्ट बोलाया—पुराने लोगों ने आकर नये मेम्बर चुने और बड़े पारल्यामेन्ट

को इसी दिन से खतम कर दिया–नये पा-
र्ल्यामेन्ट में १ मई सन् १६६० को मान्क
कहा कि एक आदमी आप लोगों के न
बादशाह की चिट्ठी लाया है और सर जान
ग्रेनविल ने लाड्स और कामन्स दोनों को
चिट्ठी दिया जिसमें लिखा था कि अग
आप लोग हमको बोलावें तो हम कोई बात
खिलाफ़ न करेंगे. यह बात सब ने माना और
८ मई को चार्ल्स को बादशाह मानकर अंग-
रेज़ी बेड़ा उसको हालेन्ड से लाने को चला.
२५ मई को वह डोवर पर उतरा और २६
मई को लन्डन आया–सड़कों पर फूल बिछे
थे. लोगों के मकान खूब सजाये गये थे
पानी की नलियों में शराब बहती थी. क्राम-
वेल की फौज जिस को बादशाह के नाम से
नफ़रत थी मुंह लटकाये खड़ी थी. जो लोग
बादशाह की ओर से पार्ल्यामेन्ट में सर

थे अब मारे खुशी के फूले नहीं समाते थे—

## दूसरे चार्ल्स

१६६०—८५

रैआया को बादशाह के फिर आने पर बड़ी
खुशी हुई और उस से कोई क़रार नहीं कराया
गया, एडवर्ड हाइड जिसने बराबर बादशाह का
साथ दिया अब अर्ल क्लेरेन्डन का ख़िताब पाकर
वज़ीर हो गया और जेम्स ड्यूक यार्क से उसके
लड़की की शादी होगई—जनरल मान्क को
ड्यूक अल्बमार्ल का ख़िताब मिला—बादशाह
के हुकुमसे क्रामवेल के सिपाही छोड़ा दिये गये
और असामियों का ज़मीन्दार को लड़ाई में
मदद देना बन्द कर दिया गया—सेवाय उन
के जिन लोगों ने पहिले चार्ल्स के मारने के
काम में मदद दिया था सब को माफ़ी दोगई,
क्रामवेल, जज ब्राडशा और आयरलेन्ड के हा-
किम आयरटन की लाश को क़ब्र से निकाल

कर फांसी दीगई—जनरल लेमबर्ट और दो
आदमी बुर्ज में क़ैद किये गये पीछे से मुक़
चलाकर दो की गरदन मारी गई और ती
बराबर क़ैद रहा, बादशाह को पारल्यामेन
१२००००० पाउन्ड की आमदनी ज़िन्दगी
को मंजूर किया जिस से उसने एक छोटी प
रक्खा जो आज कल के फ़ौज की जड़ थी

दीन का मामला बहुत बिगड़ रहा था म
बादशाह चाहता था कि हर खास व आम इं
लेन्ड के गिरजे को माने और पारल्यामेन्ट
एक क़ानून जारी हुआ जिस से सब सरक
नौकरों को इंगलेन्ड के गिरजे को मानने औ
बादशाह के खिलाफ़ हथियार न उठाने क
क़सम खाना पड़ा, दूसरे साल एक और भी क़ा
नून निकला जिससे हर पादड़ी को भी इन
बातों की क़सम खाना पड़ा—स्काटलेन्ड
इस क़ानून से बड़ी नाराज़ी हुई और जगह

सन
१६६१

वहां के पादड़ी सभा करने लगे, इस से एक क़ानून निकला कि जिस से इन कमेटियों में जाने वालों को सज़ा मिले और एकही साल पीछे एक क़ानून और भी जारी हुआ जिस से उन पादड़ियों को जो बादशाह के ख़िलाफ़ हथियार न उठाने की क़सम नहीं खाते थे शहर से ५ मील रहना पड़ता था और वे लोग इस्कूल मास्टर नहीं होने पाते थे, यह सब होने पर अपना दीन सब को प्यारा था और किसी ने नहीं छोड़ा—

सन १६६४

बादशाह खूब माल उड़ाता और मज़ा करता था इस से उस को बराबर रूपये की ज़रूरत रहती थी, पोरचुगल के शाहज़ादी से उसकी शादी होने पर ५००००० पाउन्ड मिला और डनकर्क का क़िला जो क्रामवेल के ज़माने में अंगरेज़ों के हाथ लगा था ५००००० पाउन्ड पर फ़्रान्स के हाथ बेच डाला गया—हिन्दोस्तान

में बम्बई और अफ़्रिका में टेनजिअर भी उसी शादी में मिले थे–टेनजिअर आमदनी से ज़्यादः ख़र्च होने से छोड़ दिया गया और बम्बई ईस्ट इन्डिया कम्पिनी को दे दिया गया–इतनी आमदनी पर भी बादशाही ख़र्च नहीं चलता था और पारल्यामेन्ट की मंज़ूर की हुई रक़म को अपने मन माना खर्च करने के फेर में पड़कर चार्ल्स डच से लड़ गया, पहिले तो जीत रही मगर पीछे से अंगरेज़ी जहाज़ जलाते डच लोग टेम्स नदी में घुसे और टिलबरी क़िले तक पहुंच कर इंगलेन्ड को जिसको पानी की रानी कहना चाहिये आबरू में बट्टा लगाया जो अंगरेज़ कभी न भूलेंगे–

इस लड़ाई के छिड़ते ही लन्डन पर बड़ी भारी मुसीबत पड़ी, प्लेग महाराज जिन्हों ने आज कल इस देश में डेरा डाला है और उठाना नहीं चाहते हैं वहां पहुंचे, लाखों आदमी

मर गये, मुरदे गाड़े नहीं जा सकते थे और रात को सरकारी गाड़ी घन्टी बजाती सारे शहर में घूमकर दिन भर के मरे लोगों को उठा ले जाती और बड़े गड़हे खोद कर सब को गाड़ देती थी. बड़े आदमी सब भाग गये थे, दुकानें बन्द रहती थीं और सड़कों पर घास जम गई थी—इस मुसीबत को हुए अभी देर भी नहीं हुई थी कि दूसरी मुसीबत पड़ी, शहर के पूरब और आग लगी और हवा की तेज़ी से जलदी सारे लन्डन में फैल गई, ७ दिन बराबर शहर जलता रहा. ८९ गिरजे और २३००० मकान मिट्टी में मिल गये. पुराना सेन्टपाल गिरजा भी खाक हो गया और उसी जगह पर दूसरा बना जो अब लन्डन में सब से ऊंचा है—बादशाह जो बराबर आराम किया करता था घोड़े पर सवार अपने भाई जेम्स को साथ लिये जगह २ पर मकान गिरवाता था. इस आग को जलते लोगों ने

२०० मील से देखा था—इस से बड़ा फ़ायदा हुआ, मैले कुचैले गली कूचे सब साफ़ हो गये और फिर प्लेग जी की वहां जाने की हिम्मत न पड़ी, नये मकान बन गये, सड़क और गली चौड़ी कर दी गई और काफ़ी हवा और रोशनी जाने लगी, इस बड़ी आग की याद में एक बड़ी लाट बनाई गई जो अब तक खड़ी है—

उधर आयरलेन्ड में बहुत से अंगरेज़ काम वेल के ज़माने में बसे थे, बादशाह ने वहां के केथालिक रैआया की ज़मीन उनको फेर देना चाहा, इंगलेन्ड के गिरजे के रस्म वहां जा होगये और पारल्यामेन्ट ने तिहाई ज़मीन अं गरेज़ों से छीन कर उन को दे दिया तिसप भी वे लोग बादशाह को बेइन्साफ़ कहते र और बहुत से लोग फ़ान्स और इसपेन में ज बसे—स्काटलेन्ड में झगड़ा लगा ही रहा, बराब कमेटी होती थी जिस में लोग हथियार लेक

जाते थे, अर्ल लाडरडेल वहां के हाकिम किये
गये और जाकर वड़ी गरमी की हुकूमत किया.
जो इंगलेन्ड के गिरजा को नहीं मानता था
वह सज़ा पाता था, वग़ावत भी होती थी मगर
सब दब जाती थी, लोगों को फांसी होती थी.
बहादुर लोग दीन नहीं छोड़ते थे और उस के
वदले जान देते थे—उधर लार्ड क्लेरेन्डन वज़ीर
से बादशाह नाराज़ होगये, रैआया पहिले ही
नाराज़ थी, उस पर पारल्यामेन्ट में मुक़दमा
चलाने का विचार था मगर वह फ़ान्स भाग
गया और वहीं मरा—बादशाही सलाहकारों ने
अब फ़ान्स के बादशाह चौदहवें लुई के ज़ोर
रोकने को स्वीडन और हालेन्ड से सुलह कर
लिया, इस से रैआया को बड़ी खुशी हुई, मगर
भीतरी कार्रवाई किसी को नहीं मालूम थी कि
चार्ल्स को फ़ान्स से २००००० पाउन्ड साल की
पेनशिन मिलती है और सन् १६७० में डोवर

सन १६६८ ई०

में एक सुलह हुई जिस से चार्ल्स ने हालेन्ड से लड़ने का क़रार किया और लुई ने अगर इंगलेन्ड में बग़ावत हो तो फ़ौज भेजने कहा उन दिनों ५ आदमी बादशाह के सलाहकार थे और उन के नाम के पहिले हरफ़ से केबल निकला जिस से केबिनेट होगया इसी से बादशाही कौन्सिल की जड़ हुई-इन लोगों का नाम क्लिफ़र्ड, आरलिंग्टन, बकिंघम, एशले और लाडरडेल था-हालेन्ड से लड़ाई छेड़ गई और खर्च के वास्ते ख़ज़ाने से रुपया लिया गया मगर अंगरेज़ी जहाज़ वहां पहुंचे भी नहीं थे कि सुलह होगई, लन्डन के सेठ साहूकारों ने सरकार को क़र्ज़ दिया था उन से कह दिया गया कि तुमको सूद मिला करेगा मगर असल नहीं मिल सकता इस से रोज़गार कुछ दिन बन्द रहा-

सन १६६७

उसी साल बादशाह ने सब को मन माना

पूजा करने का एक हुकुम निकाला मगर पार-
ल्यामेन्ट के नाक सिकोड़ने पर उसको रोक
दिया. तव पारल्यामेन्ट से क़ानून निकला जिस सन १६७३
से सब सरकारी नौकरों को क़सम खाना पड़ता
था कि हम से केथालिक रस्म से कोई मतलव
नहीं इस से कोई केथालिक सरकारी नौकरी
नहीं पाता था, वादशाह के भाई ड्यूक यार्क
को भी बेड़े की अफ़सरी से अलग होना पड़ा—
पारल्यामेन्ट की राय से कौन्सिल टूट गई और
अर्ल डनवी वज़ीर हुये, लार्ड एशले जो अब
अर्ल शेफ़्ज़बरी होगये थे खिलाफ़ हो कर बाद-
शाह के भाई को अलग कर के ड्यूक मनमथ
जो वादशाह का लड़का चोर महल से था सन १६७४
वारिस वनाने की तदवीर करने लगे—लुई ने
चार्ल्स को १००००० पाउन्ड देकर एक छिपी
हुई सुलह किया जिससे दोनों बादशाह बिना
एक दूसरे के रज़ामन्दी के किसी और देश से

सुलह न करें और पारल्यामेन्ट १५ महीने मुलतवी रहा, सन् १६७७ में फिर पारल्यामेन्ट बैठने पर अर्ल शेफ़्ज़बरी ने कहा कि इतने दिन का मुलतवी रहना बन्द होने के बराबर है; यह क़ैद कर दिये गये और लार्ड लोगों से नाक रगड़ने पर छोड़े गये—

अभी रैआया का दिल बादशाह की तरफ़ से साफ़ नहीं हुआ था कि एक बद चलन पादड़ी टिटस ओट्स ने क़सम खाया कि बादशाह और सारे प्राटेसटेन्ट रैआया के मारने की बन्दिश हो रही है, बहुत से झूठे गवाह भी क़सम खाने को मिल गये; सारा इंगलेन्ड डर के मारे पागल होगया, सैकड़ों केथालिक जान से मारे गये और एक क़ानून निकला जिस में हाउस आफ़ लार्डस और बादशाही हुज़ूर में कोई केथालिक न जाने पावे मगर अपने भाई को बादशाह ने इस क़ानून से बरी कर दिया—

एक चिट्ठी पकड़ी गई जिस में अर्ल डेनवी ने फ्रान्स के बादशाह से चार्ल्स के वास्ते रूपया मांगा था, उसपर मुक़दमा चला मगर बादशाह ने पारल्यामेन्ट वन्द कर दिया और उस को माफ़ी दिया, नये पारल्यामेन्ट ने इस बात को बेजा कहा और डेनवी बुर्ज में क़ैद किये गये तब सर विलिअम टेमपुल वज़ीर हुये जिस ने ३० आदमियों की एक कौन्सिल बनाया जो बादशाह और पारल्यामेन्ट के बीच में काम करे मगर यह तरकीब चली नहीं—इस पारल्यामेन्ट ने ४ ही महीने रहने पर भी एक क़ानून निकाला जिस से रेआया को बड़ी आज़ादी मिली, कोई आदमी विना खुले खज़ाने मुक़दमा हुये क़ैद में बहुत दिन नहीं रह सकता था और एक बार छूट कर फिर उसी क़सूर में पकड़ा नहीं जा सकता था, इस क़ानून के पहिले लोग बादशाह के मन मानी क़ैद रहते थे—मेरी स्काट की रानी

१८ साल. सर आलडर रेली १३ साल क़ैद हैं
इन्हीं दिनों छापे को भी कुछ दिन को पूरी
आज़ादी मिली—

स्काटलेन्ड में लोग अपना दीन न छोड़ने में
बहुत सताये जाते थे, लाडरडेल वहां के हाकिम
भी रेआया को बड़ी तक़लीफ़ देते थे. आखि
हैरान होकर रेआया पागल होगई और हथि
यार उठा लिया—इधर लन्डन से ड्यूक मनमथ
इन के दबाने को चले, २०० आदमी मारे गये
और १२०० क़ैद हुये जिसमें से कुछ को फांसी
हुई बाक़ी अमेरिका के एक टापू बारबेडोज़ को
भेज दिये गये, अब लोगों का दिल बादशाह
की तरफ़ से फिरा और लाडरडेल की जगह पर
ड्यूक यार्क ने जाकर और भी गरमी दिखाया.
बहुत लोग अमेरिका भाग गये—

उधर अर्ल शेफ़्ज़बरी और उन के साथी चाह
चाहते थे कि जेम्स ड्यूक यार्क कैथालिक होने

से बादशाह न किया जावे और बहुत सी अरज़ी पारल्यामेन्ट के बैठने को भेजवाया, यह लोग अब ह्विग कहे जाने लगे और जो दल इन के ख़िलाफ़ था उसको यह लोग टूरी कहने लगे— पारल्यामेन्ट बैठने पर ७९ आदमी की राय ज़्यादा होने से जेम्स को बादशाहत से अलग करने का बिल पास होगया मगर लार्ड लोगों ने उस को मंज़ूर नहीं किया-चार्ल्स ने देखा कि लन्डन में लोगों का मिज़ाज बिगड़ा है और यहां पारल्यामेन्ट होने से कहीं मेम्बर लोग पुराने बड़े पारल्यामेन्ट की तरह जिसने उसके बाप को मिट्टी में मिलाया था लन्डन के लोगों से मदद न मांगें इस से उसने दूसरा पारल्यामेन्ट आक्सफ़र्ड में बोलाया, ह्विग मेम्बर वहां हथियार बन्द गये, जेम्स को बादशाहत से अलग करने का बिल पेश करते ही बादशाह ने बन्द कर दिया और अब दुशमनों को सज़ा देने की फ़िकिर

सन् १६८०

सन् १६८१

करने लगा—मनमथ को अपने चाल चलन की ज़मानत देना पड़ा और उस के मददगारों पर जुरमाना हुआ और सज़ा मिली—शेफ़्ज़बरी हालेन्ड भागा और वहीं मरा—बादशाह ने फिर दूसरा पारल्यामेन्ट नहीं बोलाया क्योंकि फ़ान्स की पेनशिन से ख़र्च की कमी नहीं थी, लन्डन का परवाना ज़ब्त होगया और कोई वहां बिना बादशाह के मंज़ूरी के हाकिम नहीं किया जाता था, इसी तरह ह्विग लोगों के सब शहरों के परवाने ज़ब्त होगये—अब लोग बग़ावत के फेर में पड़े, यह बन्दिश हुई कि नई बाज़ार की घोड़ दौड़ से लौटने पर राइ हाउस फ़ार्म के सामने सड़क पर एक छकड़ा उलट दिया जाय जिस से बादशाही गाड़ी रुक जाये और दोनों भाइयों को वहीं गोली मार कर मनमथ को बादशाह बनाया जाय, मगर भेद खुल जाने से लार्ड रसेल और सिडनी की गरदन मारी गई

और मनमथ भाग गया; फिर बहुत से लोग इस कसूर में बराबर सज़ा पाते रहे, बड़े आदमियों पर खूब जुरमाना होता था, चार्ल्स सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिये, मगर बीमार होकर ८ ही दिन में मर गया—मरने के कुछ देर पहिले उसने अपने को केथालिक माना सन १६८५ और बहुत से लोग जो उसके पास थे उन से कहा कि अब चलते चलाते हम बेइमान हो गये मगर आप लोग माफ़ कीजिये, उस के मरने पर रेआया को सच्चा अफ़सोस हुआ—

चार्ल्स बहुत खुश दिल और कुछ बद चलन भी था, माल खूब उड़ाता था—लन्डन में एक आने के टिकट पर डाक चलने लगी, अख़बार दो दल के दुशमनी से खूब चले, लन्डन गेज़ट और अबज़रवेटर दो अख़बार निकले जो अब तक जारी हैं—लन्डन के सड़कों पर उसने लालटेन लगाया मगर यह जाड़े ही में

अखती थीं-देहातों में जो लोग रहते थे वे लन्डन के रहने वालों को कुछ दिया करते थे जिसके बदले उनके पास ८ दिन की खबर एक चिट्ठी में पहुंचा करती थीं-

## दूसरे जेम्स
### १६८५-८७

भाई के मरने के १५ मिनट पीछे कौन्सिल में जेम्स बादशाह बनकर बैठा और देश के क़ानून और इंगलेन्ड के गिरजा की इज़्ज़त बढ़ाने की क़सम खाया, कुछ दिन पीछे पार-ल्यामेन्ट में भी इसने यही क़रार किया. पारल्या-मेन्ट ने १६००००० पाउन्ड साल की आमदनी उसके वास्ते मंज़ूर किया-कुछ दिन में बड़ी शान से तख़्त पर बैठा और सारे देश से एड्रेस आने लगे; पारल्यामेन्ट में ४० आदमी ऐसे थे जिनको वह पसन्द नहीं करता था-व्हाइट हाल महल में उसने रोम के गिरजे की एक बड़ी

पूजा किया जिस से केथालिक लोग अब यह सोचने लगे कि हम लोग भी चैन करेंगे-फ़ान्स की पेनशिन लेना जेम्स ने जारी रक्खा-राई हाउस के बन्दिश के लोग जो हालेन्ड भाग गये थे अब यहां आकर बखेड़ा मचाने के फेर में पड़े, आरगाइल ने स्काटलेन्ड के केन्टायर गांव में पहुंचकर अपने भाइयों से मदद मांगा, दो हज़ार आदमी ने हथियार उठाया मगर ग्लासगो पहुंचने भी न पाया था कि उसके साथी तितिर बितिर हो गये, वह पकड़ा गया और जान से हाथ धोया-उधर मनमथ ३ जहाज़ लेकर लाइम बन्दर पर उतरा, बहुत से किसान, खान के खोदने वाले और हरवाहे उससे जा मिले, टान्टन पर पहुंच कर उस ने अपने को बादशाह कहा और ब्रिसटल पर हाथ साफ़ करने को चला, २००० बादशाही फौज जिसमें चर्चहिल भी था जो पीछे से ड्यूक

मार्लबरो के नाम से मशहूर हुआ बाग़ियों से मिलने को बढ़ी और सेजमूर जगह पर इंगलेन्ड में आख़िरी लड़ाई हुई-मनमथ ने बादशाही फ़ौज को धोखा देने के ख़्याल से रात का छापा मारना चाहा और बढ़ा, आगे एक बड़ी खाई देख रुका मगर एक तमन्चा छूट जाने से बादशाही फ़ौज के कान खड़े हो गये और लड़ाई हो गई. मनमथ के साथी बड़ी देर तक बहादुरी से लड़ते रहे मगर वह भागा और खन्दक में छिपा कच्चे मटर खाता हुआ पकड़ा गया. बादशाह के हुज़ूर में जाकर पैर पर गिर कर बड़ी देर तक रोता रहा और मांफ़ी मांगा मगर उसका सिर काटा गया. अब जिन लोगों ने इसका साथ दिया उनके सज़ा देने की फ़िकिर होने लगी और करनल किरकी ने सैकड़ों आदमी को फांसी दिलाया. उसके पीछे जज जेफ़री को ख़ूनी दौरा करने

का हुकुम मिला यह जहां जाता सैकड़ों की जान लेता और इसी तरह ३२० को मौत की सज़ा मिली, वहुतेरों को इसने रूपया लेकर छोड़ दिया और वहुत से अमेरिका के टापुओं में उतार दिये गये–

अब जेम्स ने केथालिक दीन को पूरी तरह से जारी करना चाहा और जांच का क़ानून तोड़ कर वहुत से लोगों को फ़ौज और कौन्सिल में रक्खा, वहुत से प्राटेसटेन्ट लोगों ने नौकरी छोड़ दिया–एक केथालिक को जिस का नाम टालवट था और जो अर्ल टिरकोनेल कहा जाता था आयरलेन्ड का हाकिम वनाया, इसने वहां जाकर मन माने केथालिक रखकर प्राटेसटेन्ट लोगों को खूब सताया, एक मज़हवी अदालत क़ायम हुई जिस के अफ़सर जज जेफ़री थे जो अव वज़ीर हो गये थे–पहिले लन्डन के पादड़ी को तलव करके इस अदालत

सन् १६८६

ने मुअत्तल कर दिया फिर बहुत से गिरजों पर इसी तरह की आफ़त आती रही तब आक्स-फ़र्ड और केमब्रिज के कालिजों में भी बाद-शाह केथालिक रखना चाहते थे और बहु-तेरों में रख भी दिया मगर एक केथालिक पादड़ी को बादशाह ने एम–ए की सनद दिलाना चाहा और लोगों के न देने पर केमब्रिज के चेन्सेलर को मौकूफ़ कर दिया–आक्सफ़र्ड के माडलिन कालिज में एक जगह पर बादशाह ने एक केथालिक को रखना चाहा मगर वहां के लोगों ने एक दूसरे प्राटे-स्टेन्ट को रख दिया, बादशाह ने वहां से सब को निकाल दिया और उन के बदले केथा-लिक रक्खा–जिस जज, वज़ीर, अफ़सर को चाहता था निकाल कर उसकी जगह पर केथालिक रखता था. और अब सब को अपनी मन मानी पूजा करने का हुकुम दे दिया जि-

सको लन्डन के ७ पादड़ियों ने क़ानून के खिलाफ़ मानकर बादशाह को एक अरज़ी दिया—जेम्स ने उनको क़ैद कर दिया और उनपर बग़ावत का मुक़द्दमा चलाया, इस में झगड़ा इस बात पर था कि बादशाही हुकुम क़ानून के खिलाफ़ है या नहीं—इन्हीं दिनों बादशाह के लड़का हुआ लोग डरे कि यह लड़का भी अपने बाप की तरह सतावैगा और कहने लगे कि यह बादशाह का लड़का नहीं है चोरी से महल में लाया गया है—उधर अब पादड़ियों के मुक़दमे में ४ जज और ७ आदमी जूरी बनकर बैठे, जजों की राय बटी थी मगर जूरी ने सारी रात बहस करके सबेरा होते ही पादड़ियों को बेक़सूर बताया और सब छूट गये, इसपर लन्डन में बड़ी खुशी मनाई गई, सारे शहर में रोशनी हुई, उसी दिन ७ आदमी ने जिस में अर्ल डेवनशायर, डिवनशायर, श्युज़बरी और लन्डन

सन् १६८७

सन् १६८८

के पादड़ी काम्पटन थे एक चिट्ठी जेम्स के दामाद विलिअम आरेन्ज को भेजा कि आप आकर अंगरेज़ी क़ानून और प्राटेसटेन्ट दीन को बचाइये—यह मालूम होने पर भी जेम्स अपने मन मानी ही करता रहा और आयरलेन्ड से केथालिक फ़ौज लाकर रैआया को दबाना चाहता था मगर जब उसको उसके हालेन्ड के एलची ने लिखा कि इंगलेन्ड पर चढ़ने का यहां बड़े धूम से सामान हो रहा है तब इसकी आंख खुली और सब बातों को मंज़ूर करने पर राज़ी हुआ—गिरजे की अदालत बन्द हो गई पारल्यामेन्ट के बोलाने का हुकुम हुआ. बहुत से वज़ीर भी निकाले गये मगर अब लोगों का दिल फिर गया और ५ नवम्बर को विलिअम डिवनशायर में उतरा, जेम्स के अफ़सर और बड़े आदमी अब इसके पास आने लगे—बादशाह ने लड़ने के विचार से सालिसबरी मैदान में

डेरा डाला मगर जब उसकी दूसरी लड़की एन जो डेनमारक के शाहज़ादे जार्ज को ब्याही थी इसका साथ छोड़ विलिअम से जा मिली तब जेम्स ने भागना चाहा और जोरू लड़के को फ़ान्स भेजकर आप भी चला मगर एक मल्लाहे ने उसको पकड़ा और लार्ड लोगों के हुक्म से छूटकर वह लन्डन आया और फिर भाग कर फ़ान्स पहुंचा जहां लूई ने उसकी बड़ी ख़ातिर किया—उधर विलिअम ने लन्डन पहुंच कर एक कमेटी किया जिस में जेम्स के भागने से तख़्त ख़ाली माना गया और विलिअम और मेरी को उस पर बैठने की राय सब ने दिया—इन लोगों के औलाद न होने पर जेम्स की दूसरी लड़की एन और उस की औलाद वारिस हों—

सन् १६८८

## विलिअम और मेरी

१६८६—१७०२

विलिअम लड़कपन से फ़ान्स का ज़ोर

घटाने के फेर में था और इंगलेन्ड की वाद·
शाहत पाजाने से उसको इधर आंख उठाने का
अच्छा मौक़ा मिला, दमा के रोग से यह बहुत
कमज़ोर था मगर दिल का बहुत कड़ा और
निडर आदमी था—उस ने अपने पास बहुत से
डच रखकर अंगरेज़ों को नाराज़ कर दिया—
उसकी राना को टूरी लोग जो अब भी जेम्स
के मददगार थे चिढ़ाया करते थे कि तूने अपने
वाप को निकाल दिया; उधर बहुत लोग वाद·
शाह के निकालने को और भी बुरा कहते थे—
विलिअम को बादशाह मानने की क़सम ४००
पादड़ी और मास्टरों ने नहीं खाया और नौकरी
छोड़ दिया उन में ५ वे पादड़ी थे जिन लोगों
पर जेम्स ने मुक़दमा चलाया था—उसी साल एक
क़ानून निकला जिस से दरवाज़ा खुला छोड़
कर सब लोग मन मानी पूजा कर सकें· दूसरे
क़ानून से पारल्यामेन्ट का सदा जारी रहना

ठीक होगया और इस से यह तै हुआ कि बाद-
शाह पारल्यामेन्ट की मरज़ी से है—अब अंगरेज़ों
को पूरी आज़ादी मिल गई—सारे स्काटलेन्ड ने
अभी विलिअम और मेरी को नहीं माना और
वहां लोग वाइकाउन्ट डन्डी को साथ लेकर
बाग़ी होगये और किली क्रेन्की दर्रे के पास ल-
ड़ाई होने पर डन्डी तो मारे गये मगर उनके
साथी सब भागे, आयरलेन्ड में और भी बखेड़ा
था, वहां के अफ़सर टिरकोनल ने जेम्स को बो-
लाया और उसने आकर डबलिन पर हाथ मारा
उस की फ़ौज ने लन्डनडरी को घेर लिया
जिस में प्राटेसटेन्ट रहा करते थे और फ़ाइल
नदी में मोटी लकड़ी बांध कर डाल दिया जिस
से राह रुक जाय; रसद कम होने से लोग
ख़ाली करना चाहते थे मगर एक पादड़ी आ-
कर उन को सदा इस बात से मना करता
रहा—आख़िर ३ जहाज़ रसद लेकर बढ़े, एक

ने टकरा कर रास्ता साफ़ किया तब दो और भी घुस पड़े; -यह देख दुशमन हट गये, तब विलिअम ४०००० सिपाही लेकर बढ़ा और बोइन नदी के किनारे पहुंचकर अपनी फ़ौज के ३ हिस्से करके उतरने का हुकुम दिया मगर उसपार जेम्स की फ़ौज पड़ी थी और लड़ाई होने लगी–जेम्स के सवार बड़ी बहादुरी से लड़े मगर कट्टर डच से कुछ न बना सके जेम्स फिर फ़ान्स भागा टिरकोनल और एक फ़्रेन्च जनरल सेन्ट रूथ एक साल बराबर लड़ते रहे, सेन्ट आघरिम की लड़ाई में रूथ तो गोले से उड़ गये मगर लिमरिक पर हार कर जेम्स के सिपाहियों ने लड़ना बन्द किया और सुलह होकर १००००० एकड़ ज़मीन ज़ब्त होगई और १००० आइरिश भाग कर फ़ान्स पहुंचे और लूई की फ़ौज में भरती हो गये–

सन् १६९०

सन् १६९१

उधर स्काटलेन्ड के पहाड़ी सरदार बड़े ल-

ड़ाके थे उन को अपना करने को १६००० पाउन्ड अर्ल ब्रेडलबेन्न के पास भेजा गया और हर सरदार को विलिअम को बादशाह मानने की क़सम खाने को कहा गया, सब ने ऐसा किया मगर ग्लेनको के सरदार से और ब्रेड-लबेन से कुछ लेने देने में बिगड़ गई और उसने क़सम नहीं खाया, आख़िर उसने भी क़सम खाना चाहा मगर उसको आरगाइल के शरीफ़ के पास जाना पड़ा इस से एक दो दिन की देर हो गई, उसने बड़ी मुशकिल से वहां पहुंच कर क़सम खाया और अपने घर चला गया—कुछ दिन पीछे स्काटलेन्ड के गवर्नर के हुकुम से एक फ़ौज ग्लेनको पहुंची और १५ दिन वहां के रहने वालों के साथ खूब मज़े उड़ाया आख़िर एक दिन सबेरा होते ही बरफ़ पड़ रही थी लोग अभी सोकर भी नहीं उठे थे कि सिपाहियों ने मारना शुरू कर

दिया और सब को मार डाला, यह कलंक का टीका विलिअम के मत्थे से नहीं छूटा—

अब फ़ान्स से बिगड़ी और जेम्स के तख्त से उतारे जाने पर वहां के बादशाह लूई ने एक बड़ा बेड़ा सजाया और ३०००० सिपाही से इंगलेन्ड पर धावा करना चाहता था मगर लाहोग के पास उसका बेड़ा अंगरेज़ी बेड़े के सामने न ठहर सका और बरबाद हो गया; फिर तो हर साल सारे यूरप में जहां लड़ाई होती थी विलिअम प्राटेसटेन्ट की और लूई केथालिक की मदद करते थे—बराबर हारने पर भी विलिअम का नाम बढ़ता गया और उसके डर से लूई को कभी चैन नहीं मिलता था, आख़िर रिसविक की सुलह से इसको लूई ने इंगलेन्ड स्काटलेन्ड और आयरलेन्ड का बादशाह माना—इन सब लड़ाई में बड़ा ख़र्च पड़ा और तब ही से जातीय क़र्ज़ हुआ जो

सन १६९२

अब इतना बढ़ गया कि कुछ ठीक नहीं—उसी साल रानी मेरी चेचक के रोग में मर गई और छापे खाने का लैसन्स उठा दिया गया जिससे अब लिखने वालों को पूरी आज़ादी मिल गई, एक और क़ानून बना जिस से बागियों को फ़र्द जुर्म की नक़ल देकर वकील करने का अख़्तियार मिला—सिक्का बाज़ार चलन बद-माशों के चांदी काट लेने से बहुत हलका हो गया था, लेने देने में बराबर झगड़ा हुआ करता था इस से अब सरकार ने दांती दार किनारे का सिक्का चलाया जिस से अब चांदी निकाल लेने का मौक़ा किसी को न रहा—उन्हीं दिनों जेम्स के मदद गारों ने बादशाह के मारने की एक बन्दिश किया जिस से सारी जाति ने विलिअम के बचाने की क़सम खाया—

सन् १६९६

फ़ान्स से रिसविक पर सुलह होने से लड़ाई बन्द हो गई और पारल्यामेन्ट ने फ़ौज घटाने

सन् १६९७

का हुकुम दिया मगर विलिअम डच सिपाही रखना चाहता था, जब उसने कामन्स को बिलकुल नाराज़ देखा तो मान लिया और सब अपने देश को लौटा दिये गये जो ज़मीन उन लोगों ने आयरलेन्ड में पाया था वह बेच कर दाम ऐसे काम में लगे जिस से देश को फ़ायदा पहुंचे—अब वज़ीर एक आदमी न हो कर कौन्सिल होने लगी, जिस दल का ज़ोर पारल्यामेन्ट में बहुत होता था उसी के लोग वज़ीर हुआ करते थे और यह लोग जो बात आपुस में ठहराते थे वही पारल्यामेन्ट में पेश होती थी, यही बात अब तक जारी है और बराबर रहेगी—

सन १६९८

इसपेन के बादशाह बीमार थे जिन के औलाद न थी, फ़ान्स, बवेरिया और आस्ट्रिया के शाहज़ादे हक़दार थे, विलिअम ने सन् १६९८ में लूई से इस बात पर सुलह किया कि इसपेन

की राज्य ३ हिस्सों में बट जाय मगर बवेरिया के शाहज़ादे फरडिनेन्ड के मरजाने से सब बिगड़ गया और दूसरी सुलह से यह तै हुआ कि आस्ट्रिया का शाहज़ादा बादशाह हो और बाक़ी ज़मीन लूई के लड़के को मिले मगर इसपेन के बादशाह मर गये और लिख गये कि लूई का पोता वारिस हो और वह पांचवें फ़िलिप के नाम से बादशाह होगया—आस्ट्रिया के बादशाह ने लड़ाई का सामान किया और डच लोगों ने उसकी ओर होकर इंगलेन्ड से मदद मांगा मगर यहां पारल्यामेन्ट में ह्विग और टूरी का बड़ा झगड़ा बढ़ा और शाहज़ादी एन के लड़के के मरजाने से यह क़ानून निकला कि पहिले जेम्स की लड़की एलीज़ाबेथ की औलाद जो प्राटेसटेन्ट हैं और हनोवर के राजा हैं बादशाह हों—दूसरा क़ानून यह निकला कि बादशाह बिना पारल्यामेन्ट की मरज़ी के देश से बाहर

सन १७०…

सन १७०…

न जायें और जिसपर पारल्यामेन्ट मुक़द्दमा च-लावै उस को बादशाह माफ़ी न दे सकैं, उन्हीं दिनों दूसरे जेम्स के मर जाने पर लूई ने उसके लड़के को इंगलेन्ड का बादशाह मान लिया. इस बात से यहां बड़ी नाराज़ी हुई और ४०००० सिपाही और मल्लाह की मंजूरी पारल्यामेन्ट मे स्ट हो गई, मार्लबरो को अफ़सर करके विलि-अम ने फ़्लान्डर्स भेजा और खुद भी कुछ दिन में जाना चाहता था मगर घोड़े पर से गिर पड़ा गले की हड्डी टूट गई और ५४ बरस की उम्र में मर गया—

इस की रानी मेरी ने घायल सिपाही और मल्लाहों के रहने को ग्रीनविच में एक बड़ा अस्प-ताल बनवाया जो आज तक उनकी यादगार है

## एन

१७०२—१७१२

विलिअम के मरने पर दूसरे जेम्स की दूसरी

लड़की एन रानी हुई; इसका आदमी डेनमार्क का शाहज़ादा जार्ज था जो यहां ड्यूक कम्बरलेन्ड कहा जाता था और लार्ड्स में बैठने के सेवाय बादशाहत से उस से कोई मतलब नहीं था रानी अंगरेज़ थी इस से उसको सब पसन्द करते थे और सब से ज़्यादः मान सारा जेनिंग का था जो उसकी लड़कपन की साथी थी और जिसने अब चर्चहिल से अपनी शादी कर लिया था चर्चहिल पहिले तो अर्ल हुये फिर ड्यूक मार्लबरो होकर अंगरेज़ी फ़ौज के अफ़सर होगये ह्विग लोगों का ज़ोर बना रहा और फ़ान्स से इसपेन के मामले में लड़ाई होती रही, जर्मनी, आस्ट्रिया, हालेन्ड और इंगलेन्ड फ़ान्स का मुंह तोड़ने को एक हो गये और इसपेन और हालेन्ड में बराबर लड़ाई होती रही, सब की फ़ौज पर मार्लबरो अफ़सरी करते थे एडमिरल रूक ने अजीत जिबराल्टर के क़िले

सन् १७०४ पर अंगरेज़ी झन्डा गाड़ा जो अब तक फह-
राता है, यह पहाड़ी क़िला समुन्दर के बीच में है
और मेडीट्रेनिअन समुन्दर की ताली माना
जाता है-उधर मार्लबरो ने ब्लेनहीम पर जो
बवेरिया में है एक लड़ाई जीत कर फ्रान्स
को पहिली बार हराया और फिर रेमीलीज़ पर
दूसरी लड़ाई जीत कर बवेरिया और हालेन्ड
से दुश्मनों को हटाकर जर्मनी को बचा-
सन् १७०६ या-उसी साल इटाली से भी फ्रेन्च निकाले
गये और मिनारका और इविका के टापू इंग-
लेन्ड के हाथ लगे, लौट कर मालबरो ने उड-
स्टाक के पास जागीर पाया और वहां पर ब्लेन-
हीम हाउस बना जो अब तक है-फिर ओडरना
सन् १७०८ की लड़ाई में २५,००० फ्रेन्च मारे गये और
१०० झन्डा खोया और दूसरे साल मालप्लाके
की लड़ाई भी मालबरो की तरकीब से जीती
गई और फ्रान्स इतना दबा कि अब लड़ने का

सन्
१७१२

होसला छूट गया—उटरेक्ट में सुलह हुई जिस
से इसपेन और अमेरिका फ़ान्स के हाथ रहा म-
गर इसपेन और फ़ान्स मिलाये कभी न जायें,
और बाक़ी ज़मीन आस्ट्रिया के हाथ लगी—
लूई ने हनोवर खान्दान को वारिस मान लिया
और दूसरे जेम्स के लड़के को फ़ान्स से निकाल
देने का क़रार किया—अमेरिका में न्यू फाउन्ड-
लेन्ड, नोवा स्कोशिया और हडसन खाड़ी के
पास की ज़मीन अंगरेज़ों के हाथ लगी—ह्विग
और टूरी का झगड़ा जारी रहा मगर डचेज़
मार्लबरो रानी के हुज़ूर से निकाली गई और
टूरी लोग वज़ीर हुये—स्काटलेन्ड के पारल्या-
मेन्ट ने कहा कि हनोवर खान्दान को हम-
लोग अपना बादशाह न मानेंगे क्योंकि हम
लोगों के माल पर इंगलेन्ड में चुंगी लगती है
इस से सब घबड़ाये और चुंगी उठा कर दोनों
पारल्यामेन्ट मिला लिये गये, वहां के क़ानून

और गिरजा जारी रहे—टूरी लोगों ने मार्ल-
वरो पर भी रिशवत का मुकदमा चलाना
चाहा इस से उसने अपना काम छोड़
दिया, यह ड्यूक वेलिंगटन के पहिले सब से
बड़ा अंगरेज़ी जनरल था—टूरी लोग यहां तक
बढ़े कि दूसरे जेम्स के लड़के को अगर वह प्रा-
टेसेटेन्ट हो जाता तो एन के मरने पर ज़रूर
बादशाह बनाते मगर वह नहीं हुआ इन्हीं
सब बातों को सोच रहे थे कि रानी को बेहोशी
हो गई और दो दिन में मर गई—इस के १९
लड़के हुये मगर सब मर गये इस से सदा यह
उदास रहा करती थी—इस के ज़माने में एडि-
सन और पोप दो बड़े लिखने वाले हुये—

## पहिले जार्ज
## १७१४—२७

जार्ज बादशाह मान लिया गया किसी
ने सिर न उठाया मगर वह डेढ़ महीने पीछे

अपने लड़के को साथ लेकर आया, अंगरेज़ी वह नहीं बोल सकता था और पारल्यामेन्ट में जो कहना था बड़ी मुशकिल से उस को सिखाया गया—हनोवर पर ज्यादः निगाह रहने से वज़ीरों का ज़ोर बढ़ गया, टूरी निकाले गये और ह्विग लोगों को पूरा अख़्तियार दिया गया—उटरेक्ट की सुलह में पुराने वज़ीरों के चाल की जांच होने पर बालिंगब्रूक, आरमन्ड और आक्सफ़र्ड पर दूसरे जेम्स के लड़के से जिसको जाली या बनावटी कहते थे लिखा पढ़ी का मुक़दमा चलाया गया, दो तो फ़ान्स भाग गये और जाली के सलाहकार बने मगर आक्सफ़र्ड क़ैद किये गये इस पर बड़ा बखेड़ा हुआ, बहुत से लोग विलिअम की मूरत को जलाकर जार्ज को बादशाहत छीन लेने वाला कहने लगे, जहां देखो बाज़ारों में यही चरचा होता था और जाली के मददगार लोगों को उभाड़ते थे,

आक्सफ़र्ड के पढ़ने वालों ने अपनी टोपियां में पुराने ख़ान्दान के लौटने की ख़ुशी में बलूत या बांझ की पत्ती लगाया, इन सब बातों से हंगामे का क़ानून निकला कि १२ आदमी से ज्याद: अगर एक जगह पर हों और कहने पर न हटें तो उनको फ़ौज हटावे या पुलिस उनका चालान करे, फ़ौज और बेड़ा तयार रहता था और जाली के सिर लाने वाले को १००००० पाउन्ड का इनाम देने का इश्तिहार निकला—उधर स्काटलेन्ड में जाली के मददगारों ने बड़ा बखेड़ा मचाया. अर्ल मार ने १०००० आदमी जमा करके सारे पहाड़ों पर अपना क़ब्ज़ा रक्खा; नारथंबरलेन्ड के लोग भी बिगड़े और २८०० पहाड़ी उनके मदद को पहुंच गये. ड्यूक आरगाइल सरकारी फ़ौज लिये यह सब देख रहा था और नारथंबरलेन्ड के बाग़ी सरदार को ऐसा दबाया कि उसने ह-

थियार रख दिया और उसी दिन मार भी ऐसा दबा कि पीछे हट गया—उधर से जाली जेम्स भी स्काटलेन्ड खाली हाथ पहुंचा, फ़ान्स से कुछ भी मदद न मिली, यह देख उसके मददगारों के दिल छोटे हो गये और आरगाइल को आगे बढ़ते सुनकर वह फिर फ़ान्स लौट गया—यहां बाग़ी पकड़े गये जिस में से १००० अमेरिका भेजे गये और २० आदमी को सज़ा मौत हुई जिस में अर्ल डरवेन्टवाटर और लार्ड केनमूर भी थे—

सन् १७१६

देश में बड़ा हल चल हो रहा था इस से यह क़ानून निकला कि पारल्यामेन्ट ७ साल तक बैठा करै और अब तक यही होता है—अब इंगलेन्ड को स्वीडन और इसपेन से झगड़ा करना पड़ा, बादशाह जार्ज ने डेनमार्क से ब्रेमन की जागीर ख़रीद कर हनोवर में मिला लिया, स्वीडन के बादशाह उस को अपनी

कहते थे और जाली के मददगार बनकर स्काट-लेन्ड पर धावा किया चाहते थे मगर कुछ न कर सके—उधर इसपेन ने सिसिली टापू पर फिर अपनी अमलदारी जमाना चाहा जो उटरेक्ट की सुलह से इटाली को मिली थी, इसपर फिर लड़ाई हुई और अंगरेज़ी एडमिरल बिंग ने इसपेनी बेड़े का नाश कर दिया, इस पर ना-राज़ होकर इसपेन से एक बेड़ा जाली का मदद गार होकर स्काटलेन्ड पर चढ़ा मगर तूफ़ान से तबाह हो गया और कुछ लोग जो पहुंचे उन को सरकारी फ़ौज ने पछाड़ा और इसपेन को सुलह करना पड़ा—उसी साल इंगलेन्ड का क़रज़ा ५,३,०००,००० पाउन्ड देख जिस पर साल में ३.१८०.००० पाउन्ड सूद दिया जाता था लोगों के कान खड़े हुये क्योंकि उन दिनों सरकारी मालगुज़ारी और सब तरह की आमदनी मिला कर ८.०००,००० पाउन्ड साल

होता था—इंगलेन्ड बेंक और उत्तरी समुन्द्र कम्पिनी ने क़रज़ा अदा करने की तद्बीर निकाला और सरकार का क़रज़ा २६ साल में अदा करने का क़रार करने पर इन लोगों को अमेरिका में कार बार करने का इजारा मिला. लोगों ने बड़ा फ़ायदा सोचा क्योंकि कम्पिनी ने ५०) सैकड़ा मुनाफ़ा देने कहा, सब ने सरकारी कागज़ बेचकर इसके हिस्से लिया और यहांतक लोग पगलाये कि १००) का हिस्सा १०००) को बिकने लगा मगर थोड़े ही दिनों में उनकी कोठी उठ गई और हज़ारों आदमी कंगाल होगया—तब राबर्ट वालपोल वज़ीर हुआ और उसने इस नुक़सान को इंगलेन्ड बेंक, इस्टि इन्डिया कम्पिनी और सरकार में बांट दिया, मगर वालपोल को बड़ी मुसीबत झेलना पड़ा, उन्हीं दिनों जाली जेम्स के लड़का हुआ और लोग फिर पुराने बादशाही

खान्दान की ओर देखने लगे. और फ्रान्स के वली ड्यूक आरलिअन्स से मदद मांगा मगर उसने यह भेद अंगरेज़ी सरकार को बतला दिया और लोगों ने सज़ा पाया–पारल्यामेन्ट में खूब घूस चलती थी और लार्ड मेकिल्सफ़ील्ड पर मुक़दमा चलाकर ३०००० पाउन्ड जुरमाना हुआ और जबतक उसने यह रक़म नहीं दिया बुर्ज़ में क़ैद रहा—

सन ७२७

जार्ज हनोवर जा रहा था: राह में गाड़ी पर उसको चक्कर आया और मर गया–इस से अंगरेज़ खुश नहीं थे. मगर यह प्राटेसटेन्ट था और पारल्यामेन्ट की मरज़ी से चलता था इससे उसका काम चल गया. उसने अपनी रानी से बड़ी बेरहमी का बरताव किया. ४० साल उस को एक क़िले में क़ैद रक्खा जहां उसकी औ- लाद भी नहीं जाने पाती थी. उस ने उस के लड़के से भी नहीं बनती थी जो पीछे से दूसरा

जार्ज हुआ—इस वादशाह के ज़माने में सब से वड़ी वात यह हुई कि चेचक का टीका जारी हुआ जो उन दिनों क़ैदी लोगों पर आज़-माया जाता था, और छापे के हरफ़ भी ढाले जाने लगे—

## दूसरे जार्ज

१७२७–६०

दूसरा जार्ज भी विलकुल अपने वाप की तरह था हां यह अंगरेज़ी ज़रूर वोल सकता था, उसकी रानी वड़ी चतुर और पढ़ी लिखी थी, वालपोल वज़ीर वने रहे और इंगलेन्ड को सुलह में रखकर अपनी हुकूमत जारी रखना चाहते थे—इस्ट इन्डिया कम्पिनी को दूसरा पर-वाना दिया गया और उन से २००००० पाउन्ड नज़र में मिला, एक चुंगी का क़ानून निकला जिससे माल पर चुंगी कारख़ाने ही में ले ली

जाय क्योंकि वहुत सा माल विना चुंगी के
दिये विक जाता है. इस पर वहुत वखेड़ा मचा
और क़ानून उठा लिया गया—एडिनवरा में
एक वदमाश ने एक क़ैदी को जेल से भगा
दिया: उसको सज़ा मिलने पर रेझाया कि
गड़ गई और सिपाहियों को गोली चलाना
पड़ा जिससे कई आदमी मरे. इस बात पर
विचारे कपतान पोरटिअस को फांसी का हुकुम
हुआ मगर लन्डन अपील होने पर लोगों ने
समझा कि यह छूट जायगा। और रात को उसे
जेल से निकाल कर एक रंगरेज़ के वांस पर
लटका दिया. सरकार को वड़ी नाराज़ी हुई
और एडिनवरा की शहर पनाह तोड़ने और
परवाना ज़ब्त करने का हुकुम हुआ. यह तो
पारल्यामेन्ट से पास नहीं होसका मगर उन
लोगों का दिल इंगलैन्ड से फिर गया—
अमेरिका की वहुत सी ज़मीन इसपेन के

अमलदारी में थी और इसपेनी खूब मालदार होरहे थे, अंगरेज़ी जहाज़ भी वहां जाकर चोरी से अपना माल बेचते थे अगर पकड़े जाते तो सज़ा पाते थे, इसपेनी अब सब अंगरेज़ी जहाज़ों की तलाशी लेने लगे इस से लड़ाई हो गई, एक शहर तो झट अंगरेज़ों के हाथ लगा मगर करनल वरनन और लार्ड वेन्टवर्थ कारथेगेना शहर लेने को चले मगर आपुस में अफ़सरों की फूट से कुछ न कर सके तब फिर बेड़े में बीमारी फैली और हज़ारों आदमी मर गये— अब एनसन करनल वरनन की मदद को एक बेड़ा लेकर चला और कारथेगेना तो न ले सका मगर दुनिया का चक्कर लगाकर इंगलेन्ड अकेला जहाज़ लेकर लौटा और राह में एक इसपेनी जहाज़ लूट कर ३००००० पाउन्ड लाया, लोग इस से बहुत खुश हुये और एनसन पीछे से लार्ड बनाये गये—

वालपोल ने इन्हीं दिनों सब काम छोड़
दिया और अर्ल आक्सफ़र्ड होकर लार्ड्स में
बैठने लगा और पेलहम वज़ीर हुआ—आस्ट्रिया
के बादशाह के मरने पर वहां लड़ाई हुई
उसने अपनी लड़की मेरिया थेरिसा को अपना
वारिस किया जो टस्कनी के ड्यूक स्टीफ़िन को
व्याही थी, उस के तख़्त पर बैठते ही हंगरी,
जर्मनी और फ़ान्स उस से लड़ गये तब इंग-
लेन्ड को उस की मदद करना पड़ा—जार्ज खुद
फ़ौज लेकर गया और फिर इसके पीछे अंगरेज़ी
बादशाह फ़ौज के साथ कभी नहीं गये—आ-
खिर सन् १७४५ में ड्रेसडन की सुलह से स्टी-
फ़िन बादशाह माना गया और लड़ाई बन्द हुई
फ़ान्स और इसपेन के उभाड़ने से छोटा
जाली जो बड़े जाली का लड़का था ७
आदमी लेकर स्काटलेन्ड पहुंचा, बहुत से
पहाड़ी सरदार उसकी ओर हो गये और २०००

आदमी को साथ लेकर एडिनबरा पहुंचा और होलीरूड महल में ठहरा—उधर सर जान कोप सरकारी फ़ौज लेकर बढ़े और प्रेसटनपान्स पर लड़ाई होगई. पहाड़ियों ने अपनी चौड़ी तलवारों से अंगरेज़ों को घास की तरह काट डाला और अगर छोटा जाली जिसका नाम चार्ल्स था उसी दिन लन्डन की ओर आंख उठाता तो ताज मिलने में आसानी होती मगर ५००० आदमी जमा करने में उसको डेढ़ महीना लग गया और बीच में स्काट लोगों के खुश करने को बराबर रात को महल में नाच होता था, हज़ारों औरतें उसके खूबसूरती पर दीवानी थीं और मीठा बोलकर उसने सब को अपना बना लिया था—उधर लन्डन में फ़्लान्डर्स से भी फ़ौज आई और बादशाह के दूसरे लड़के ड्यूक कम्बरलेन्ड ने भी एक अच्छी फ़ौज सजाया, ३ दिन में छोटे जाली ने कारलाइल

ले लिया और फिर मेनचेस्टर पहुंचा मगर लोग किसी जगह उसकी ओर न हुये. ४ दिसम्बर को डरबी पहुंचा मगर सरदारों के आपुस की फूट से आगे न बढ़ सका और सभों ने पीछे हटने की सलाह दिया. लौटते हुये फलकर्क जगहपर सरकारी फ़ौज को हराते स्काटलेन्ड पहुंचा, आखिर कोलोडन पर ड्यूक कम्बरलेन्ड ने उस को खूब पछाड़ा और वह भागा उसके सिर लाने वाले को ३००00 पाउन्ड का इश्तिहार निकला मगर किसी ने यह न किया. ५ महीने जंगल पहाड़ों में घूमता और हर तरह की तकलीफ़ उठाता रहा आखिर एक फ्रन्च नाव पर चढ़कर भागा—

सन १७४६

यहां ८० आदमी को उस का साथ देने के क़सूर में फांसी हुई जिस में कई स्काटलेन्ड के लार्ड भी थे. पहाड़ी सरदारों के बहुत अख्तियार ले लिये गये—जार्ज फिर गर्म

पहुंचा और ड्यूक अलवनी के नाम से वहां बहुत दिन रहा पीछे से शराब बहुत पीने लगा और सन् १७८८ में मरा, १६ साल पीछे उसका भाई हेनरी भी मर गया और रूम के सेन्ट पीटर गिरजे में अब भी ३ क़ब्र हैं जिन पर तीसरे जेम्स और चार्ल्स और नवें हेनरी के नाम लिखे हैं मगर इन लोगों का नाम इंगलेन्ड के बादशाहों के साथ कहीं नहीं पाया जाता—हेनरी आखिर में पादड़ी होकर कारडिनल यार्क के नाम से रहा और उस के मरने पर स्टुआर्ट खान्दान का चिराग़ गुल हुआ, मगर छोटे जाली के कोलोडन पर हारने के पीछे फिर कभी इस खान्दान ने हाथ से निकली हुई बादशाहत के लेने की तदबीर नहीं किया—इन्हीं दिनों ए ला चेपेल की सुलह से आस्ट्रिया में लोगों ने जीती हुई ज़मीन फेर दिया और वहां भी अमन होगया—इंगलेन्ड के सन १७४८

प्रोटेसटेन्ट वारिसों को सभों ने मान लिया और जाली फ्रान्स से निकाल दिया गया. इसके पीछे हेनरी पेलहम कई वरस और जीता रहा और इमान दारी से काम किया आखिर मर गया और उसका भाई ड्यूक न्यूकासिल वज़ीर हुआ—

सन १७५४

अब फ्रान्स से लड़ाई हुई जो ७ साल जारी रही और इस लड़ाई के वन्द होने से सारी दुनिया में अंगरेज़ वस गये—मिनारका टापू पर फ्रान्स वेड़ा चढ़ा और अंगरेज़ी एडमिरल विंग अपनी फ़ौज कम देख हट गया और वहां दुशमनों का क़ब्ज़ा होगया. इस से विंग पर मुक़द्दमा हुआ और उसको गोली मारी गई. ड्यूक न्यूकासिल ने अपना काम छोड़ा और ड्यूक डिवनशायर वज़ीर हुये, विलिअम पिट सिक्रेटरी सिक्रेटरी हुआ—यह वड़ा चतुर और इमानदार था. ड्यूक कम्बरलेन्ड के कहने से यह निकाला गया

सन १७५६

मगर लोगों की नाराज़ी से बादशाह को फिर पिट को बोलाना पड़ा, और उस के बन्दोबस्त से बहुत लड़ाई जीत कर इंगलेन्ड का नाम बढ़ गया—हिन्दुस्तान में डच, फ्रेन्च, पोर्चुगीज़ और अंगरेज़ सब लोग रोज़गार करते थे मगर फ्रेन्च सारे देश को अपना किया चाहते थे और उन का अफ़सर डूपले देशी राजा और नवाबों से मिलकर अंगरेज़ों को निकालने के फेर में था मगर क्लाइव की तदबीर और चतुराई से उसको हारकर घर लौटना पड़ा और वहां क़ैद में मरा, इस से सारा मदरास अंगरेज़ों के हाथ लगा; फिर इसके पीछे बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला से लड़ाई हुई और पलासी के मैदान में नवाब के वज़ीर की दग़ाबाज़ी से अंगरेज़ जीत गये और थोड़े ही दिनों में शाह आलम बादशाह ने उन को बंगाल की दीवानी की सनद दिया—

सन् १७

अब अमेरिका में भी फ़्रेन्च और अंगरेज़

दोनों रहते थे और सरहद पर क़िला बनाकर फ़ेन्च लोग अंगरेज़ों के हाथ से उन का रोज़गार बन्द किया चाहते थे, पहिले सन् १७५९ में अंगरेज़ हार चुके थे, और केनेडा में मारक्विस मान्टकाम फ़ेन्च गवरनर थे—अंगरेज़ी जनरल एमहर्स्ट और जानसन लड़कर फ़ेन्च को दबा रहे थे कि इंगलेन्ड से ८००० सिपाही लेकर जनरल उल्फ़ चला और क्वेबक के सामने मान्टकाम को १२००० सिपाही के साथ पड़ा देख अपनी फ़ौज के २ टुकड़े कर २ ओर से चलाया मगर पीछे हटना पड़ा—इस से उल्फ़ को बोखार आगया मगर अच्छा होते ही उसने एक चाल खेला जो चलगई. उसने सब फ़ौज को फिर एक में मिलाया और अपने बेड़े की ओर चला, रातको किश्तियों पर पहाड़ी सिपाही लेकर वह क्वेबक के पास एक खोह में पहुंचा जहां से चुप चाप सब को उतार आगे

बढ़ा और एक फ़ेन्च संत्री की जान लेकर मु-
शकिल से ऊपर चढ़ा, सवेरा होते ही ५००० अं-
गरेज़ क्वेक के ठीक सामने देख पड़े—फ़ेन्च के
होश उड़गये और मान्टकाम की तदवीर सब
मिट्टी में मिल गई, दोनों ओर के लोग बड़ी
बहादुरी से लड़े, उल्फ़ और मान्टकाम दोनों मारे
गये और अंगरेज़ों की जीत रही—फिर सब अं-
गरेज़ी फ़ौज मान्टरिअल क़िले के सामने पहुंची
और वहां के अफ़सर ने १६००० अंगरेज़ सामने
देख क़िला ख़ाली कर दिया और सारा केनेडा
इंगलेन्ड के हाथ लगा—

सन १७५

सन १७६

इस सब ख़ुशी में जार्ज मरगया, उसका
लड़का प्रिन्स आफ़ वेल्स क्रिकेट के गेंद से
चोट खाकर सन् १७५१ में मर चुका था इस
से उसका पोता वारिस हुआ, इसके ज़माने में
ब्रिटिश अजायब घर की सन् १७५३ में नीव
डाली गई और इंगलेन्ड में पहिली नहर सन्

१७५८ में बनी-जार्ज अपने बाप की तरह था, अपने लड़के से सदा बिगाड़ ही रखता और हनोवर की इज्ज़त बढ़ाना इसको भी पसन्द था-

## तीसरे जार्ज

१७६०–१८२०

तीसरे जार्ज यहीं पैदा हुये और अंगरेज़ी पढ़ाई होने से वह विदेशी नहीं मालूम होते थे. एक साल पीछे उसने जर्मनी की एक शाह ज़ादी से शादी किया. उनके पुराने उस्ताद ब्यूट की अब बड़ी चलती हुई पिट और न्यू-कासल की एक राय न होने से दोनों को अपना काम छोड़ना पड़ा और ब्यूट तुरन्त वज़ीर हुये—इसपेन, फ्रान्स और नेपुल्स सब एक खान्दान के थे और वह सब आपुस में सुलह कर रहे थे. पिट को यह मालूम होगया

और उसने लड़ाई छेड़ने की सलाह दिया मगर उसकी न चली और उसने काम छोड़ दिया—बादशाह उस से ऐसा मीठा बोला कि उसके आंख में आंसू आगये और ३००० पाउन्ड साल की पिनशिन ३ पुश्त को मंजूर कर लिया, उसकी जोरू काउन्टेस होगई, इसपर रैआया ने बड़ी नाराज़ी देखाया और ब्यूट को अपनी गाड़ी के चारों ओर भाड़े के आदमी रखना पड़ता था, आखिर पिट ने जो कहा था वही हुआ, इसपेन ने लड़ाई छेड़ा मगर हवाना और मनिल्ला खोया, फ़ान्स ने भी बहुत से अमेरिका के टापू खोया, पारिस में सुलह हुई और ७ साला लड़ाई बन्द हुई—पिट इस सुलह को बुरा कहने लगा और ब्यूट गुरू को जो अब अर्ल होगये थे काम छोड़ना पड़ा और ग्रेन भाइल वजीर हुये—बादशाह ने पारल्यामेन्ट बन्द होने पर सुलह को अच्छा कहा इसपर एक आदमी जान विलक्स

ने जो एक अख़बार निकालता था बादशाह को झूठा लिखा, वह पकड़ा गया मगर पारल्यामेन्ट का मेम्बर होने से छोड़ दिया गया और १००० पाउन्ड हरजे का पाया, यह सब होने पर भी वह पारल्यामेन्ट और देश से निकाला गया-४ बरस पीछे वह लौटा और मिडिलसेक्स के लोगों ने उसको अपना मेम्बर बनाकर भेजा मगर वह बैठने न पाया और दो साल क़ैद रहा. बड़ा हंगामा मचा उसकी तसवीर ख़ूब बिकी और बादशाह को अरज़ी दी गई की कामन्स अब रैआया की तरफ़ दारी नहीं करते जो उनका काम है इस से पारल्यामेन्ट बन्द हो जाना चाहिये, उधर एक अखबार में गुम नाम चिट्ठी निकलने लगीं जिस से बादशाह और वज़ीर पर अच्छी बौछार पड़ी-४ बार विलक्स को लोगों ने मेम्बर किया मगर वह बराबर निकाला गया आख़िर लन्डन शहर का मेअर ( कोतवाल ) होने पर मिडिल-

सन् १७६४

सेक्स वालों ने फिर उस को भेजा और सन् १७७४ में वह बैठने पाया—

ग्रेनवाइल ने सात साला लड़ाई के ख़र्च को पूरा करने के वास्ते अमेरिका के वास्ते एक स्टाम्प का क़ानून जारी किया जिस से वहां की सब नई बस्ती के लोग अदालत में पेश होने के कागज़ पर टिकट लगावैं, वहां वालों ने कहा कि पारल्यामेन्ट में हम लोगों के मेम्बर नहीं हैं इस से बादशाह को हमारे ऊपर किसी तरह के टेक्स लगाने का अख़्तियार नहीं है हां हमलोग अपनी मरज़ी से बादशाही ख़ज़ाने में कुछ दिया करैंगे—ग्रेनवाइल ने काम छोड़दिया और मारकिस राकिंघम ने वज़ीर होकर स्टाम्प का क़ानून उठा दिया मगर बहुत सी चीज़ों पर टेक्स जारी रहा, अब ड्यूक ग्रेफ़टन वज़ीर हुये मगर पिट जो अर्ल चेथम हो गया था टेक्स को बुरा कहता रहा और उसकी

सन् १७६५

६८ बात न मानी जाने पर उसने कामछोड़
दिया, कुछ दिनों में ड्यूक ग्रेफ़टन ने भी काम
सन १७७० छोड़ा और लार्ड नार्थ वज़ीर हुये, उधर अमे-
रिका की वस्तियों में वरावर लोगों की नाराज़ी
वढ़ती जाती थी और हर जगह कमेटी होती
सन १७७३ थी, एक जहाज़ चाह वोसटन वन्दर में पहुंची
जिसपर टेक्स था, २० आदमी जहाज़ पर
रातको चढ़गये और चाह के डब्बों को खो-
लकर माल समुन्दर में वहा दिया. सरकार को
वड़ी नाराज़ी हुई और वोसटन वन्दर वन्द कर
दिया गया. तव सव वस्तियों ने मिलकर वाद-
सन १७७४ शाह को अरज़ी भेजा कि हम लोगों पर से
वेजा टेक्स उठा दिया जाय मगर वहां कौन
सुनता था—अर्ल चेथम और वर्क दोनों यही कहते
थे कि थोड़ी सी वात के वास्ते एक होनहार
देश को अलग कर देना वड़ी भूल है मगर व-
ज़ीर लोगों ने एक न सुना और २० साल की

लिखा पढ़ी के पीछे लड़ाई होगई—१६ अपरेल सन् १७७५ को कुछ बन्दूक वाले अमेरिकन्स ने एक अंगरेज़ी छोटी फ़ौज पर जो कुछ लड़ाई का सामान लूटने जाती थी छापा मारा, मई के महीने में २०००० अमेरिकन्स ने बोसटन बन्दर की राह बन्द करलिया जहां अंगरेज़ी जनरल गेज १००० आदमी लिये पड़े थे—बोसटन के सामने दो पहाड़ी हैं जिन पर अमेरिकन्स अपना क़ब्ज़ा करके उसी पर से लड़ना चाहते थे, जनरल गेज को सोच विचार में देर होगई १२०० दुशमन निगाह बचाकर उसपर चढ़गये और खाई खोद लिया, गेज ने ३००० सिपाही दुशमन के हटाने को भेजा यह लोग बहुत मारे गये और गोली बारूद कम होने से दुशमन तो हट गये मगर अंगरेज़ों को यह सिखा दिया कि हमलोग भी आदमी हैं—इसके दो दिन पहिले फ़िलेडलफ़िया में कांग्रेस कर के लोगों ने जार्ज

वाशिंगटन को जनरल बनाया, वह बो-
सटन आया, उस के साथी सब मामूली लोग
थे जो क़वायद बिलकुल नहीं जानते थे औ
न उन के पास काफ़ी गोली बारूद और माल
था मगर वे अपनी आज़ादी के वास्ते लड़ रहे
थे इस से उन के दिल बड़े मज़बूत थे-कुछ
दिन पीछे अमेरिकन जनरल मान्टगोमरी औ
करनल आरनल्ड ने केनेडा पर धावा किया
मगर हटना पड़ा और मोन्टगोमरी मारे गये
इन्हीं दिनों १७००० फ़ौज जर्मनी से अंगरेज़ों
की मदद को पहुंची और अब सब मिला कर
५५००० आदमी होगये-

जनरल गेज़ बदल दिये गये और उनकी जगह पर जनरल हो आये मगर उनको अमे-
रिकन तोपों की बौछार से बोसटन छोड़ देना
पड़ा; और ४ जुलाई को फ़िलेडलफ़िया में
कांग्रेस ने आज़ादी का इश्तिहार जारी किया

जिस से अमेरिका की १३ नई बस्ती इंगलेन्ड
से अलग हो गई—अगस्त में जनरल हो ने न्यु-
यार्क पर क़ब्ज़ा कर लिया और वहां अंगरेज़ी
झन्डा फहराने लगा, तीसरी बार लड़ाई होने
पर अमेरिका को फ्रान्स से पूरी मदद मिली,
मगर फ़िलेडलफ़िया पर क़ब्ज़ा हो जाने से
इंगलेन्ड में जीत की उम्मैद थी कि जनरल
वरगोइन को केनेडा से आते दुशमनों ने
ऐसा घेरा कि उस बिचारे को हथियार रखना
पड़ा और कुल सामान उनके हाथ लगा, दूसरे
साल हो भी हटाये गये और सर हेनरी क्लिन्टन
ने फ़िलेडलफ़िया छोड़ दिया—इन्हीं दिनों अर्ल-
चेथम बहुत कमज़ोर होजाने पर भी लार्ड्स में
जाकर लकड़ी के सहारा से खड़ा होकर अ-
मेरिका के टेक्स बन्द करने और फ्रान्स से लड़ने
को कह रहा था और गिर पड़ा, लोग उसको
उठाकर घर लेगये मगर थोड़े ही दिनों में वह

मर गया—लड़ाई जारी रही, क्लिन्टन ने चार्ल्स
टन पर क़ब्ज़ा कर लिया और अमेरिकन
करनल आरनल्ड अंगरेज़ों से मिल कर
बादशाही फ़ौज में जनरल किया गया—मेजर
एन्डरी यह सब भेद जानता था जिस को वा
शिंगटन के सिपाहियों ने पकड़ा और फांसी
लटकाया, लार्ड कार्नवालिस यार्क टाउन
में घेरे गये और ७००० आदमियों को हथियार
रखना पड़ा, थोड़े दिनों में १३ बस्तियों की
आज़ादी इंगलेन्ड ने मंज़ूर कर लिया और वहां
पंचाइती राज्य होगई और हुकूमत करने को
एक सभापति या प्रेसीडिन्ट चुना जाने लगा—

सन् १७८२

सन् १७८३

ऊपर लिख चुके हैं कि फ़ान्स ने अमेरिका
की मदद किया था अब इसपेन और हालेन्ड
भी फ़ान्स से मिल गये थे. उधर रूस, स्वीडन
और डेनमार्क मिलकर लड़ने को तयार थे— यह
लोग लड़ाई के दिनों में भी हर बन्दर में बिना

रोक टोक जाना चाहते थे और इंगलेन्ड के जहाज़ समुन्दर में सब के जहाज़ों को रोकते थे और लड़ाई का सामान ज़ब्त कर लेते थे, फ़ान्स और इसपेन साढ़े तीन साल जिब-रालटर को घेरे रहे मगर जनरल इलिअट की बहादुरी से जिसको पीछे से लार्ड हीथफ़ील्ड का ख़िताब मिला कुछ न कर सके और आख़िर दुशमनों को बड़ी हार देखकर हटना पड़ा—

सन् १७८० में लन्डन में बड़ी भारी बग़ावत हुई जिसके सरदार लार्ड गारडन थे, कुछ क़ानून जो केथालिक लोगों के ख़िलाफ़ थे बदले गये इस से इसने प्राटेसटेन्ट दीन की बेइज्ज़ती स-मझा, ७ दिन तक लन्डन बाग़ियों के हाथ में रहा, उन लोगों ने जेल तोड़कर क़ैदियों को छोड़ दिया और रेआया को ख़ूब लूटा, उन दिनों पुलिस क़ाफ़ी न होने से बड़ी दिक़्क़त हुई

जो वर्क़ ने सुनाया था आजतक अंगरेज़ी ज़-
बान की बहुत अच्छी लिखावट समझी जाती
है; आख़िर वह छूट गया मगर कंगाल होकर
अपने घर में रहने लगा और ४००० पाउन्ड
साल की पिनशिन कम्पिनी से पाता रहा
जिसके पीछे लार्ड कार्नवालिस गवरनर हुआ
इसने टीपू सुलतान की आधी अमलदारी छीन
लिया; फिर मारक्विस वेलेसली आये उन्होंने
टीपू का नाश करके फिर से पुराने हिन्दू राजा
को मैसूर की गद्दी पर बैठाया, ४ साल पीछे
सन् १८०३ में लार्ड लेक ने मरहठों को जिन
का दिल्ली पर क़ब्ज़ा होगया था हराया और
अन्धे बादशाह कम्पिनी से पिनशिन पानेलगे-

यूरप में अठारहवीं सदी की सब से बड़ी बात
फ़ान्स की थी जो सन १७८६ में उमड़ कर
१७६५ में मिटी—इसका सबब वालटेर और
रोसियो की लिखावट; अमीरों का ग़रीबों

को सताना और बादशाही दरबार में फ़ज़ूल
खर्चों से देश में रुपये की कमी कहे जाते हैं-
एक सभा क़ायम करके रैयाया ने बेसटाइल के
क़िले को उड़ा दिया और बादशाह सोलहवें लूई
और उनकी रानी की जान ले डाला और सारे
फ़्रान्स में खून की नदी बह निकली. आस
पास की बादशाहत में हलचल मची. इंगलेन्ड
में भी इसका असर पड़ता मगर सन् १६८८ के
पीछे रैयाया को बहुत आज़ादी मिल चुकी थी
इस से बहुत लोग उन्हें थे—सन् १७९१ में एक
क़ानून निकला जिस से कनेडा के दो हिस्से
हो गये और सन १७९२ में फ़्रान्स में पंचायती
राज्य हो जाने पर इंगलेन्ड में लड़ाई छिड़
गई—हॉलेन्ड, स्पेन, आस्ट्रिया और प्रशिया
या जर्मनी भी फ़्रान्स से लड़ गये—यह लड़ाई
२२ साल जारी रही. टोलोन क़िला पर अंगरेज़ी
जहाज़ों ने क़ब्ज़ा कर लिया मगर फ़्रान्स वालों

ने जलदी ही उनको निकाल दिया इस से यह जान पड़ा कि इतने हल चल पर भी उन की हिम्मत बढ़ती जाती है—इस लड़ाई में तोप खाने के एक छोटे कारसिकन अफ़सर ने जिसका नाम नेपोलिअन बोनापार्ट था बड़ी बहादुरी देखाया—दूसरे साल लार्ड हो ने कारसिका ले लिया, हालेन्ड से अंगरेज़ों को फ़ेन्च ने निकाल दिया, इसपेन फ़ान्स से मिल गया और जर्मनी ने भी सुलह कर लिया—अब इंगलेन्ड अकेला रह कर भी लड़ना चाहता था और रूस और आस्ट्रिया से सुलह कर लिया—उसी साल इसपेन ने इंगलेन्ड से लड़ाई छेड़ दिया, पारल्यामेन्ट में कुछ लोग सुलह करना चाहते थे क्योंकि क़रज़ा बहुत बढ़ गया था मगर फ़ान्स ने सुलह नामंजूर किया—अंगरेज़ों को यह बड़ी मुसीबत का ज़माना था, इंगलेन्ड बैंक ने नगद रुपया देना बन्द कर दिया और छोटे नोट जारी

सन १७

किया, पिट ने एक क़ानून निकाला जिस से एक पाउन्ड से ज़्यादे नगद बेंक न दे, उधर सरकारी बेड़े में मल्लाह लोगों ने बग़ावत कर दिया, वे ज़्यादे तनख़ाह और अच्छा खाना मांगते थे, आख़िर यह लोग दबाये गये, आयरलेन्ड में आग भड़क कर अब फूटने वाली थी, दो जहाज़ी लड़ाई जीतने से कुछ अमन ज़रूर हो गया— फ़रवरी में एडमिरल जरविस और कपतान नेलसन ने २१ जहाज़ साथ लेकर सेन्ट विनसेन्ट की लड़ाई में २२ इसपेनी जहाज़ों को हटाया और अक्तूबर में एडमिरल डंकन ने केम्परडाउन गांव के पास हालेन्ड के बेड़े को तितिर बितिर कर दिया—उधर आस्ट्रिया को नेपोलिअन ने हराया और कुछ दिन को उसको बेकाम कर दिया—

१८ साल तक यूरप का हाल नेपोलिअन की कथा है: फ़ान्स में उसने गोलियों की बौछार

से एक महल पर क़ब्ज़ा करके फ़ौजी हुकूमत जारी किया और उसी साल शादी करने पर अपनी जोरू की मदद से इटाली में फ़ौज का अफ़सर होकर गया और वहां अपनी चालाकी से एकही लड़ाई में आस्ट्रिया को बेकाम करडाला, थोड़े ही दिनों में सारी फ़्रेन्च फ़ौज का अफ़सर बनकर आस पास के देशों को लूटता मारता सन् १८०४ में फ़ान्स का बादशाह बन गया—अब नेलसन का भी कुछ हाल लिखना ज़रूरी है क्योंकि नेपोलिअन इस से बहुत डरता था और यह इंगलेन्ड का सब से बड़ा एडमिरल माना जाता है, अब भी लन्डन के ट्राफेलगर मुहल्ले में इसकी यादगार में एक खंभा खड़ा है जहां छोटे बड़े सब जाकर फूलों के हार से उसको सजाते हैं—यह एक पादड़ी का लड़का था और रोगी रहा करता था, इसके चचा ने इसको जहाज़ पर भेजा और वहां उसने ऐसे

काम किया कि कपतान होगया—आख़िर इस को बादशाह ने लार्ड बनाया—

नेपोलिअन एक बड़ा बेड़ा और फ़ौज लेकर टोलोन से चला, राह में मालटा का टापू लेता हुआ एलेगज़ेन्ड्रिया पहुंचा और केरो में पहुंचकर मामलूक लोगों को हराया—नेलसन भी उसके पीछे चला और नेपोलिअन के बेड़े को नील नदी की लड़ाई में बेकाम कर दिया, शामको लड़ाई शुरू हुई और सवेरे बन्द हुई १७ फ़्रेन्च जहाज़ों में से ६ नेलसन के हाथ लगे दो जल गये और ४ भागे, इससे नेपोलिअन की फ़ौज अब मिश्र देश की बालू में क़ैद होगई मगर यह बहादुर आदमी कभी बे काम नहीं बैठता था. रेत में से निकलता हुआ पेलेसटाइन पहुंचा और जफ़्फ़ा के शहर को उड़ाकर एकर क़िले को घेरा, तुरकी अफ़सर क़िला ख़ाली करने को तैयार था मगर सर सिडनी

सन् ७९८

स्मिथ एक छोटा अंगरेज़ी बेड़ा लेकर पहुंचा और गोली बारूद से मदद देकर ऐसी बहादुरी देखाया कि दो महीने घेरकर गोला मारने पर भी कुछ न बनी और फ़्रेन्च फ़ौज को मिश्र लौटना पड़ा—उधर पारिससे कुछ गरम ख़बर मिलने पर नेपोलिअन चल दिया और उसकी दिल टूटी फ़ौज को अंगरेज़ों ने तितिर बितिर कर दिया मगर उनका अफ़सर सर रेल्फ़ एबरक्रोमबी मारा गया—

सन
१८०

आयरलेन्ड की आग आख़िर भड़क गई और कई जगह लोगों ने सिर भी उठाया, ६०० फ़्रेन्च सिपाही भी उनकी मदद को आये मगर जनरल् लेक ने सब को दबाया, तब यह जान पड़ा कि अब इस टापू को पूरी तरह से मिलाना चाहिये और बहुत हुज्जत और बखेड़ा होने पर ३२ लार्ड और १०० कामन्स को आयरलेन्ड से आकर पारल्यामेन्ट में बैठने का हुकुम हुआ—

पिट ने कहा कि आयरलेन्ड का मिलाना और भी पक्का होगा अगर केथालिक लोगों को भी पारल्यामेन्ट में बैठने और सरकारी बड़े कामों पर होने का हुकुम हो मगर बादशाह ने इस बात से कान फेर लिया और पिट ने काम छोड़ दिया—अब हेनरी एडिंगटन वज़ीर हुये—

नेपोलिअन फ़ान्स लौटते ही फ़ौजी हुकूमत का अफ़सर बनगया और अपनी अमलदारी को मज़बूत करने की फ़िकिर में पड़ा. उसने इंगलेन्ड के बादशाह को सुलह के वास्ते लिखा मगर पिट ने नामंज़ूर करके दूसरी बार रूस. आस्ट्रिया. टरकी और नेपुल्स से सुलह कर लिया और लड़ाई जारी रही. ३६००० आदमी लेकर नेपोलिअन आस्ट्रिया पर चढ़ गया और दो लड़ाइयों में ऐसा हरगया कि आस्ट्रिया को फ़ान्स की शर्तों पर सुलह करना पड़ा—उधर उसने रूस को भी उस जमघट से अलग करलिया—

मालटा टापू फिर अंगरेज़ों ने ले लिया जिसको ज़ार पाल इस वास्ते लिया चाहते थे कि वहां के रहने वालों के वे गुरू थे—दूसरी नाराज़ी उसको यह थी कि अंगरेज़ लड़ाई के सामान के वास्ते सब जहाज़ों की तलाशी लेते थे, इस बात के रोकने को उसने जर्मनी, स्वीडन और डेनमार्क से सुलह कर लिया, मगर ज़ार पाल को बागियों ने मारडाला और उनके लड़के एलेगज़ेन्डर ने इंगलेन्ड से सुलह करलिया—उधर सर हाइड पारकर और नेलसन २८ जहाज़ लेकर डेनमार्क पर चढ़गये और कोपेनहेगन पर गोला मारने लगे, डेन्स ने भी खूब गरमी से जवाब दिया इसपर पारकर ने लड़ाई बन्द करने का निशान अपने जहाज़ पर उड़ाया मगर नेलसन ने अपनी अन्धी आंख पर दुरबीन लगाया ( जो एक लड़ाई में फूटी थी ) और अपने जहाज़ पर धावा करने का निशान उड़ाया; दो

बजे दिन को डेन्स के गोले बन्द हो गये मगर जब अंगरेज़ बेकाम जहाज़ों पर क़ब्ज़ा करने चले तो उनपर फिर गोली पड़ी इसपर नेलसनने वहां के शाहज़ादे को लिखा कि अब तुम लड़ नहीं सकते और गोली चलाना बेकाम है. अगर गोली बन्द न होगी तो हम तुम्हारे सब जहाज़ों को मल्लाह और सिपाही समेत जला देंगे, बहादुर डेन्स हमारे भाई हैं और उनको अंगरेज़ों से नहीं लड़ना चाहिये. इस पर उधर से गोली चलना बन्द हुआ और नेलसन को वाइकौ-उन्ट का खिताब मिला—

आखिर १७ मार्च को अमीन्स में इंगलेन्ड फ्रान्स इसपेन और हालेन्ड से सुलह होगई. इस में फ़्रान्स को फ़ायदा रहा और अंगरेज़ों का क़र्ज़ा ५२०००००००० पाउन्ड हो गया मगर थोड़े ही दिनों में फिर लड़ाई होगई क्योंकि नेपोलियन अब फ्रान्स का बादशाह बन बैठा और

१८ बहादुर सरदारों को अपने पास रखकर उस ने सारे यूरप में फ़्रेन्च झन्डा उड़ाने का विचार किया–इंगलेन्ड को दवाने के वास्ते एक बेड़ा बोलोन बन्दर पर सजा खड़ा था मगर नेलसन के नाम से उस को डर लगता था इसी से इंगलेन्ड पर चढ़ाई न हो सकी–मालटा न छोड़ने पर उसने लड़ाई छेड़ दिया और १०००० आदमी जो फ़्रान्स में सैर करने गये थे क़ैद होगये, नेपोलिअन को जीतने की पूरी उम्मैद थी उधर इंगलेन्ड में भी लड़ाई का पूरा सामान किया गया, ४००००० आदमी बल्लमटेर होकर क़वायद सीखने लगे, नेपोलिअन ने अपने बेड़े को अमेरिका की ओर बढ़ने का हुकुम दिया जिस से, नेलसन वग़ैरह उसके पीछे जायें और वह इंगलेन्ड पर टूट पड़े–नेलसन ने पीछा किया मगर फ़्रेन्च बेड़ा उसकी आंख बचाकर लौटा, फिनिसटर रास के पास सर राबर्ट कालडर एक दूसरे

अंगरेज़ी एडमिरल ने उसको हराया और वहां से जान बचाकर उसको केडिज़ बन्दर में पनाह मिली जहां एडमिरल कालिंगवुड उसकी ताक में जा डटे; नेलसन भी लौट कर उसी ओर बढ़ा और ताक में रहा; आखिर एक दिन सवेरे उस ने अपने वेड़े और ट्राफ़ेलगर के बीच में दुशमन का वेड़ा देखा जिस में छोटे बड़े मिलाकर ४० जहाज़ थे—नेलसन के वेड़े में ३३ जहाज़ थे. एक ओर कालिंगवुड और दूसरी ओर नेलसन को देख फ़्रेन्च के होश उड़े मगर बड़ी बहादुरी से लड़े. उनके एडमिरल का जहाज़ जल गया. नेलसन अपनी जहाज़ पर से लड़ाई देख रहा था कि एक गोली लगी और गिरा. ३ घन्टा पीछे वह मरगया मगर मरने के पहिले उसको जीतने की खबर मिली और उसने ईश्वर का नाम लेकर कहा कि हम अपना काम कर चुके. लन्डन के सेन्टपाल गिरजे में उसकी लाश

गाड़ी गई और सारी जाति गेई, उसके भाई
को अर्ल का खिताब और जागीर मिली—नेपो-
लिअन का सब बन्दोबस्त बिगड़ गया मगर
वह उस फ़ौज को जिस से इंगलेन्ड पर चढ़ाई
किया चाहता था लेकर आस्ट्रिया की ओर
चढ़ा और अल्म की लड़ाई में २८००० आद-
मियों ने हथियार रख दिया, फिर आसटर-
लिज़ पर रूस और आस्ट्रिया के बादशाहों को
ऐसा हराया कि दोनों को सुलह करना पड़ा—
जर्मनी ने भी इंगलेन्ड का साथ छोड़ा और
हनोवर पाकर फ़ान्स से सुलह करलिया. पिट
थोड़े ही दिनों में मरगया और लार्ड ग्रेनवाइल
वज़ीर हुये जिनके साथ फ़ाक्स भी था मगर वह
भी जलदी मर गया और उसकी जगह पर अ-
र्ल ग्रे हुये—नेपोलिअन का ज़ोर जहां तक पहुंच
सकता था वहां पर उस ने अंगरेज़ी माल न
जाने का हुक्म दिया और डेनमार्क के बेड़े

को लेकर इंगलेन्ड के जहाज़ों के रोकने का विचार किया, उधर जेना की लड़ाई में जर्मनी को गहरा हराया—लार्ड ग्रेनवाइल पारल्यामेन्ट में एक क़ानून जिससे फ़ौज और वेड़े में केथालिक भी रहें पेश करने पर निकाले गये और ड्यूक पोर्टलेन्ड वज़ीर और केनिंग विदेशी

८०७

सेक्रेटरी हुये—उधर ज़ार और नेपोलियन की सुलह होने से केनिंग के कान खड़े हुये और उसने डेनमार्क के वेड़े को ले लेने को अंगरेज़ी जहाज़ भेजे मगर डेन्स के इनकार करने पर कोपेन्नहेगन पर गोले बरसने लगे. सारे शहर में आग लग गई. ३ दिन गोले की बौछार देख डेन जनरल अपने जहाज़ दे देने पर राज़ी हुआ—

अब नेपोलियन अपने रिश्तेदारों को बादशाह बनाने लगा. उसका एक भाई लूई हालेन्ड का बादशाह हो गया था और उसका साला

म्युरट ने पुल्स के तख़्त पर बैठा और दूसरे भाई जोज़ेफ़ को इसपेन की बादशाहत मिलने वाली थी–उधर पोरचुगल ने अंगरेज़ो से नेपोलिअन के हुकुम पर कारबार न बन्द किया इस से उस ने ३०००० आदमी भेजकर लिसबन पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया और वहां का शाही ख़ान्दान अमेरिका भागा, इसपेन में बाप बेटे में झगड़ा हुआ, नेपोलिअन ने दोनों को अपने पास बोलाकर बादशाहत से दस्त बरदारी लिखाया और जोज़ेफ़ को बादशाह बना ही दिया इस पर इसपेनी बिगड़े और इंगलेन्ड से मदद मांगा, यहां से सर आरथर वेलेसली जो हिन्दुस्तान में बड़ी बहादुरी देखा चुके थे १०००० आदमी के साथ भेजे गये जिस ने पोरचुगल में पहुंचते ही फ्रेन्च जनरल जोनट को हराया मगर उस के अफ़सर सर हियु डालरिमपुल ने सुलह कर के जोनट को पोरचुगल

सन १८०[illegible]

से चले जाने दिया इस के वास्ते सर हियु हय लिये गये और खूब डाटे गये और उन की जगह पर सर जान मूर भेजे गये-यह पहुंचते ही इसपेन की ओर बढ़े मगर राह में खबर मिली कि साग-गोसा पर बड़ी बहादुरी से लड़ने पर भी इसपेनी हारे और मेडरिड नेपोलिअन के हाथ लगी-इसपेन से कुछ मदद न मिली इस से इस बेचारे को लौटना पड़ा-पीछे से फ्रेन्च जनरल सोल्ट दबाये चला आता था. जाड़े के दिन. रसद की कमी से सिपाहियों को बड़ी तकलीफ झेलनी पड़ी-१० जनवरी को यह लोग कोरुना पहुंचे मगर जहाज़ वहां आये नहीं थे. १६ तारीख को उधर अंगरेज़ी जहाज़ पहुंचे. इधर फ्रेन्च ने छापा मारा. बड़ी गहरी लड़ाई हुई. बहुत दुश्-मन मारे गये मगर बहादुर सरदार सर जान मूर भी मारा गया और उस को उसी मैदान में रात को फौजी पोशाक पहिने गाड़ कर अंगरेज़

जहाज़ों पर चढ़कर अपने घर चल दिये—

अब सर आरथर वेलेसली को पूरा अख़्तियार दिया गया और उस ने टलावेरा की लड़ाई में फ़्रेन्च को भारी धक्का दिया जिस से इस को वाईकाउन्ट वेलिंगटन का ख़िताब मिला—अब मेडरिड की ओर चलकर दुशमनों को ३ हिस्सों में पाया और यह देख पोरचुगल की सरहद पर लौटा, इधर फ़्रेन्च को रोकने का पूरा बन्दोबस्त किया-थोड़े दिनों में फिर इसपेन की ओर बढ़कर छेड़ छाड़ करने लगा इसी बीच में आस्ट्रिया ने एक बार फिर लड़कर हार मिटाने का सामान किया मगर वागरम के मैदान में नेपोलिअन ने फिर हराया और वाइना में पहुंचा—इंगलेन्ड ने आस्ट्रिया की मदद को ४०००० आदमी अर्ल चेथम के साथ भेजा जो पिट का बड़ा भाई था, इन को हुकुम हुआ कि हालेन्ड के किनारे पहुंच कर शेल्ट में फ़्रेन्च तोपखाने को

उड़ादो मगर वालचरेन टापू में दलदल होने से सिपाही बीमार होगये और हज़ारों मर गये, थोड़े से लौट कर इंगलेन्ड आये—उधर जार्ज को बादशाहत करते ५० साल होने पर इंगलेन्ड में बड़ी जुबली हुई सब ने बड़ी खुशी मनाया—फ़ान्स की बहुत सी फ़ौज अंगरेज़ों को हटाने को पोरचुगल पहुंची मगर बसाको की लड़ाई में वेलिंगटन ने फ़्रेन्च जनरल मसीना को खूब पछाड़ा और बहुत से दुश्मन मारे गये, फिर टोरस वेडरास के पहाड़ पर जा डटा जहां से फ़्रेन्च उस को न हटा सके, इसी साल नेपोलिअन ने अपनी पुरानी जोरू को छोड़कर आस्ट्रिया की एक अमीर औरत से शादी किया—उधर इंगलेन्ड में पारल्यामेन्ट में बड़ा बखेड़ा मचा मगर इस बड़ी लड़ाई में फंसे रहने से उधर किसी ने निगाह न उठाया, जार्ज अब पागल और अन्धा होगया और

वली की ज़रूरत एक बार पहिले भी पड़ी थी जब पिट और फ़ाक्स की एक राय नहीं होसकी मगर बादशाह के चंगे हो जाने से मामला दब गया था, अब यह तै हुआ कि इस बात का पारल्यामेन्ट को अख़्तियार है और प्रिन्स आफ़ वेल्स को दो बात ( लार्ड बनाना और पिनशिन देना ) छोड़कर पूरा बादशाही अख़्तियार दिया गया—

सन् १८१

उधर ३ महीने में अंगरेज़ों ने ३ लड़ाई जीता और जावा की डच बस्ती का बटेविया शहर भी अंगरेज़ी फ़ौज ने ले लिया तीसरी बार इसपेन में घुसकर काइडड राडरिगो, वेडोजज़ और सालमांका में दुश्मनों को हराती मेडरिड पहुंची मगर दो बड़ी फ़्रेन्च फ़ौज के बढ़ने की ख़बर सुनकर वेलिंगटन फिर पोरचुगल लौटा—उधर मिस्टर परसीवल वज़ीर को हाउस आफ़ कामन्स में एक सौदागर ने जिसका काम बिगड़ गया था

सन् १८१२

गोली मार दिया तब अर्ल लिवरपुल वज़ीर हुये-
अब ५०००००० आदमी लेकर नेपोलिअन रूस
में घुसा मगर रूसियों ने बहुत दूर तक आग लगा
दिया था और रसद न मिलने से वह आगे न बढ़-
सका और जाड़े के दिनों में रूसी बरफ़ ने भी
अपना काम किया—मासको से जर्मनी की सर-
हद तक ६०० मील में बरफ़ गलने पर ४००००
आदमियों की हड्डी मिली जिस से नेपोलि-
अन का ज़ोर बहुत घटा—उधर वेलिंगटन ने
धीरे २ फ़्रेन्च को इसपेन से निकाला; विटोरिया
में उन को पछाड़कर वह आगे बढ़ा और सेन्ट
सिबेसटिअन और पम्पलोना क़िलों को लेता
हुआ फ़ान्स पहुंचा जहां जनरल सोल्ट की
फ़ौज को कड़ी पछाड़ देखाया—उधर रूस,
जर्मनी, आस्ट्रिया और स्वीडन की मिली हुई
फ़ौज से नेपोलिअन खुद हारा और उन लोगों
ने पारिस तक उसका पीछा किया जहां उसने

बादशाहत छोड़ा और एलबा के टापू में चला गया, पारिस की पहिली सुलह से लड़ाई बन्द हुई, मेडरिड और पारिस में पुराने बादशाही खानदान के लोग फिर बादशाह हुये—

इसी बीच में इंगलेन्ड और अमेरिका से लड़ाई होगई जिसका सबब यह था कि अंगरेज़ अमेरिकन जहाज़ों की तलाशी लेते थे, उन लोगों ने केनेडा पर चढ़ाई किया मगर कोई काम न निकला, उधर अंगरेज़ों ने वाशिंगटन ले लिया और वहां के सरकारी इमारतों को जला दिया मगर न्यू आरलिअन्स पर हार कर बहुत आदमी खोकर हटना पड़ा—समुन्दर की लड़ाइयों में एक अंगरेज़ी और एक अमेरिकन जहाज़ में धर्म्म की लड़ाई हुई, अंगरेज़ों ने १५ मिनट में उसको ले लिया—आखिर दिसम्बर सन् १८१४ में सुलह होगई मगर झगड़े की जड़ का मामला तै नहीं हुआ—

गया; कहीं २ लोगों ने सिर उठाया मगर सब दबाये गये, प्रिन्स आफ़ वेल्स पर किसी ने गोली भी चला दिया मगर वह बच गया—पारल्यामेन्ट में मेम्बरों के चुने जाने की एक नई तदबीर पेश हुई मगर वह न चली इसपर बड़ा बखेड़ा मचा, लोग कलों को तोड़ते और सज़ा पाते थे, मगर वली शाहज़ादे की लड़की के मर जाने से लोग यह सब भूल गये और सारे देश ने अफ़सोस किया—फिर दो बरस इसी का चरचा रहा कि सब को मेम्बर चुनने का अख़्तियार होना चाहिये इस के वास्ते हर जगह कमेटी हुआ करती थी. मेनचेस्टर में एक ऐसी ही कमेटी में १००००० आदमी जमा थे वे विचारे ज़बरदस्ती हटाये गये. उनपर फ़ौज ने गोली चलाया कुछ मारे गये मगर बहुत से ज़ख़्मी हुये. उसी साल कमेटी के बन्द करने का क़ानून जारी हुआ—इन सब मुसीबतों के बीच में २४

को बादशाह के चौथे लड़के ड्यूक केन्ट
के लड़की पैदा हुई जो महारानी विक्टोरिया
ई—दूसरे साल जनवरी में ड्यूक केन्ट मरा और सन १८२०
उस के ६ दिन पीछे बूढ़ा, अन्धा, पागल,
जार्ज भी चल दिया—यह बड़ा नेक और
समझदार था, इंगलेन्ड का नाम इसने खूब ब-
:या और इस को सब लोग खूब चाहते थे, ६०
हुकूमत करके रैआया के साथ सदा सलूक
रहा—इस के ज़माने में आग पानी से
खूब काम लिया गया, रेल के अंजन, कपड़े
वगैरह बनाने की कल और जहाज़ बने—गैस की
रोशनी लन्डन में हुई, जहाज़ लोहे के बनने
लगे, ग़ुलामी का रोज़गार बन्द किया गया—
के ज़माने में नहर काट २ नदी मिलाई गई
जिस से माल लाने में बड़ी आसानी हुई, विद्या
बड़ी तरक़्क़ी हुई, बहुत से मशहूर कवि और
रचने वाले हुये जिसमें से जानसन, गोल्ड-

स्मिथ, काउपर, गिवन, सर वालटर स्काट और लार्ड वाइरन थे—इमारत का बनाना भी बहुत कुछ सुधारा गया और बहुत से तसवीर बनाने वाले या रंगने वाले भी हुये जो एक या दो तसवीर बनाने से मालदार और अमीर हो गये—

## चौथे जार्ज

१८२०-३०

तीसरे जार्ज के मरने पर उसका बेटा जो ६ साल से काम कर रहा था बादशाह हुआ—थोड़े ही दिन में एक बदमाश ने जो एक साल जेल में रहकर लौटा था वजीरों को एक जगह दावत में मार लन्डन में आग लगा और कैदियों को छोड़कर एक बड़ा बखेड़ा खड़ा करने की बन्दिश किया मगर जिस दिन रात को यह काम होने वाला था उसी दिन पुलिस ने सब को पकड़ा और ४ को

फांसी देकर बाक़ी सब देश से निकालेगये—

नये बादशाह ने अपनी रानी केरोलाइन के साथ बहुत बुरा बरताव किया, वह तेज़ मिज़ाज औरत थी और बादशाह से कभी उस से न पटी, ६ साल इटाली में रहकर इस के बादशाह होने पर आई मगर वहां उस के ऊपर बेवफ़ाई का क़स्र लगा जो साबित न होसका, रेआया उसको बेक़सूर समझते थे इस से सब उसकी ओर थे, आख़िर जिस दिन ताज सिर पर धरा जाने को था वह बेचारी सबेरे ही आकर वेस्टमिनिस्टर गिरजे के फाटक पर खड़ी हुई मगर वह भीतर न जाने पाई इस से उसका दिल टूट गया और १६ दिन बीमार रहकर मरगई—उसी महीने में बादशाह ने आयरलेन्ड की सैर किया और कुछ दिन पीछे हनोवर और स्काटलेन्ड भी गया—उन्हीं दिनों लार्ड केसेलरी ने जो मारक्विस लन्डनडरी कहे जाते थे

सन १८२१

सन १८२२

अपने हाथ अपनी जान दिया और केनिंग अब
विदेशी सिकत्तर हुये—हिन्दोस्तान में बरमा या
सन १८२४ ब्रह्मा देश के लोग अंगरेज़ों से लड़गये और
रंगून और अराकान से हाथ धोया, सुलह होने
सन १८२६ पर भी यह अंगरेज़ों ही के हाथ रहे—उधर अमे-
रिका की इसपेनी बस्ती भी अब आज़ादी चाहती
थीं और इसपेन से लड़गई—इसपर केनिंग ने
उनकी आज़ादी मान लिया—उधर लार्ड लिवर-
सन १८२७ पूल के मरने पर केनिंग वज़ीर हुआ. उसी
साल ग्रीस की जिनको तुर्क पीसे डालते थे
और जो अब आज़ादी चाहते थे फ़ान्स और
रूस से मिलकर अंगरेज़ों ने मदद किया इन
लोगों के बेड़े ने कुछ घन्टों में तुर्की बेड़े को
बरबाद कर के ग्रीस को आज़ाद कर दिया—
उसी साल केनिंग मरगया और ड्यूक वेलि-
गटन वज़ीर हुये—

अबतक पार्ल्यामेन्ट में केथालिक लोग नहीं

बैठने पाते थे और न उन लोगों को सरकारी नौकरी मिलती थी मगर इस बार आयरलेन्ड के लोगों ने एक केथालिक बारिस्टर को अपना मेम्वर किया, यहां सरकार ने देखा कि इस को न बैठाले से बलवा होगा बस एक क़ानून निकला जिस से केथालिक भी अब दो तीन बड़े ओहदों को छोड़कर सब काम करने पावैं—इस पर वेलिंगटन पर लोगों ने बहुत बौछार किया मगर उसने साफ़ कह दिया कि यह न करने से सारे आयरलेन्ड में बलवा हो जाता—दूसरे साल ६८ बरस की उमर में बादशाह मरगया और औलाद न होने से उसका भाई बादशाह हुआ—

सन् १८२[illegible]

सन् १८३[illegible]

इस ज़माने में अनाज पर चुंगी कम की गई और यह तै हुआ कि भाव घटने पर बढ़े और बढ़ने पर घटा करै, रोज़गार में भी बहुत सी चीज़ों पर चुंगी कम की गई जिस से रोज़गारी को बड़ी आज़ादी मिली—इसके ज़माने में पत्थर

के टुकड़ों से सड़क बनी. आग पानी से चलने वाला जहाज़ टेम्स नदी में देख पड़ा और हिन्दोस्तान को गया—यह बहुत शौक़ीन और खूब सूरत आदमी था—

## चौथे विलिअम

### १८३०–३७

बादशाह होतेही फ्रान्स में फिर बखेड़ा हुआ जहां के बादशाह चार्ल्स दस्विं को हटाकर लोगों ने ड्यूक आरलिअन्स को बादशाह बनाया—उधर हालेन्ड में बिगड़ कर बेलजिअम ने आज़ादी पर कमर कसा और शाहज़ादे ल्युपोल्ड को अपना बादशाह बनालिया—इंगलेन्ड में भी पार्ल्यामेन्ट के सुधार की पुकार खूब हो रही थी. पिट ने इस काम को करना चाहा था मगर बड़ी लड़ाइयों में फंसे रहने से कुछ न करसका. सुधार यह था कि जिन जगहों को मेम्बर भेजने का अख़्तियार था उन में अब लोग बहुत कम

जाने से कम लोग रहते थे और शहरों में बहुत लोग मालदार थे मगर इन लोगों को यह अ-ख़्तियार नहीं था इस से हर जगह बखेड़ा मचने लगा—नटिंघम, डरबी और ब्रिसटल में बलवा हो गया, इमारतें तोड़ी गई सैकड़ों आदमी मारे गये, वेलिंगटन को सुधार की बात पसन्द नहीं थी और पल्ला हलका पड़ने से उनको काम छोड़ना पड़ा, तब अर्ल ग्रे और लार्ड रसेल ऐसे आज़ाद लोग वज़ीर हुये, इन लोगों ने बहुत मुसीबत झेलकर भी अपना काम कर डाला, ७ जून सन १८३२ को क़ानून जारी हो गया जिस से ५६ जगह से अख़्तियार छीन कर ६३ को दिया गया—जलदीही स्काटलेन्ड और आयरलेन्ड के लिये भी यह क़ानून जारी हो गया, मामूली लोगों को मेम्बर भेजने का पूरा अख़्तियार मिला, शहरों में १० पाउन्ड साल के मकान भाड़ा देने वाले या मालिक को अ-

ख़्तियार मिला और देहात में भी इतनी ही आमदनी के ज़मीन्दार या ५ पाउन्ड की मालगुज़ारी देने वाले रेआया को भी अख़्तियार मिला-गुलामी का रोज़गार तो तीसरे जार्ज के ज़माने में बन्द होगया था मगर गुलामी नहीं बन्द हुई थी आख़िर मालिकों को २०,०००,००० पाउन्ड देकर ८००००० आदमी आज़ाद कर दिये गये, दूसरे साल ग़रीबों का क़ानून बदला गया जिस से जो आदमी काम कर सकता है और नहीं करता उस को बिना काम किये मोहताज ख़ाने में खाना न मिले-थोड़े ही दिनों में म्युनिसिपलटी का क़ानून निकला जिस मे चुंगी देने वालों को मेम्बर भेजने का अख़्तियार मिला और मेम्बर लोग मजिस्ट्रेट चुन लिया करें-यही क़ानून पीछे से स्काटलेन्ड और आयर्लेन्ड में जारी हुआ-

दिल का साफ़ और ज़बान का मीठा बाद-

शाह २० जून को मर गया इसको सब लोग चाहते थे, इसके ज़माने में सब से पहिली रेल मुसाफ़िरों के लिये चली और हैज़ा भी हुआ जिसमें ६०००० आदमी मर गये—उसके पीछे फिर ३ बार ब्रिटेन में यह रोग आया मगर शहरों में सफ़ाई का पूरा बन्दोबस्त होने से ज़ोर घट गया और कम लोग मरे—

## विक्टोरिया
## १८३७–१९०१

विलिअम के औलाद न होने से उस के भाई ड्यूक केन्ट की लड़की विक्टोरिया रानी हुई जिसकी उमर १८ साल की होने से वज़ीरों से सलाह लेने की ज़रूरत पड़ी—हनोवर अब इंगलेन्ड से अलग हो गया, वहां के क़ानून से औरत हुकूमत नहीं कर सकती थी इस से उस का चचा ड्यूक कम्बरलेन्ड वहां का बाद-शाह हो गया—

महारानी विक्टोरिया के रानी होतेही केनेडा में बग़ावत होगई मगर जलदी दब गई और एक क़ानून जारी किया गया जिस से कुल केनेडा एक कर दिया गया—उधर अनाज के क़ानून पर बड़ा बखेड़ा मचा: कुछ लोग कहते थे कि विदेशी माल पर चुंगी लगे और देशी पर न लगे मगर कुछ लोग यह भी कहते थे कि किसी माल पर न लगे. इन लोगों की एक कमेटी हो गई जो रैयाया को चुंगी के नुक़सान दिखाने लगे सन १८४२ में सर राबर्ट पील ने एक नया क़ानून निकाला जिस से कुछ चुंगी कम कर दी गई और दूसरे माल केनेडा से खूब अनाज आया मगर सन १८४६ में आलू में एक रोग पैदा होगया जिस से बड़ी भारी फ़सल मारी गई और आयरलेन्ड में अकाल होने से बड़ी हाय २ होने लगी—रिचर्ड कावडन एक बड़ा चतुर आदमी था जो कहता था कि सब

को यह अख़्तियार होना चाहिये कि जहां चीज़ सस्ती पावैं ख़रीद करैं और जहां खूब दाम मिलैं बेचैं—आखिर दूसरा क़ानून जारी हुआ जिस से खाने वाली विदेशी चीज़ों पर से चुंगी उठ गई या नाम को रह गई—

इस झगड़े के साथ ही एक कमेटी परवाने वालों की हुई जो पुराने परवाने लेकर दिखाते थे और कहते थे कि ( १ ) हर आदमी को पारल्यामेन्ट में मेम्बर भेजने का अख़्तियार होना चाहिये—( २ ) मेम्बर पुरजे से चुने जायें ( आदमी जिस को भेजना चाहै उसका नाम एक काग़ज़ पर लिखकर एक सन्दूक़ में छोड़ दे क्योंकि खुला खली किसी अमीर के ख़िलाफ़ होने से मामूली आदमी डरता है) ( ३ ) हर साल पारल्यामेन्ट की बैठक हो ( ४ ) मेम्बरों को कुछ मिलना चाहिये ( ५ ) हर आदमी मेम्बर हो सकै ( ६ ) देश में मेम्बर भेजने के ज़िले क़ायम

किये जायें–जान फ़ास्ट जो एक मजिस्ट्रेट था अगुआ हुआ और इन लोगों ने ख़ूब बखेड़ा मचाया, ३ आदमी को फांसी का हुकुम हुआ मगर आख़िर उन को जनम क़ैद हुई–उन लोगों की अरज़ी की पहिली दूसरी और पांचवीं बात अब जारी है–

१० फ़रवरी सन् १८४० को महारानी ने प्रिन्स एलबर्ट से जो सेक्स कोबर्ग गोथा का शाहज़ादा था अपनी शादी किया और उसी २१ नवम्बर को एक लड़की पैदा हुई जिसका लड़का आज कल जर्मनी का बादशाह है, दूसरे साल महाराज सातवें एडवर्ड सन् १८४२ के ९ नवम्बर को पैदा हुये जो बहुत दिन तक प्रिन्स आफ़ वेल्स कहे जाते थे–थोड़े ही दिनों में पारल्यामेन्ट में यह तै हुआ कि अगर महारानी मर जायें तो जब तक प्रिन्स आफ़ वेल्स बालिग़ न हों प्रिन्स एलबर्ट वली की तरह पर हुकूमत

यह शाहज़ादा बड़ा होशियार था और इस
र्-यह शाहज़ादा वड़ा होशियार था और इस
अंगरेज़ों को वड़ा फ़ायदा हुआ-२२ वरस
महारानी के ४ लड़के और ५ लड़की हुई
ौर शाहज़ादा सन् १८६१ की १४ दिसम्बर
ो वोखार में पड़कर मर गया, रेआया को इस
ा वड़ा अफ़सोस हुआ—
डाक का पूरा सुधार होगया चिट्ठी कहीं से
ने पर भी महसूल एक आना लगने लगा
र तार जारी हो जाने और रेल के चलने से
ज़गार भी बढ़ा, ख़बर एक जगह से दूसरी
गह जलदी पहुंचने लगी, रेआया को पढ़ाना
सरकार ने अपना काम समझा और ३००००
उन्ड सालाना इस्कूल बनाने को दिया जाने
गा-कारख़ाना और खान में औरत लड़के
त काम करते थे, यह क़ानून जारी किया गया
इन लोगों से कम काम लिया जाय-आ-
लेन्ड में कई वार वखेड़ा हुआ मगर वरावर

दवाया गया—सन् १८५२ में हाइडपार्क में एक
शीशे का मकान बनाया गया जिसमें बड़ी भारी
नुमाइश गाह बनी, सारी दुनिया की कारीगरी
की चीज़ें देखाई गई और सब जगह के लोग
देखने आये—

इसपेन में आपुस की लड़ाई सन् १८३३ में
खड़ी हुई. बादशाह फरडिनेन्ड ने अपने भाई
डान कारलस को छोड़कर छोटी लड़की इसा-
बेला को वारिस बनाया, पादड़ी सब कारलस
की ओर हो गये और खूब लड़ाई हुई जिसमें
दोनों दलों ने खूब बेरहमी किया. लार्ड पामर-
स्टन और फ्रान्सके शाह लुई फिलिप भी इन
झगड़ों में पड़े इस से दोनों मुल्कों के मन
मैले पड़गये. फ्रान्स ने कारलस की फ़ौज
की रसद रोक दिया. अंगरेज़ों ने २०००
आदमी इसाबेला की पलटन में भरती होने
को भेजा. आखिर सन् १८३९ में कारलस के

पल्ला दब गया और मामला ठंढा पड़गया—

उधर टरकी के झगड़ों में भी इंगलेन्ड क्या सभी मुल्कों को शरीक होना पड़ा, मुहम्मद-अली मिश्र के पाशा ने अपने एक अफ़सर इबराहीम को एकर के पाशा पर चढ़ाई करने को भेजा मगर सुलतान महमूद ने उनकी मदद किया, इबराहीम ने सबको हटाया और जब यह डर पैदा हुआ कि अब कुसतुनतुनिया हाथ से जाती है तब सुलतान ने अपने पुराने दुश्मन रूस की मदद लिया-सन् १८३३ में सिरिया और अदाना पाकर मुहम्मद अली ने झगड़ा दूर किया—उधर रूसी ज़ार ने यह शर्त सुलतान से कराया कि डारडेनल्स का रास्ता जब रूस से किसी से लड़ाई हो तब सब के वास्ते बन्द करदिया जाय—इस से रूस को बड़ा सुभीता था, इस बात को इंगलेन्ड और फ़ान्स दोनों ने ना पसन्द किया मगर एक राय न हो सके—

अंगरेज़ सुलतान के ज़ोर को बढ़ाना चाहते थे
फ्रेन्च मुहम्मद अली को चतुर समझते थे उस
के यहां बहुत से फ्रेन्च नौकर थे इस से वे लोग
और भी उसकी मदद किया चाहते थे. सन्
१८३९ में फिर लड़ाई छेड़ गई—तुरकी फ़ौज का
नाश हुआ मगर सुलतान महमूद इसके सुनने
के पहिलेही मरगये और उनका लड़का अब्दुल
मजीद बादशाह हुआ—तुरकी एडमिरल दुश्म-
नों से मिलगया और बेड़ा अब उन के काम
आया. रूस पुरानी शर्तें तोड़कर इंगलेन्ड
आस्ट्रिया और जर्मनी से मिला जिसमें इन
लोगों का झगड़ा दूर हो जाय मगर फ्रेन्च
नाराज़ थे और वाटर्लू का बदला लेने का सा-
मान कर रहे थे, उधर सर चार्ल्स नेपियर एक
बेड़ा लेकर जिसमें अंगरेज़ी और आस्ट्रियन
जहाज़ थे एकर पर चढ़ गये और ले लिया;
मुहम्मद अली को सिरिया छोड़ना पड़ा मगर

उसको मिश्र की मौरूसी हुकूमत दी गई—सन् १८४१ में सब लोगों ने मिल कर डारडेनेल्स के मामले को फिर से तै किया जिसमें से कोई जहाज़ न जा सके मगर टरकी के जहाज़ लड़ाई होने पर ज़रूर निकल सकते थे—

## यूरपी रिवोल्यूशन

सारे यूरप में सन् १८४८ में बखेड़ा मचा, हुकूमत बदली, खून बहा, हज़ारों मालदार हो-गये और लाखों भिखारी बने—जहां देखिये लोग पारल्यामेन्ट और रेआया की हुकूमत की बात करते थे, फ़ान्स के बादशाह लुई फ़िलिप निकाले गये और दूसरी पंचाइती राज बनी—इटाली की छोटी रेयासतों में बड़ा जोश बढ़ा, सरकार को बहुत आज़ादी देना पड़ा, सरडिनिया के बादशाह ने लोमबारडी और वेनिस में आस्ट्रिया के अफ़सरों पर चढ़ाई करदिया, जर्मनी और आस्ट्रिया में पारल्यामेन्ट जारी हो गये. इन

मुल्कों के राजधानी में बड़ा बखेड़ा मचा—फ़ान्स में रेआया ने यहां तक किया कि जो आदमी काम करना चाहे उसको उसके करने का काम दिया जाय, इटली की रेयासतों ने ख़ूब एका किया और जाति का विचार दिल में लाकर ख़ूब अपना घर संभाला, उधर जर्मनी के रेयासतों ने मिलकर सारे जर्मनी को एक करके एक तरह की हुकूमत में रखने की तदबीर किया—बूढ़े देश आस्ट्रिया की हालत नाज़ुक थी वहां बहुत जाति होने से सब अपनी और गैर और आपुस में हमदर्दी न होने से साल भीतर आस्ट्रिया और हंगरी की खुला खुली लड़ाई ठन गई—

मगर इंगलेन्ड में पुरचाने चालों की धूम तो ज़रूर रही और कोई बखेड़ा नहीं हुआ—पार्ल्यामेन्ट में एक निडर मेम्बर ओकानर ने उन लोगों की अर्ज़ी के साथ पार्ल्यामेन्ट में

ले चलने को कहा, लाखों आदमी के आने की खबर थी मगर २५००० आदमी ज़रूर चले—२०००००० आदमी लन्डन की हिफ़ाज़त करने को वलनटेर बने, ड्यूक वेलिंगटन ने फ़ौज मंगा लिया था आख़िर एक गाड़ी पर रखकर अरज़ी भेजी गई-यह बात मालूम हो गई कि परवाने वाले बहुत हैं तिसपर भी बहुत लोग बखेड़ा करना नहीं चाहते थे, थोड़े ही दिन पीछे दूसरी हवा चली और फिर सारा सुख जैसा का तैसा हो गया—फ़्रान्स में लोगों ने बोनापार्ट के एक भतीजे लूई नेपोलिअन को प्रेसीडेन्ट बना लिया और उस को अच्छी हुकूमत और सुलह रखने को २० बरस का ज़माना दिया—उधर सरडिनिया के बादशाह आस्ट्रिया से हार गये और उन को बादशाहत छोड़ना पड़ा, उसका लड़का विकटर इमेनुअल बादशाह हुआ और अपने अमलदारी में पारल्यामेन्ट की हुकूमत करने लगा—

आस्ट्रिया और हंगेरी में रूस ने मेल करा दिया.
इंगलेन्ड में लार्ड रसेल ने काम छोड़ दिया और
विदेशी जहाजों को भी पूरी आज़ादी से काम
करने का क़ानून जारी कर गये—अर्ल डर्बी
वज़ीर हुये और कई क़ानून पर रैय्याया की मदद
न मिलने से इनको भी अलग होना पड़ा—डर्बी
के ज़माने में फ्रान्स को बड़ी मुसीबत पड़ी. लुई
नेपोलिअन ने वहां के बड़े और नामी लोगों को
क़ैद कर दिया, पारिस में फ़ौजी पहरा पड़ने ल-
गा. जिसने गरदन उठाया सज़ा पाया. आखिर
दुखी रैय्याया से उसने जो चाहा करा लिया और
तीसरे नेपोलिन के खिताब से वहां का बाद-
शाह बन बैठा—इस १२ साल के बखेड़े तो बहुत
पड़े मगर जो चैन और सुख बढ़ा उसको भी
ध्यान दीजिये, लोग सब छोड़ कर दुनिया की
एक बात लेकर तन मन धन लगाने लगे. कोई
पेड़ और घास की जांच करता है तो कोई पत्थ-

देख कर उसकी उमर और उस जगह की पुरानी बातों की खोज करता है, कोई आदमी और जानवरों के मामले में पड़ता है तो कोई पूरा परिडत और कवि होता है, कोई किताबें लिखता है, कोई कारखानों में दूसरे मुल्कों की चीज़ों की नक़ल करके असल से मात कर सस्ती बेचने से दूसरे का रोज़गार उड़ाकर कुल फ़ायदा अपने वास्ते सोचता है—

डरबी के काम छोड़ने पर अर्ल एबरडीन वज़ीर हुये और मिस्टर ग्लेडिस्टन भी इनके साथी थे—कुछ दिन पहिले से फ़ान्स और रूस में छेड़ छाड़ हो रही थी, उन्हीं दिनों ज़ार ने अंगरेज़ी एल-ची (दूत) से कहा कि अगर बीमार सुलतान के मरने पर टरकी में बखेड़ा उठे तो तुम लोग मिश्र और क्रीट ले लो और इसाई रेआया आज़ाद करके हमारे हिफ़ाज़त में कर दिये जायें मगर यह इसाई लोगों पर दया नहीं थी, ज़ार अपनी

हुकूमत बढ़ाया चाहते थे—अंगरेज़ों के इनकार करने पर ज़ार ने एक एलची कुसतुनतुनिया भेज कर अपना मतलब बताया मगर वहां इनकार होने पर टरकी के दो सूबे ले लिया, इस पर अंगरेज़ी बेड़े को डारडनेल्स के किनारे पर जाना पड़ा—आस्ट्रिया, फ्रान्स, जर्मनी और इंगलेन्ड ने भी सुलतान को समझाया मगर भूले हुये अंगरेज़ी एलची के सिखाने पर वह आगये और कुछ मांगी हुई बातें बदला चाहते थे, ज़ार ने न माना और लड़ाई ठन गई—तुर्क डेन्यूब पार उतर गये और कुछ रूसियों को हराया मगर रूसी बेड़े ने तुर्की बेड़े का नाश कर दिया, इस से फ्रान्स और इंगलेन्ड को नाराज़ी हुई और आस्ट्रिया और जर्मनी की बात को न मान कर रूस से लड़ाई ठान दिया, यह लोग दो बात कर सकते थे, एक तो सुलतान को दबाकर उनकी इमारत [illegible]

को बन्दोबस्त करके इसाई हुकूमत में रख देते या रूसी बेड़ा जो काले समुन्दर में रहता था बरबाद करके तुर्कों का डर छोड़ा देते—

आखिर यही किया गया लार्ड रेगलन अंगरेज़ी फ़ौज लेकर चले और मारशल सेन्ट आरनाड फ़्रेन्च दल लेकर पहुंचे, तुरकी फ़ौज को भी मिलाकर ६१००० आदमी अलमा नदी के पार उतरे, वहां रूसियों को हटाकर उन के क़िले सिबास्टपूल को घेर लिया जहां बड़ा सामान था और जनरल भी बड़ी चाल का आदमी था—पानी की ओर उसने पुराने जहाज़ डुबोकर राह बन्द कर दिया था, १७ से २५ अकतूबर तक इन लोगों ने गोला मारा और क़िले का बुर्ज भी तोड़ दिया मगर फ़्रेन्च मेगज़ीन के उड़जाने से आगे न बढ़ सके, आखिर बेलकलावा में अंगरेज़ी रसद उतरी, रूसी अब इस राह के बन्द करने के फेर में बढ़े

मगर अंगरेज़ी सवारों की एक पलटनने भारी रूसी दल को हटा दिया—उसी हेर फेर में सवारों के अफ़सर लार्ड कारडिगन ने भूल कर ऐसा काम कर डाला जो सदा को मशहूर हो गया. कुछ रूसी तोपों के लेने का हुकुम हुआ, तोप तो कहीं देख न पड़ी सवार लोग रूसी फ़ौज के बीच में जान बूझकर मरने को घुस गये और सब काट डाले गये मगर किसी ने आगे बढ़ने से इनकार न किया—आख़िर ५. नवम्बर को इनकरमन की लड़ाई में रूसी दिन भर अंगरेज़ों का सामना करके शाम को फ़्रेन्च फ़ौज को बढ़ते देख पीछे हटे—अब जाड़ा होने से बड़ी तकलीफ़ हुई, तूफ़ान आने से रसद के जहाज़ डूबगये. सिपाहियों को दिन भर दुश्मन की मार और रात भर बर्फ़ की सर्दी बचाना पड़ता था. हवा में डेरे उड़ जाते थे और ओढ़ने को कम्मल न होने से बड़ी तकलीफ़ हुई, हज़ारों बीमार

पड़गये, घोड़े बिना घास के मरगये, पहरा देकर और दुश्मन की ताक से बचकर सिपाही मीलों दूर से खाना लाते थे, अंगरेज़ी माल बेलक-लावा में उतरता था मगर फ़्रेन्च का माल उनके डेरे से नज़दीक उतरता था—कुसतुनतुनिया के पास एक अस्पताल था जहां सब बीमार भेजे ग-ये मगर उनकी मदद को दाई गई नहीं थी, कुछ दिन में एक भले आदमी के घर की लड़की मिस नाइटिंगेल और बहुत सी औरत उसके साथ इंग-लेन्ड से चलीं और बीमारों की बड़ी मदद किया-

उधर लड़ाई का सामान बुरा होने से लोग वज़ीरों पर ताना देने लगे और उन विचारों ने काम छोड़ दिया—लार्ड पामर्सटन वज़ीर हुये, इधर इन्तिज़ाम की कसर भी मिटगई वहां अफ़सर लोग भी अपना काम समझने लगे, अब गरमी पड़ने लगी और सिवास्ट-पूल पर फिर धावा हुआ; सार्डिनिया के

वादशाह विकटर इमेनुअल भी इन लोगों से आमिले, अंगरेज़ तो रेडन क़िले को न लेसके मगर फ़्रेन्च ने मालाकाफ़ बुर्ज को उड़ा दिया जिस से रूसी मुर्चे वे काम होगये-रूसियों के बहुत आदमी मारेगये और ज़ार निकूलस के मरजाने से उनके लड़के एलेगज़ेन्डर ने सुलह कर लिया-सिवास्टपूल के मुर्चे हटा दिये गये और यह भी क़रार हुआ कि अब कभी वहां मुर्चे न बांधे जायंगे और न काले समुन्दर में बेड़ा रहेगा-इस से टर्की को पूरा मौक़ा हुकूमत के सुधारने का दिया गया-

सन
१८५६

हिन्दुस्तान का हाल बहुत इस जगह लिखना ठीक नहीं क्योंकि यह किताब इंगलेन्ड के हालात के दिखाने को लिखी गई है तिसपर भी जो बहुत ज़रूरी है लिखा गया है-सन १८०३ में मोगल बादशाह कम्पिनी से पिन-शिन पाने लगे. १८१७ में मरहठों ने नौकरी

लड़ाई हुई और पेशवा महाराज ८०००००) साल की पिनशिन लेकर हुकूमत से अलग होकर कानपूर के पास गंगा तीर बिठूर में रहने लगे, अब कुछ रियासत बचीं जो कम्पिनी से सुलह करके रहने लगीं और आपुस में लड़ने नहीं पाती थीं देश में अमन रहने से रेआया सुखी होने लगी मगर सरहद की ओर सरकार की निगाह ज़रूर थी क्योंकि इस देश में बराबर उसी राह से दुश्मन आये—बीच में पंजाब में रंजीतसिंह की हुकूमत से कुछ दिन डर नहीं था, उसकी सिख रेआया बड़ी कट्टर थी—सन् १८३७ में परशिया या इरान के शाह जो रूस के मेली थे हेरात पर चढ़गये जहां से हिन्दुस्तान की राह थी और लार्ड आकलेन्ड गवर्नर जनरल ने एक एलची काबुल भेजा जिसमें वहां के अमीर दोस्त मुहम्मद से मेल होजाये मगर जो क़रार उस एलची ने किया

उसको यहां की सरकार ने न माना इससे अमीर भड़क गये और रूस से मिलगये—सन् १८३८ में काबुल पर चढ़ाई का सामान हुआ मगर हेरात से इरानी हट गये इस से कुछ दिन चढ़ाई रुक गई—आखिर शाह शुजा पुराने अमीर को लेकर जो काबुल से भाग कर यहां बसे थे अंगरेज़ी फ़ौज अफ़ग़ानिस्तान पहुंची और उसको अमीर बना दिया—दोस्त मुहम्मद क़ैद होगया. वहां एक रेज़ीडेन्ट रहने लगा मगर बगावत हो गई और कुछ अफ़सर मारे गये. रसद कम होने से रेज़ीडेन्ट ने खाने का सामान मिलने पर काबुल के क़िले खाली कर देने कहा इसपर दोस्त मुहम्मद के लड़के अकबर ख़ां ने जो बागियों का सरदार था इन लोगों को मुलाकात करने को बोलाया और वहां रेज़ीडेन्ट को गोली मार दिया. इसपर बचे हुये अफ़सरों ने हिन्दुस्तान लौटने

का क़रार किया और जाड़े में हिमालय की ब-
रफ़ में १४५०० आदमी चले, बाग़ी लोग प-
हाड़ों के दोनों ओर आ डटे और इनपर गोली
बरसाने लगे, तब औरत और लड़के अकबर ख़ां
के हवाले किये गये जिसने उनको आराम से
रक्खा–४ दिन चलने पर ४००० आदमी रह गये
आख़िर बरफ़ की सरदी और गोली की गरमी
से मरते हुये आठवें दिन ६५ आदमी बचे, एक
बीमार होकर राह में पड़ गया और ६४ आगे
बढ़े, इन को भी बाग़ियों ने मार डाला और यह
समझकर कि सब को साफ़ कर दिया अपने घर
लौट गये, मगर वह बीमार डाक्टर बराइडन
अपने बीमार टट्टू पर लदा हुआ सब से बचकर
जलालाबाद पहुंचा और वहां अंगरेज़ी फ़ौज
को यह भयानक कथा सुनाया–जलालाबाद
पर भी अब अफ़ग़ान टूटे मगर कुछ न बना
सके और वहां की फ़ौज को लेकर जनरल

उसको यहां की सरकार ने न माना इससे अमीर भड़क गये और रूस से मिलगये—सन् १८३८ में काबुल पर चढ़ाई का सामान हुआ मगर हेरात से इरानी हट गये इस से कुछ दिन चढ़ाई रुक गई—आखिर शाह शुजा पुराने अमीर को लेकर जो काबुल से भाग कर यहां बसे थे अंगरेजी फौज अफगानिस्तान पहुंची और उसको अमीर बना दिया—दोस्त मुहम्मद कैद होगया. वहां एक रेजीडेन्ट रहने लगा मगर बगावत हो गई और कुछ अफसर मारे गये. रसद कम होने से रेजीडेन्ट ने खाने का सामान मिलने पर काबुल के किले खाली कर देने कहा इसपर दोस्त मुहम्मद के लड़के अकबर खां ने जो बागियों का सरदार था इन लोगों को मुलाकात करने को बोलाया और वहां रेजीडेन्ट को गोली मार दिया. इसपर बचे हुये अफसरों ने हिन्दुस्तान लौटने

का क़रार किया और जाड़े में हिमालय की ब-
रफ़ में १४५०० आदमी चले, बाग़ी लोग प-
हाड़ों के दोनों ओर आ डटे और इनपर गोली
बरसाने लगे, तब औरत और लड़के अकबर ख़ां
के हवाले किये गये जिसने उनको आराम से
रक्खा—४ दिन चलने पर ४००० आदमी रह गये
आख़िर बरफ़ की सरदी और गोली की गरमी
से मरते हुये आठवें दिन ६५ आदमी बचे, एक
बीमार होकर राह में पड़ गया और ६४ आगे
बढ़े, इन को भी बाग़ियों ने मार डाला और यह
समझकर कि सब को साफ़ कर दिया अपने घर
लौट गये, मगर वह बीमार डाक्टर बराइडन
अपने बीमार टट्टू पर लदा हुआ सब से बचकर
जलालाबाद पहुंचा और वहां अंगरेज़ी फ़ौज
को यह भयानक कथा सुनाया—जलालाबाद
पर भी अब अफ़ग़ान टूटे मगर कुछ न बना
सके और वहां की फ़ौज को लेकर जनरल

पालक काबुल पर फिर चढ़े—शाह शुजा को लोगों ने मारडाला था इससे दोस्त मुहम्मद को फिर अमीर बनाकर और अंगरेज़ी क़ैदी छोड़ाकर यह लौट आये—

सन् १८४२

लार्ड आकलेन्ड के जाने पर लार्ड एलिनबरा आये और सिन्ध पर इनकी निगाह पड़ी. कुछ चिट्ठियों से वहां के अमीरों पर क़सूर लगाया गया. मगर बहुत चिट्ठी जाली थीं— आखिर सिन्ध पर चढ़ाई हुई और मियानी की लड़ाई में अमीर हार गये, सिन्ध अंगरेज़ी अमलदारी में मिलाया गया और अब वहां के लोग बड़े सुखी हैं और रोज़गार को खूब समझते हैं—

रंजीतसिंह के मरने से पंजाब का सारा खेल बिगड़ गया. फ़ौजी हुकूमत होगई. कभी एक और कभी दूसरा राजा होता था मगर हरबार खून बहता था और कोई भी ऐसा नहीं था जो सिख फ़ौज को क़ाबू में रखता—आखिर यह लोग

सतलज पार करके अंगरेज़ी अमलदारी में टूट पड़े और मुडकी और फ़ीरोज़शाह की लड़ाई में हारने पर भी उन लोगों का दिल न टूटा, जनवरी १८४६ में अलीवल की लड़ाई में हारे फिर एक महीना बाद सुबरांव में सिक्खों का मुर्चा लार्ड गफ़ ने उड़ा दिया और सतलज और व्यास के बीच की ज़मीन अंगरेज़ों के हाथ लगी— सन् १८४८ में दूसरी लड़ाई सिख लोगों से हुई, चिलिआनवाला पर अंगरेज़ हारे मगर गुजरात में सिख पूरी तरह से हार गये और सारा पंजाब मिला लिया गया, महाराजा दलीपसिंह पिनशिन लेकर इंगलेन्ड चले गये और वहीं वस गये, कोहनूर हीरा उसी साल अंगरेज़ी ताज में लगाया गया—पंजाब में ऐसा अच्छा इन्तिज़ाम हुआ कि लड़ाके सिख सरकार के मददगार बने रहे—

लार्ड डालहौज़ी ८ साल गवरनर जनरल

रहे उनके दिल में यह समाया कि रैआया को अंगरेज़ी हुकूमत में रहने से बड़ा सुख मिलेगा इसी फेर में पड़कर उसने पंजाब, सतारा, नागपुर, बरमा और अवध को लड़कर वहां के हाकिमों को गद्दी से उतार अंगरेज़ी अमलदारी में मिला लिया—सतारा के राजा के लड़का नहीं था मगर उस ने एक लड़का गोद लिया था, सरकार ने उसको न माना इस से रैआया का दिल दुखा—इस देश में गोद लिया हुआ लड़का असली लड़के के बराबर माना जाताहै क्योंकि वह मरने पर पिन्ड और पानी देता है—इस से और आगरा अवध में ज़मीन्दारों का बहुत अख्तियार घटा देने से भी नाराज़ी हुई, किसी को यह विश्वास नहीं था कि हमारी जायदाद हमारे वारिस को मिलेगी—यह सब करके डालहौज़ी साहब तो चलदिये अब लार्ड कानिंग यहां आये और एक बड़ी भारी बगावत का सामान पाया—

उधर नई कारतूस आई जिसको दांत से काटकर बन्दूक़ में देना होता था—लोगों ने ख़-बर उड़ाया कि इन कारतूसों में गाय और सुअर की चरबी है जिस से अंगरेज़ी सरकार हिन्दू और मुसलमान सिपाहियों को बे दीन किया चाहती है, कुछ समझदार लोग अगर यह भी पूछते कि भला सरकार को दूसरे का दीन लेने से क्या मिलैगा तो उस बेचारे को ऐसा जवाब मिलता जिसको सुन के वह चुप हो जाता था—लोग कहते थे कि अपना दीन खो जाने से लोग आख़िर में इसाई होजायेंगे—सिपाही लोग कहते थे " न टोटा कटे सीस चाहै कटाही "—

सन् १८५७ के शुरू होतेही कलकत्ते के पास बारकपूर में हिन्दुस्तानी फ़ौज बिगड़ गई मगर हथियार ले लिये गये इस से माम-ला दबगया—मेरठ में फ़ौज एतवार के दिन जब अंगरेज़ गिरजे गये थे बिगड़ गई और

बंगलों में आग लगाकर जितने अंगरेज़ मिले उनको मारकर दिल्ली पहुंचो, वहां बूढ़े बहादुर शाह को बादशाह बनालिया—उधर लखनऊ में भी कुछ रेआया बिगड़ी और अंगरेज़ लोग रेज़ीडेन्सी में भाग गये—कानपूर में नाना साहेब जो अपने को महाराज बाजीराव पेशवा का लड़का कहता था उनकी पिनशिन न पाने में नाराज़ था और बागियों का सरदार बन गया जहां ५०० औरत लड़के और ५.०० मर्द अंगरेज़ थे. यह सब लोग अस्पताल में भागकर बागियों से अपनी जान बचा रहे थे. हिन्दुस्तान की गरमी से प्यास के मारे मर जाते थे, उन लोगों से नानासाहेब ने करार किया कि अगर तुम लोग बाहर हमारे पास चले आओ तो हम तुम लोगों को इलाहाबाद भेजदें, यह बिचार मान गये और नाव पर चढ़कर चले, मगर साथ ही उनपर गोली बरसने लगी और फिर नाव किनारे

लगीं, सब उतार कर क़ैद कर दिये गये आख़िर सबको मारकर उनकी लाश उसी अस्पताल के कुयें में डाल दी गई—

कानपूर से ४ आदमी भाग कर बचे—लखनऊ दिल्ली, बरेली, फ़र्रुख़ाबाद, इलाहाबाद में भी बहुत बखेड़ा मचा; बहुत अंगरेज़ मारे गये आख़िर सिख और नैपाल की गोरखा पलटन की मदद से फिर दिल्ली और लखनऊ पर क़ब्ज़ा हुआ, काली पलटन का एतबार नहीं था इस से गवरनर जनरल को बड़ी मुशकिल पड़ी—चीन को कुछ फ़ौज जा रही थी वह रोक ली गई तिसपर भी काम न चला और इंगलेन्ड से फ़ौज मंगाना पड़ा, आख़िर बग़ावत सब जगह दबी क़सूरवार को सज़ा मिली इलाक़ा और जायदाद ज़ब्त हुई, हज़ारों को फांसी हुई, खैर ख्वाहों को जागीर, ख़िलअत और ख़िताब मिले—इसके बाद अमलदारी कम्पिनी के हाथ से ले ली गई और

महारानी विक्टोरिया यहां की महारानी होगईं. राजा नवाव और रेआया से क़रार किया कि उनके दीन और चाल पर किसी तरह की आंच न आने पावैगी किसी का हक़ न दवाया जायेगा और हर एक ओहदा अगर हिन्दुस्तानी लायक होगा तो पावैगा—

सन १८५८

उधर हिन्दुस्तान की बगावत दबने के पहिले ही लार्ड पामर्सटन ने चीन से लड़ाई कर लिया इसपर उसी के साथी उस के खिलाफ़ हो गये और उसको काम छोड़ना पड़ा मगर थोड़े ही दिनों में वह फिर वज़ीर होगया—अब इटाली में बड़ी भारी लड़ाई छिड़ी, सब रियासतों ने मिलकर सारडिनिया के बादशाह विक्टर इमनुअल को अगुआ मान कर इटाली से आस्ट्रिया वालों को निकालने पर कमर कसा—उधर फ़ान्स के बादशाह नेपोलिअन ने भी इनकी मदद किया और दो लड़ाइयों में आ-

स्ट्रिया हार गई—ज़ूरिच में सुलह होकर यह तै हुआ कि सब रियासितों की एक पंचाइत होजाये जिसपर पोप जी सब के सिरताज बनकर बैठें मगर बहुत से लोगों ने इस बात को न माना और फिर लड़ाई हो गई जिस से रोम के आस पास की कुछ ज़मीन छोड़कर जिसकी हिफ़ाज़त पोप जी के वास्ते फ़ान्स की एक फ़ौज करती थी और वेनीशिया जो आस्ट्रिया के क़ब्ज़े में रहगया, सब इटाली एक होगई और विकटर इमेनुअल बादशाह होगया—उधर इंगलेन्ड में यह डर था कि नेपोलिअन ने आस्ट्रिया को पछाड़ा है कहीं उसका हौसला इंगलेन्ड और जर्मनी को नीचा देखाने का नहो इस से सैकड़ों और हज़ारों आदमी अपने देश के वास्ते लड़ने को वलन्टियर होगये मगर नेपोलिअन इंगलेन्ड से लड़ा नहीं चाहता था, उसने व्यापारी सुलह कर लिया जो उसके दबते

सन् १८६१

ही मद्दी में मिल गई क्योंकि फ़ेन्च रिआया को वह पसन्द नहीं थी—

उधर सन् १८६० में प्रेसीडेन्ट चुने जाने में अमेरिका में दो दल होकर आपुस में लड़ गये—एक ने दो आदमी एक अंगरेज़ी जहाज़ पर इंगलेन्ड और फ़ान्स भेजा मगर राह में दुशमन के जहाज ने उनको पकड़ लिया. इसपर इंगलेन्ड बिगड़ गया क्योंकि यह क़ायदा नहीं है. तब वे छोड़े गये—उन लोगों ने अपने जहाजों से सारे अमेरिका के बन्दर रोक लिये जिस में दुशमन को सामान न मिल सके मगर अंगरेज़ी जहाज़ अपना माल उन के हाथ बेच कर रुई लेआते थे. आखिर उन लोगों ने एक जहाज़ अंगरेज़ों से बनवाया जिसने बड़ा नुक़सान किया और लड़ाई बन्द होने पर इंगलेन्ड को बड़ा भारी रक़म हर्जे के तौर पर देना पड़ा. सन १८६५ में लड़ाई बन्द होकर सारे अमेरिका

से गुलामी उठ गई और फिर सब एक होगये—
सन् १८६५ में पामर्स्टन मर गये और अर्ल रसेल वज़ीर हुये मगर थोड़े ही दिनों में एक क़ानून जिस से गांव वाले भी मेम्बर भेजें जारी न होने से इसने काम छोड़ा—इसपर लार्ड डरबी वज़ीर हुये मगर रेआया को बलवा करने पर कमर कसे देखकर यह क़ानून जारी होगया और हर एक गांव और शहरों में हर मालिक मकान को मेम्बर चुनने का अख़्तियार मिल गया; केराये दार को भी अगर वह सालभर से एक ही मकान में १० पाउन्ड साल केराया देता हो तो यही अख़्तियार था—सन १८६८ में यही क़ानून स्काटलेन्ड और आयरलेन्ड में भी जारी होगये मगर इस के पहिले आयरलेन्ड में फिर बखेड़ा मचा, जेल तोड़कर क़ैदी छोड़ाये गये. मगर ३ आदमी को फांसी देने से सब दब गया—लार्ड डरबी अब बहुत बीमार रहा करते थे इस

से अलग होगये और ग्लेडिस्टन वज़ीर हुये-
इन्हों ने आयरलेन्ड की ज़मीन के वास्ते एक
क़ानून जारी किया जिस से ज़मीन्दार असामी
को बेदख़ल करने पर उसको ज़मीन के बनाने
और सुधारने का हरजाना दे-दूसरा क़ानून
जारी किया जिस से हर आदमी को अपने
लड़कों को पढ़ने को इस्कूल भेजना पड़ता था-
उधर यूरप में और जगहों पर लड़ाई होती थी.
प्रशिया और इटाली एक ओर होकर आस्ट्रिया
से लड़ गये जिस के ओर बहुतसी जर्मनी
की रियासत थीं. आख़िर दोनों दल हारे और
सुलह होने पर वेनीशिया इटाली को मिल गया
और बहुत सी जर्मनी की रियासतों ने मिल-
कर प्रशिया को सरताज माना-इधर जर्मनी
और फ्रान्स में लड़ाई होगई. प्रशिया की तौर
नेपोलियन को नहीं भाई उसने सन १८७०
में लड़ाई कर लिया मगर जर्मन फ़ौज बिल-

कुल सजी सजाई तैयार थी और फ़ान्स में घुस-
कर नेपोलिअन और बहुत से उस के सरदारों
को क़ैद कर लिया इसपर फ़ान्स वालों ने फिर
पंचाइती हुकूमत जारी किया—जर्मन फ़ौज ने
पारिस को घेर लिया और सन् १८७१ में सुलह
होने पर फ़ान्स को लड़ाई का ख़र्च बहुत देना
पड़ा और कुछ ज़मीन भी जर्मनी के हाथ ल-
गी—उसी दिन फ़ान्स की पुरानी राजधानी
वरसेल्स में सब जर्मन शाहज़ादों ने मिलकर
प्राशिया को अपना सरताज माना और विलि-
अम उसी दिन से सारी जर्मनी का शाहं-
शाह होगया—उधर फ़ान्स ने रोम से अपनी
फ़ौज हटाया, झट इटाली की फ़ौज चढ़ दौड़ी
और सारी इटाली विकटर इमेनुअल की हो-
गई—सन् १८७३ में ग्लेडिसटन को काम
छोड़ना पड़ा और दूसरे साल डिसरेली वज़ीर
होगया—

वाटरलू की लड़ाई के पीछे बहुत सी बाहरी ज़मीन जो इंगलेन्ड के हाथ लगी वह बड़े काम की थी, कहीं चीनी होती थी तो कहीं जहाज़ों को कोयला मिलता था मगर वहां अंगरेज़ रोज़गार के वास्ते जाकर बसने लगे और आख़िर में केनेडा, आस्ट्रेलिया और दक्खिनी अफ़रीका बड़ी भारी बस्ती होगई, अब उनको इंगलेन्ड से सेवाय एक गवरनर मिलने के और कोई मतलब नहीं है—ये लोग अपना पारल्यामेन्ट और कुल हुकूमत अपने हाथ में रखते हैं—सन् १९०१ में आस्ट्रेलिया में जहां १८२१ तक केदी भेजे जाते थे ३७००००० यूरपी आदमी थे और न्यूज़ीलन्ड में ७७२००० रहते थे—अफ़रीका में यूरपी कम हैं मगर वहां हीरों की खान होने से बहुत लोग जा बसे—

[illegible] ६ सौ साल तक [illegible] रहा, उनकी हुकूमत अपनी न होने से वहां बड़ा बखेड़ा

मचा, रूस और टरकी से लड़ाई होगई जिसमें रूसी जीते और बहुतसी ज़मीन पाया मगर डिसरेली ने जो अब अर्ल बेकन्सफ़ील्ड होगये थे इस मामले को न माना और कहा कि यूरप की सब जातियों की एक कमेटी में यह बात पेश हो—आख़िर बरलिन में सब जगह के लोग पहुंचे और सन् १८७८ में सरविया और रोमे-निया खुद मुख़्तार हो गये-बलगेरिया की एक रियासत क़ायम की गई जो सुलतान को कौड़ी दिया करे और पूरबी रोमेलिया में सुल-तान की ओर से एक ईसाई हाकिम रहै-डेन्यूब नदी के पास की ज़मीन जो क्रीमिया की लड़ाई में निकल गई थी रूसको फिर मिलगई, थेसाली और इपाइरस का कुछ हिस्सा सुलतान ग्रीस को दें और बासनिया और हरज़ीगोवाइना पर आस्ट्रिया की हुकूमत रहै—साइपरस का टापू इंगलेन्ड को मिला जिसके वास्ते सुलतान

को कौड़ी मिले—यह सब बातें तो हुई नहीं क्योंकि सुलतान ने इपाइरस में ग्रीस को कुछ न दिया और रोमेलिया के लोग बलगेरिया में मिल गये. बाक़ी और सब बातें सन् १६०? तक वैसी ही रहीं—

सन् १८७६ में मिश्र का देवाला निकल गया और इंगलेन्ड और फ़ान्स ने मिलकर वहां का इन्तिज़ाम अपने हाथ में लिया—सन् १८७७ में ट्रेन्सवाल अंगरेज़ी हुकूमत में मिला लिया गया और ज़ूलू लोगों से लड़ाई हुई जिस में वहां की कुल अंगरेज़ी फ़ौज मर गई मगर आख़िर इंगलेन्ड की जीत रही— उधर एशिया में अफ़ग़ानिस्तान से दूसरी लड़ाई होगई जिसके पीछे काबुल में एक अंगरेज़ी एजेन्ट रहने लगा और रूस ने अफ़ग़ानिस्तान से कोई सरोकार न रक्खा—इस देश में यह बात फैली की सरकार लड़ाई की बड़ी

शौकीन है इस से पारल्यामेन्ट बन्द किया गया और दूसरे बार फिर बैठने पर लिबरल दलके लोग बहुत थे इस से ग्लेडिसटन दूसरी बार वजीर हुये और ५ बरस तक रहे, इस बीच आयरलेन्ड में अमन नहीं था वहां के बहुत से लोग बखेड़ा मचाते थे और बराबर अपने मुल्क को इंगलेन्ड से अलग करने के फेर में थे-वहांके असामियों के बेदखल होने पर ज़मीन्दार को हरजाना देने का क़ानून बना, अदालत माल से जो मालगुज़ारी ठहरे वह १५ साल तक क़ायम रहे मगर ज़मीन्दार मानते नहीं थे और रेआया उस से ज़्यादे नहीं देते थे इस से सरकार ने वहां के बहुत से वड़े लोगों को क़ैद करदिया तिसपर भी वहां के गवरनर और अन्डर सेक्रेटरी को बदमाशों ने मार डाला-उसीसाल ट्रेन्सवाल की डच रेआया विगड़ी और इंगलेन्ड को उस जगह को छोड़ना पड़ा मगर सबसे बड़ी मु-

सन्
१८८

सन्
१८८२

मीबत मिश्र में पड़ी जहां अराबी पाशा खेदिव से बाग़ी होगया—फ्रान्स ने तो मदद किया नहीं मगर अंगरेज़ी बेड़े ने एलेगज़ेनड्रिया के क़िलों को तोड़ा और बाक़ी शहर में रेआया ने आग लगादिया—आगे बढ़कर टेलेलकेबिर पर अराबी को फ़ौजहारी. तब से बराबर मिश्र की हिफ़ाजत अंगरेज़ करते आते हैं—सोडान में एक पागल मुसलमान ने मेहदी बनकर जेहाद का झन्डा खड़ा करदिया और सारा देश मिश्र के हाथ से निकला जाता था क्योंकि उनकी फ़ौज जिसका सरदार हिक्स नामी एक अंगरेज़ था सब भाग गई और ख़ारतूम एक ऐसी जगह थी जहां मेहदी की दाल नहीं गली—जनरल गारडन वहां पहुंचा मगर सन् १८८४ में ऐसी मसीबत पड़ी कि जनरल वल्सली उनको मदद को भेजेगये. उनके पहुंचने के पहिले ही ख़ारतूम का फाटक किसी ने

दुशमन से मिलकर खोल दिया और जनरल गारडन और कुल फ़ौज वहां मारी गई—

उधर रूस ने एशिया में अफ़ग़ानिस्तान की कुछ ज़मीन जिस को पंजदेह कहते हैं ले लिया, इंगलेन्ड में बड़ी हाय २ हुई आख़िर रूस के पास वह जगह रह गई—यहां कुछ और भी मेम्बरों के बारे में क़ानून जारी करने पर ग्लेडिसटन को काम छोड़ना पड़ा और लार्ड सालिसबरी वज़ीर हुये और बाकी बरमा अंगरेज़ी अमलदारी में मिला लिया गया—आयरलेन्ड के एक क़ानून निकालने के फेर में इनको काम छोड़ना पड़ा और तीसरी बार ग्लेडिसटन वज़ीर हुये और यह क़ानून निकाला कि आयरलेन्ड की ज़मीन सरकार ख़रीद करके असामियों के हाथ बेच दे जिस से इन लोगों को आराम मिले और आयरलेन्ड में एक पारल्यामेन्ट बैठे मगर इसपर यहां लोग नाराज़ होगये और ७ ही

महीने पीछे ग्लेडिसटन ने काम छोड़ दिया—लार्ड सालिसबरी दूसरीबार वज़ीर हुये और दो साल में बहुत बड़े २ काम करगये—छोटे इस्कूलों में पढ़ाई बेदाम की होने लगी और हर जगह म्यूनिसपिलटी जारी होगई—सन् १८९२ में आयरलेन्ड का मामला लोगों को पसन्द न आया और ग्लेडिसटन चौथी बार वज़ीर हुये—दूसरे साल बूढ़े होने से इन्होंने भी काम छोड़ा और लार्ड रोज़बरी वज़ीर हुये मगर इनकी भी हार रही तब सन् १८९५ में सालिसबरी तीसरी बार वज़ीर हुये और आयरलेन्ड का मामला सब ठीक होगया. वहां भी म्युनिसिपिलटी और इंगलेन्ड स्काटलेन्ड की तरह सब सुभीता होगया—

टर्की की हालत फिर बिगड़ी. आरमीनिया में बहुत से बे कसूर इसाई मारे गये टर्की से [illegible] में क्रीट आज़ाद होगया और ग्रीस के बादशाह का दूसरा लड़का वहां का हाकिम

होगया मगर टरकी को कौड़ी देना पड़ता है-खारतूम हाथ से जाते ही सब फ़ौज सोडान लौटगई और वहां मेहदी और उसके वारिस ख़लीफ़ा की अमलदारी होगई-मिश्र का सब इन्तिज़ाम सुधर गया और सर इवलिन बेरिंग ने जो पीछे से लार्ड क्रोमर होगये सब सुधारा, अंगरेज़ वहां की फ़ौज को भी राह पर लाये और वहां की और अंगरेज़ी फ़ौज को लेकर जनरल किचनर ने जो अब लार्ड किचनर कहे जाते हैं ख़लीफ़ा की फ़ौज को अतबारा नदी के किनारे ख़ूब पछाड़ा और ५ महीने पीछे ख़लीफ़ा भी अपनी राजधानी उमदरमान के पास हारे, उनके बहुत साथी मारे गये, दूसरे साल वह भी मारा गया और सारे सोडान पर क़ब्ज़ा होगया-उन्हीं दिनों फ़ान्स ने राह में फ़ेशोडा जगह पर अपना डेरा डाला था जिससे कुछ चखा चखी होगई मगर फ़्रेन्च समझ गये और वहां से हटगये-

सन १८९८

महीने पीछे ग्लेडिसटन ने काम छोड़ दिया—लार्ड सालिसबरी दूसरीबार वज़ीर हुये और दो साल में बहुत बड़े २ काम करगये—छोटे इस्कूलों में पढ़ाई बेदाम की होने लगी और हर जगह म्यूनिसपिलटी जारी होगई—सन् १८९२ में आयरलेन्ड का मामला लोगों को पसन्द न आया और ग्लेडिसटन चौथी बार वज़ीर हुये—दूसरे साल बूढ़े होने से इसने भी काम छोड़ा और लार्ड रोज़बरी वज़ीर हुये मगर इनकी भी हार रही तब सन् १८९५ में सालिसबरी तीसरी बार वज़ीर हुये और आयरलेन्ड का मामला सब ठीक होगया. वहां भी म्युनिसपिलटी और इंगलेन्ड स्काटलेन्ड की तरह सब सुभीता होगया—

सन् ८८६

टर्की की हालत फिर बिगड़ी. आरमीनिया में बहुत से बे कसूर ईसाई मारे गये इसी हेर फेर में क्रीट आज़ाद होगया और यूनान के बादशाह का दूसरा लड़का वहां का हाकिम

होगया मगर टरकी को कौड़ी देना पड़ता है—खारतूम हाथ से जाते ही सब फ़ौज सोडान लौटगई और वहां मेहदी और उसके वारिस ख़लीफ़ा की अमलदारी होगई—मिश्र का सब इन्तिज़ाम सुधर गया और सर इवलिन बेरिंग ने जो पीछे से लार्ड क्रोमर होगये सब सुधारा, अंगरेज़ वहां की फ़ौज को भी राह पर लाये और वहां की और अंगरेज़ी फ़ौज को लेकर जनरल किचनर ने जो अब लार्ड किचनर कहे जाते हैं ख़लीफ़ा की फ़ौज को अतवारा नदी के किनारे खूब पछाड़ा और ५ महीने पीछे ख़लीफ़ा भी अपनी राजधानी उमदरमान के पास हारे, उनके बहुत साथी मारे गये, दूसरे साल वह भी मारा गया और सारे सोडान पर क़ब्ज़ा होगया- उन्हीं दिनों फ़ान्स ने राह में फ़ेशोडा जगह पर अपना डेरा डाला था जिससे कुछ चखा चखी हो-गई मगर फ़्रेन्च समझ गये और वहां से हटगये-

सन् १८१८

अमेरिका में वेनीज़्वेला एक बस्ती है. वहां आस पास अंगरेज़ी ज़मीन होने से सरहद्दी झगड़े बराबर चले आते थे आख़िर पंचाइत होकर सन् १८९९ में अंगरेज़ों की जीत रही—एशिया में जापान और चीन में लड़ाई छिड़ी. चीन को कमज़ोर देख सब लोग जगन्नाथ जी का भात समझकर दौड़ पड़े. रूस ने पोर्ट आर्थर और मंचूरिया पर हाथ मारा. जर्मनी ने कायो चाऊ लिया और अंगरेज़ वी हाई वी और हांग कांग पर अपना झन्डा उड़ाने लगे. इससे चीन में बड़ी बग़ावत होगई और विदेशी दुश्मन मारे गये. बहुत से ईसाई मारे गये. जर्मनी का एलची पेकिन की सड़क पर मार डाला गया.

रूसानी फ़ौज भी थी और पेकिन पर क़ब्ज़ा कर-लिया—फिर धीरे २ सब मामला ठंढा पड़ा—

## बूअर लड़ाई

सन् १८६६ में दक्खिनी अफ़रीका में लड़ाई लगी, मिस्टर ग्लेडिसटन ने ट्रेन्सवाल की पंचाइती राज्य को सब अख़्तियार देदिया था, इंगलेन्ड उनका सिरताज बना रहा और वहां के लोगों को किसी से लड़ाई और सुलह करने का अख़्तियार नहीं था मगर बूअर कब मानते थे, वे बराबर आस पास के लोगों की ज़मीन पर हाथ मारा करते थे, रोज़ एक नया बखेड़ा खड़ा रहता था, ट्रेन्सवाल में बसे हुये अंगरेज़ सताये जाते थे मगर सन् १८८६ में वहां हीरा की खान मिलने से बहुत से अंगरेज़ जा बसे—आख़िर इन लोगों ने मिलकर एक टूटी फूटी फ़ौज जमा किया और लड़गये मगर हारे इसपर उन लोगों ने महारानी को अरज़ी दिया और सरकार ने लिखा

कि इन लोगों से एक तरह का बरताव किया जाये मगर प्रेसीडेन्ट क्रूगर ने इनकार किया और यह लिखा कि इंगलेन्ड अब हमारा सरताज न रहे, इसपर भी अंगरेज़ी फ़ौज के अफ़रीका से न हटने पर क्रूगर ने अंगरेज़ी बस्तियों पर चढ़ाई कर दिया, पहिले बूअर बराबर जीते, मेफ़किंग. किमबरली और लेडीस्मिथ बहुत दिन घिरे रहे और इन जगहों के बचाने में बहुत लोग मारेगये, आखिर लार्ड राबर्ट्स ने किमबरली बचाया और ४००० बूअर ने पार्डबर्ग में हथियार रख दिया—जनरल बुलर ने लेडीस्मिथ छोड़ाया. क्रूगर हालेन्ड भागा और फिर दोनों बस्तीं इंगलेन्ड की अमलदारी में आगई—क्रीमिया की लड़ाई देखकर इन्तिज़ाम की बहुत कसर मिट गई थी मगर इस लड़ाई से और भी फ़ायदा हुआ, यह मालूम होगया कि इंगलैन्ड के लोग जो चाहैं कर [illegible] जाकर [illegible]

अब तक अपने घरके नाम के वास्ते मरते हैं क्योंकि हर जगह से फ़ौज पहुंची थी—

इस लड़ाई के बन्द होने के कुछ दिन पहिले ही महारानी विक्टोरिया २२ जनवरी सन् १९०१ को ८२ साल की उमर में इस पापी संसार से चल बसीं और इंगलेन्ड में सब से ज़्यादे हुकूमत किया—मुल्की मामलों में वह दो राय वालों को एक करने की फ़िकिर करती और सब मामलों को आसान करती थीं, रैआया को बहुत अख़्तियार मिलने से बादशाह का अख़्तियार घट गया है मगर इज्ज़त बराबर बढ़ती गई—महारानी ने कभी कोई बात ऐसी नहीं सोचा जिस से रैआया को फ़ायदा नहो और अपने प्यारे बड़े लड़के को ऐसी बादशाहत छोड़ा जो सारे संसार में किसी बादशाह ने नहीं छोड़ा—

उसी दिन प्रिन्स आफ़ वेल्स को वज़ीरों ने

बादशाह होने की खबर सुनाया और दूसरे
साल ६ अगस्त को इनके सिरपर बादशाही
ताज धरा गया—लन्डन की उस दिन की सजा-
वट जिसने देखाहै वही जान सकता है—हिन्दु-
स्तान के महाराज होने का दिन १ जनवरी
सन् १९०३ था जब दिल्ली में लार्ड करज़न ने
बड़े शान का दरबार किया और जमशेद और
फ़रीदूं को भी मात करदिया—महाराज की
तारीफ़ करना वैसा ही मुशकिल है जैसे सूरज
के चमक की क्योंकि वह तो आप से मालूम
होने वाली है—यह बात कहना बहुत ज़रूरी है
कि महाराज अमन के रूप हैं और उन के बीच
में पड़जाने से रूस की बड़ी से बड़ी मुसीबत
घट जाती है—सारे संसार से सुलह करके राम
राज्य के मज़े लूट रहे हैं—

जयति जयति महाराज राज तुम्हरी की जय जय।
जै भारत सिरताज साज अंगरेज़ी की जय॥
जय जय नृप इंगलेन्ड, बड़ी है राज तेहारी।
जय जय जय एडवर्ड तेरी सब प्रजा सुखारी॥
सुख सम्पति की बाढ़ देख सब सुखी भये जन।
जीवहु लाख बरीस करहु सुख सैन मुदित मन॥

*** महाराज एडवर्ड की जय ***

# ज़रूरी नोट

रोमन्स या रोमन—इटाली देश की राजधानी रोम है जहां के रहने वाले रोमन कहे जाते थे—

ख़िराज—किसी राज्य को जीतकर उस से जो नज़र ली जाती है उसको ख़िराज या कौड़ी कहते हैं—

ब्रिटन्स—ब्रिटेन या इंगलेन्ड के रहने वाले—

सेक्सन और एनजिल—जर्मनी के राइन और एल्ब नदी के किनारे रहने वाली दो जाति हैं जिन्होंने इंगलेन्ड के पुराने रहने वालों को दबाया—

ग्रीक—ग्रीस देश के रहने वाले और उनकी ज़बान—

यूनिवर्सिटी—महा विद्यालय जिसमें सब बातें सिखाई जायें और जिसके मातहत बहुत से और भी स्कूल हों—

जूरी—पंचाइत या पन्च, जज के सामने कुछ लोग बैठकर मुक़द्दमा सुनकर राय देते हैं—

फ़्रेन्च—फ़्रान्स के रहनेवाले और उनकी ज़बान—

पारल्यामेन्ट—क़ौमी मजलिस जिस में बादशाह अमीर और मामूली लोग बैठकर मुल्की मामले तै करें—

थेन—एक तरह का ख़िताब है जो अब उठ गया—

नाइट आफ़ गारटर और बाथ—एक तरह का ख़िताब है जो पहिले बहादुरी देखानेवाले को दिया जाता था—

पिअर—अमीर, बादशाह मामूली आदमी को पिअर बना सकता है, पिअर बादशाही दसख़त से पारल्यामेन्ट मे तलब किये जाते है और मौरूसी हाकिम और जज माने जाते हैं—

कपतान—चौथे दरजे का फ़ौजी अफ़सर—

नाइट—एक तरह का ख़िताब जिस से आदमी के नाम के पहिले सर लिखा जाता है—

लार्ड—अमीर, पिअर—

लेटिन—इटाली देश की पुरानी ज़बान जो कभी सारे यूरप में बोली जाती थी—

प्युरिटन—उस ज़माने में इसाई मज़हब को पूरी तरह से मानने वाले—

एडमिरल—जहाजी बेड़े का सब से बड़ा अफसर—

अंगरेजी नहर—फ़्रान्स और इंगलेन्ड के बीच के समुन्दर को कहते है—

डच—हालेन्ड देश के रहने वाले और उनकी ज़बान—

इसपेनी—इसपेन देश के रहने वाले और उनकी ज़बान—

इसपीकर—मीर मजलिस—

म्यूनिसपिलटी—शहर जहा की सफाई, रोशनी और हिफा-
जत का बन्दोवस्त वहीं के रहने वाले करैं—
आसट्रिअन—आसट्रिया देश के रहने वाले—
रिवोल्यूशन—बादशाही इन्तिज़ाम का बदल जाना—
गवरनर जनरल—सब से बड़ा हाकिम जो बादशाह की ओर
से हुकूमत करै—
रेज़ीडेन्ट—हाकिम जो बादशाह की ओर से दूसरी राज्य में
रहकर वहा का हाल अपने मालिक को भेजै—
अफगान—अफगानिस्तान के रहने वाले—
कारतूस—बन्दूक़ में भरने की गोली बारूद की डिब्बी—
जूलू—अफ्रिका की एक मुसलमान कौम—
एजेन्ट—गुमाश्ता, रेज़ीडेन्ट—
खेदिव—मिश्र के बादशाह का खिताब—
मेहदी—मुसलमानों के आखिरी पैग़म्बर—
जेहाद—हरा झन्डा जिसको खड़ा देख हर मुसलमान को
लड़ना चाहिये—
बूअर—ट्रेन्सवाल के रहने वाले—
जमशेद } फारस या ईरान के पुराने बादशाह जो ऐश
फरीदूं } और शान मे बहुत बढ़कर हुये—

---